अध्यात्मक एव मानवता के प्रतीक

शैख़ शरफ़ुद्दीन अहमद यह्या मनेरी

अशरफ़ अस्थानवी

بسم الله الرحمن الرحيم
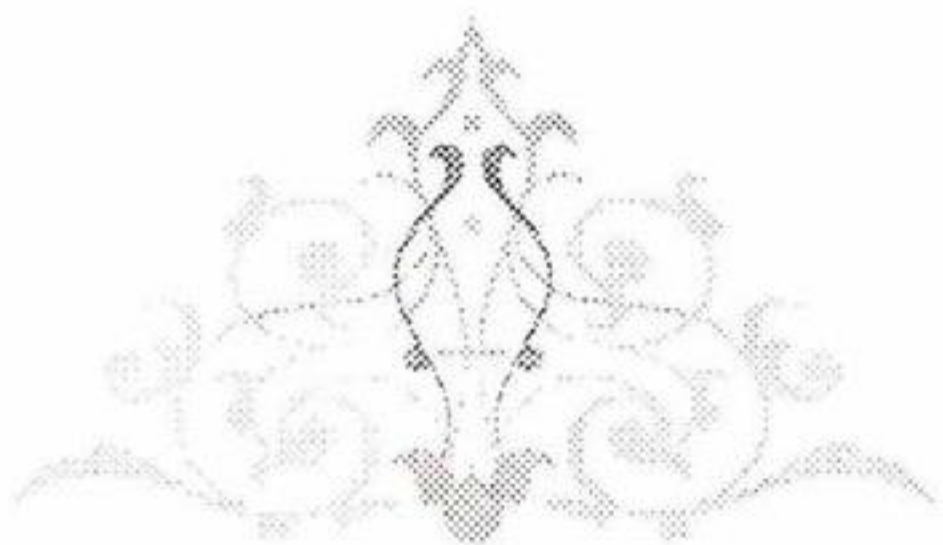
जिसके नामों की नहीं है इन्तेहा
इब्तेदा करता हूँ उस के नाम से
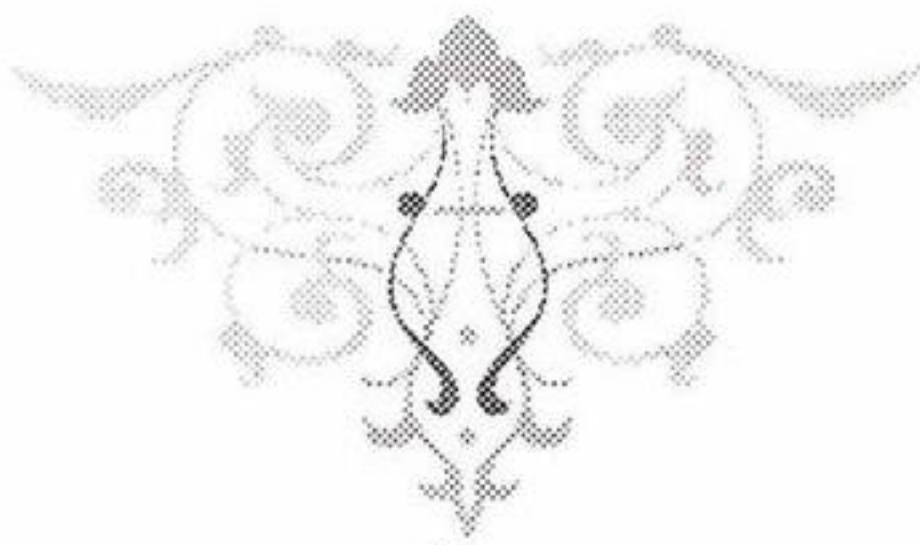
अध्यात्म एवं मानवता के प्रतीक

शैख़ शरफ़ुद्दीन अहमद यह्या मनेरी

अशरफ अस्थानवी

पुस्तक का नाम	:	अध्यात्म एवं मानवता के प्रतीक **हज़रत शैख़ शरफुद्दीन यहया मनेरी**
लेखक	:	अशरफ अस्थानवी
सेल	:	09431221357, 7870711841
ई-मेल	:	ashrafasthanvi@gmail.com ashrafasthanvi@yahoo.com
प्रकाशन वर्ष	:	2013
पृष्ठ	:	152
संख्या	:	1500
मूल्य	:	110/- रुपये
कम्पोज़िग	:	यहया फहीम, सेल-9470444192
डिज़ाइनिंग	:	मो. सरफराज आलम **'अप्पू'**, सेल-9386071230
प्रकाशक एवं मुद्रक	:	अलंकार प्रिन्टर्स, करमलीचक पटना-8
ब एहतमाम	:	बेटर वर्ल्ड मिशन (एन.जी.ओ.) पटना

❁ ❁ ❁

वितरक :

- आफ़ताब बुक डिपू, सब्ज़ीबाग़,पटना
- एहसान बुक हाउस, दरियापुर, पटना
- सोहराब बुक हाउस, पटना जंकशन, पटना
- बुक इम्पोरियम, सब्जीबाग़, पटना
- नोवेल्टी बुक हाउस आशोक राजपथ पटना
- आमिर बुक डिपो पटना जंक्शन मस्जिद
- सरफराज़ पेपर एवं बुक एजेंट, तुलसी होटल अशोक राजपथ, पटना
- सुफी मंज़िल, शेरपुर, बिहार शरीफ
- बंगाल ला हाऊस, अशोक राजपथ, पटना
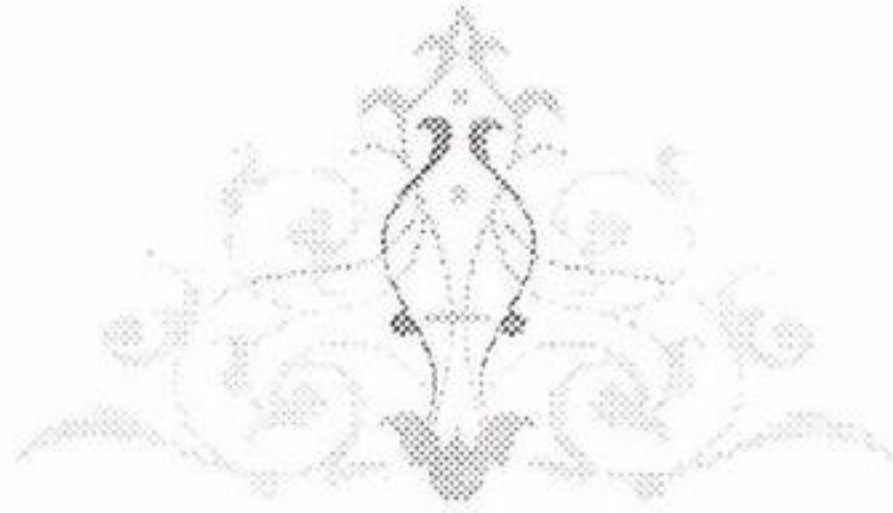
खा़लू अब्बा अलहाज मौलाना सैयद मो० रज़ा करीम (रह०) के नाम, जिन्होंने मेरे पिता का साया बचपन में ही उठ जाने के एहसास को कभी शहीद नहीं होने दिया, और ना ही मेरी शिक्ष–दीक्षा में कोई कमी आने दी। यह खा़लू अब्बा की ही श्फ़कत और मोहब्बत है कि मैं मख़दूमेजहां (रह०) की ज़िन्दगी के अहम पहलुओं को आप तक लाने की जुर्रत कर रहा हूँ।

विषयसूची

प्रस्तावना

हरकं खिदमत कर्द ऊ मखदूम शुद
हरकं खुद रा दीद ऊ महरुम शुद

धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भारत में बिहार प्रदेश को विशेप स्थान प्राप्त है । बिहार में मनेर जैसे सिरमौर है, मनेर बिहार में सूफी सन्तों के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में जाना जाता है । इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही शिक्षा और ज्ञान का केन्द्र रहा है, मनेर शरीफ पटना शहर से लगभग 28 कि० मी० दूर पश्चिम में गंगा और सोन के संगम पर स्थित है। प्राकृतिक रूप से यह क्षेत्र पहाड़ों, टीलों और जंगलों के बीच स्थित होने के कारण बहुत सुन्दर है और यहाँ की जलवायु स्वास्थ के लिये उत्तम है । यह ऐतिहासिक भूमि मखदूम जहां शेख शरफुद्दीन यहया मनेरी (रह०) की जन्म स्थली है जिन के व्यक्तित्व और कृतित्व के कारण पूरे क्षेत्र बाल्कि प्रदेश और प्रदेश के बाहर भी मानवीय संदेश का प्रचार प्रसार हुआ । हजरत शैख़ शर्फुद्दीन यहया मनेरी ने सातवीं सदी हिजरी अर्थात तेरहवी सदी ईस्वी में जन्म लिया। वह अपने समय के बड़े सूफी सन्तों और ज्ञानियों हयानियों में भी महत्वपूर्ण स्थान रखते थे । तसव्वुफ की दुनियां में आपका स्थान बहुत ऊँचा है । आप हजरत शैख़ नजीबुद्दीन फिरदौसी के खलीफा और आध्यातमिक उत्तराधिकारी थे । आपके परदादा हजरत इमाम ताज फक़ीह 576 हिजरी में ''बैतुल मुकद्दस'' से मनेर आये थे उस समय से

आज तक मनेर इस्लाम के प्रचार प्रसार और ज्ञान का महत्वपूर्ण केन्द्र बना हुआ है ।

हजरत मखदूमेजहां का व्यक्तित्व अनेक विशेषताओं. और गुणों का सुन्दर गुलदस्ता था ! कहा जाता है कि आप लग भग 30 वर्षों तक राजगीर के जंगल में इबादत और ध्यान में लगे रहे आप जीवन की सभी सुविधाओं से दूर रह कर अत्यन्त कष्ट उठाते हुये इबादत में लीन रहे।

आप न केवल बहुत बड़े सूफी थे बल्कि महान ज्ञानी और चिन्तक चरित्रवान, सन्त होने के साथ साथ कमाल के साहित्यकार भी थे। आपके हाथों में कलम बोलने लगती थी।

आपने लगभग दो दर्जन से अधिक पुस्तकें, तसव्वुफ, इसरारे तसव्वुफ (तसव्वुफ) तथा व्यक्ति के हृदय और चिन्तन की शुद्धि पर लिखी, जो न केवल धार्मिक रूप से बाल्कि साहित्यिक रूप से भी एक विशेष धरोहर है। सुफियों और मशायख में ऐसे बहुत कम लोग हैं जिन्होंने इतना बड़ा ज्ञान और साहित्य का खजाना अपने पीछे छोड़ा है। मखदूमेजहां तसव्वुफ तथा ज्ञान के इतने ऊँचे स्थान पर होते हुये भी पूरी तरह जीवन कर्मों से जुड़े रहे और एक कर्मवीर के रूप में भी अपना उदाहरण प्रस्तुत किया । शरीयत (इस्लामी कानून) की पाबन्दी हर हाल में हर स्थान पर करते और स्वयं को शरीयत व तरीक़त का पूर्ण उदाहरण बना कर पेश किया हज़रत मखदूमेजहां के इस दुनिया से गये हुये सात सौ वर्ष से अधिक बीत चुके परन्तु आपके ज्ञान और अध्यात्म का प्रकाश आज भी फैल रहा है बिहार शरीफ स्थित आपकी खानक़ाह और मज़ार शरीफ आज भी लोगों के ध्यान का केन्द्र बना हुआ है। और लोगों को अपनी ओर बरबर खींच रहा है।

परन्तु अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। विशेष रूप से मख्दूमे जहां के शिक्षण तथा अध्यात्म और साहित्य पर बहुत काम करने की

आवश्यकता है हम आशा करते हैं कि खोज और शोध में रूचि रखने वाले लोग और शिक्षा व ज्ञानप्रेमी इस ओर विशेष ध्यान देंगे । यह पुस्तक जो इस समय आपके हाथों में है एक छोटा सा प्रयास है जिसमें मखदूमेजहाँ के जीवन, उनके व्यक्तित्व और कृतत्व पर सरसरी रुप से प्रकाश डाला गया है। प्रयास किया गया है कि, सरल भाषा में बात पहुँचाई जाये पुरानी पुस्तकें कठिन भाषा में हैं जिनमें फारसी के शब्द तथा मुहावरों की भरमार है जिसके कारण आम आदमी के लिये इसे समझना कठिन है आवश्यकता थी कि मखदूमेजहां के व्यक्तित्व और उनके द्वारा दिये गये ज्ञान भण्डार को सरल भाषा में और संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किया जाये। मखदूमेजहां में श्रद्धा रखने वालों ने बार-बार इसके बारे में दबाव भी डाला। यह पुस्तक इसी कारण लिखी गई मेरा यह प्रयास जैसा भी हो अब आपके हाथों में है। यदि मेरे प्रयास में कोई त्रुटि हो तो क्षमा करेंगे और मुझे जरुर अवगत कराऐंगे। शायद आप इसे पसन्द करें और अल्लाह ताला मेरी इस कोशिश के बदले मेरे उपर अपनी रहमतों का साया करे । अमीन !

(अशरफ अस्थानवी)

बिहार में मुसलमानों का आगमन

चौथी सदी हिजरी अर्थात् ग्यारहवीं सदी ईसवी का ज़माना भारत के लिये सुगम और मधुर सन्देश लेकर आया । इस शताब्दी के अन्त में इस्लामी देशों से मुस्लिम सूफी सन्तों का जत्था भारत आने लगा । आरम्भ में इनकी गतिविधियां अधिकतर पंजाब और सिंध प्रान्तों तक सीमित रहीं। बिहार में छठी सदी हिजरी में यह प्रकाश पहुँचा उसी समय यहां सूफी सन्तों और मशायख (आध्यात्मिक गुरू) का आगमन भी शुरू हुआ। उस समय बिहार में हिन्दू राजाओं महाराजाओं का राज काज चलता था। मेनेर का राजा बड़ा बर्बर और निरंकुश था। उस के अत्याचार और शोषण से जनता भयभीत थी। इतिहास से पता चलता है कि उस समय के लोग हिन्दू और बौद्ध धर्म के अनुयायी थे । विभिन्न देवी देवताओं की पूजा होती थी । इतिहास से यह भी पता चलता है कि बिहार की भूमि पर सब से पहले जिस मुसलमान ने पांव रखा और सब से पहले इस्लाम का संदेश लाये वह थे हज़रत मखदूम आरिफ़-मोमिन। 576 हिजरी में हज़रत मखदूम आरिफ-मोमिन पर्यटन और व्यापार के उद्देश्य से बिहार आये और "मनेर" में रूके । मख़दूम आरिफ-मोमिन कपड़ों के बड़े व्यापारी थे । आपको कपड़ों के व्यापार और इस उद्योग में विशेष रूचि थी । आपने बिहार में कपड़ा उद्योग की स्थापना के लिये विशेष प्रयास किया । ऐतिहासिक पुस्तकों और जीवनियों में आपके बारे में बहुत कम उल्लेख पाया जाता है जिस समय आप मनेर आये थे उस समय लोग इस्लाम

के बारे में कुछ जानते भी नही थे । देवी देवताओं की पूजा होती थी। उन्हीं में आस्था थी। यही कारण है कि मनेर में आरिफ मोमिन की उपस्थिति यहां के राजा को पसन्द नहीं आई। राजा को उनका आना और उनका संदेश राज्य और सरकार के लिये खतरा लगा। इसी कारण राजा के कर्मियों ने आरिफ मोमिन के लिये कठिनाईयाँ पैदा करनी शुरू कर दीं और उन्हें कष्ट दिया जाने लगा । जिस से कि आप यहाँ से चले जाएं । मनेर के राजा द्वारा कष्ट दिये जाने के कारण आपने यहां से जाने का निर्णय लिया और विभिन्न नगरों क्षेत्रों से होते हुये सउदी अरब के शहर मदीना शरीफ पहुँच गये तथा रसुलल्लाह (स०) के दरबार में फरयाद की। जब तड़प और तलब सच्ची हो और हृदय से प्रयास किया जाये तो आशा पूरी होती है। येरुशलम (बैतुल मुकद्दस)के मुहल्ला अलखलील के हाशमी घराना से सम्बन्ध रखने वाले एक बुजुर्ग, आरिफे कामिल हज़रत मख़दूम ताजफ़क़ीह को सपने में रसुलल्लाह (स०) का दर्शन हुआ और आप ने सपने में ही उन्हें मनेर जाने और वहां इस्लाम का प्रचार-प्रसार करने का आदेश दिया । रसुलल्लाह (स०) के इस आदेश के अनुसार हज़रत ताजफ़क़ीह ने मनेर जाने का निर्णय लिया और हज़रत ताजफ़क़ीह तथा हज़रत आरिफ मोमिन के नेतृत्व में एक छोटा जत्था मदीना मुनव्वरा से मनेर शरीफ के लिये रवाना हुआ । मुसलमानों का यह जत्था 576 हिजरी में मनेर पहुंचा ।

भारत में यह जत्था उत्तर पश्चिम से आया। कर्मनासा नदी तक जो बक्सर के पास है और जहां से मनेर के राजा का साम्राज्य शुरू होता था वहां तक पहुंचे और जब इन लोगों ने नदी पार की तो वहां राजा के सैनिक युद्ध के लिये तैयार खड़े थे । घमसान का युद्ध हुआ । राजा की सेना को हार का सामना करना पड़ा । मुसलमानों ने राजा के सैनिकों का पीछा किया और पीछा करते हुए दुर्ग तक पहुंचे । यहां भी घमसान का युद्ध हुआ । राजा की सेना

को यहाँ भी पराजय का सामना करना पड़ा , कुछ इतिहासकारों के अनुसार स्वयं राजा भी इस युद्ध में मारा गया । इस प्रकार पहली बार मनेर में इस्लाम की ज्योति जगी । रसुलल्लाह (स०) के आदेश का हज़रत इमाम ताजफ़क़ीह के हाथों पालन 27 रजब शुक्रवार 576 हिजरी को हुआ ।

ऐतिहासिक घटना क्रम से यह सिद्ध होता है कि मनेर पर इस्लाम का ध्वज इमाम ताज फक़ीह ने लहराया । इसके बाद भी वह लम्बे समय तक यहां रहे और इस्लाम के प्रचार प्रसार का काम करते रहे । उसके बाद वह येरुशेलम (बैतुल मुकद्दस) लौट गये। वह अपने दोनों सुपुत्रों हज़रत मखदूम शैख इसराईल और हज़रत मख़दूम शैख इस्माईल तथा अपनी पत्नी को मनेर में ही छोड़ गये । बैतुल मुकददस पहुंचने के बाद पता चला कि आपकी पत्नी का देहान्त हो गया । आपने उसके बाद दूसरा निकाह किया दूसरी पत्नी से एक पुत्र अब्दुल अज़ीज़ हुए। अब्दुल अज़ीज़ जब बड़े हुए और अपने पिता और सौतेले भाइयों के पराक्रम के बारे में उन्हें पता चला तो उनसे मिलने को व्याकुल हो गये तथा मनेर के लिये चल पड़े। यहां पहुँच कर अपने परिवार वालों के कार्य में सहायक बन गये तथा यहीं रह गये। आप का मज़ार बड़ी दरगाह बिहारशरीफ में है। हज़रत मखदूम शाह शुऐब फिरदौसी आपके ही पौत्र हैं जिनका मज़ार शरीफ शेखपुरा में प्रकाशमान है ।

मनेर विजय के बारे में मो० मुरादुल्लाह मनेरी लिखते हैं। 27 रजब, शुक्रवार 576 हिजरी में मुसलामानों को विजय प्राप्त हुई और मनेर पर उनका कब्जा हुआ। यह विजय केवल स्थानीय नहीं थी क्योंकि हज़रत इमाम मो० ताजफ़क़ीह के सहयोगी जो इस युद्ध में शमिल हुए और शहीद हुए उनके मज़ार मनेर शरीफ से काफी दूर पर भी स्थित है। उदाहरण के रूप में शाह बुरहानुद्दीन शहीद पीर जिनका मज़ार पटना से दक्षिण कुम्हरार में है और चन्दन शहीद का मज़ार सासाराम की एक पहाड़ी पर है जो चन्दन शहीद की

चोटी कही जाती हैं। यह शहर से कुछ दूर है। सेनापति हज़रत कुतुबुल अक्ताब अलम बरदार रब्बानी का मज़ार मनेर शरीफ के पास मेंहदावां में है। ताजुद्दीन खानदगाह जो महमूद ग़ज़नवी के परिवार के एक सदस्य थे मनेर शरीफ की बड़ी दरगाह में उनका मज़ार है (आसारे मनेर) बिहार प्रदेश में मनेर को इस्लाम की पहली स्थली होने को गौरव प्राप्त है। यही वह पहला स्थान है जहां से पूरे प्रदेश में इस्लाम का प्रकाश फैला। इसे औलिया और सुफिया की जन्म स्थली और शरण स्थली होने का भी गौरव प्राप्त है जिस के चर्चे सुन कर देश और विदेश के भी प्रसिद्ध लोग, सुफियों, मशायख़ ज्ञानी और राजा-महाराजा यहां आये और यहीं के होकर रह गये । इनके मज़ारात आज भी यहाँ विभिन्न स्थानों पर शांन्ति संदेश के प्रसारण का माध्यम हैं ।

मुलतान उल मख़दूम

शैख़ कमालुद्दीन यहया मनेरी (रह०)

हज़रत इमाम ताज फ़क़ीह के येरुशलम (बैतुल मुक़द्दस) लौट जाने के बाद उनके पुत्र शैख़ इसराईल यहया मनेरी ने प्रशासनिक कार्य संभाले। आपके बाद आपके पुत्र हज़रत शेख कमालुद्दीन यहया मनेरी ने शासन प्रशासन संभाला। हजरत शेख कमालुद्दीन यहया मनेरी(रह0) शैख इसराईल के पुत्र और हज़रत इमाम ताज फ़कीह के पौत्र थे । आप 572 हिजरी को येरुशलम(बैतुल मुक़द्दस) के अलखलील में पैदा हुये । 576 में केवल चार वर्ष की आयु में अपने परिवार के साथ मनेर आये प्रसिद्ध बुजुर्ग शाह रूकनुद्दीन मरग़ीलानी की देख रेख में आपकी शिक्षा-दीक्षा हुई। शेख शहाबुद्दीन सेहरवर्दी (रहमतुल्लाह अलैह) से अध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की और उन्ही के हाथों पर बैत भी किया। आप का विवाह प्रसिद्ध बुजुर्ग और वली-ए-कामिल हज़रत शेख शहाबुद्दीन पीर जगजोत (रह०) की पुत्री बीबी रज़िया के साथ हुई जिन से पांच संताने हुई जिनमें चार पुत्र और एक पुत्री थी उनके संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं ।

(1) **हज़रत शेख जलीलुद्दीन अहमद मनेरी** - आप अपने पिता हज़रत शेख कमालुद्दीन यहया मनेरी रहमतुल्लाह अलैह के बाद उनके सज्जादा नशी हुये और इस्लामी शिक्षा-दीक्षा जारी रखी। आप का

मज़ार हजरत मखदूमे जहां के मज़ार के पास है।

(2) **हज़रत शेख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी** - इनके बारे में आगे विस्तृत रुप से बताया गया है।

(3) **हज़रत शेख जलीलुद्दीन अहमद मनेरी** - आप अपने बड़े भाई हज़रत मखदूमे जहां शेख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी से मुरीद हुये और उनके हाथों पर बैत किया। इनका मजार बिहार शरीफ में है। पिता और चचा के पैरों के पास उनका मज़ार है आप के पुत्र मखदूम शाह अशरफ की शादी हज़रत मखदूमेजहां शेख शरफुद्दीन यहया मनेरी की बड़ी पुत्री बीबी फातिमा से हुई । मखदूमेजहां की दूसरी पुत्री बीबी ज़ोहरा की शादी हज़रत शाह कमरूद्दीन बिन मौलाना मीर शमसुद्दीन मार जिन्दानी से हुई ।

(4) **हज़रत मखदूम शाह हबीबुद्दीन अहमद मनेरी** - आपका मज़ार मखदूम नगर सिकड जिला बरदवान में है, जो पश्चिम बंगाल में स्थित है।

(5) हज़रत मखदूम शेख यहया मनेरी की पुत्री की शादी हज़रत मखदूम मौलाना मीर शमसुद्दीन मार जिन्दानी से हुई । मीर शमसुद्दीन का परिवार मारजिन्दान से सम्बन्धित था । आप के पिता शमसुद्दीन का परिवार भी मारजिन्दान से सम्बन्धित था । आप के पिता हज़रत इमाम ताजफ़क़ीह के साथ मनेर आये थे । आप के ज्ञान तक़वा, रूहानियत (अध्यात्म) और धर्म के प्रति समर्पण की चर्चा दूर दूर तक थी। शिक्षा और अध्यात्म में रूचि रखने वाले दूर दूर से उनके पास आते थे । आपका मज़ार बड़ी दरगाह में है आपकी पत्नी का मज़ार भी वहीं पर है ।

हज़रत मखदूम शेख कमालुद्दीन यहया मनेरी अपने समय के बाकमाल

सूफी बुजुर्ग और ज्ञानी थे । आपके प्रयास से न केवल बिहार बल्कि बिहार से बाहर भी इस्लाम का प्रचार-प्रसार हुआ और इसका प्रकाश दूर दूर तक फैला। वह हर समय अल्लाह की याद में लीन रहते थे । इबादत और ज़िक्र आपका प्रिय कार्य था । दुनिया में उनकी कोई रूचि नहीं थी । धन और सत्ता से बहुत दूर दूर रहते थे । सदा दूसरों के काम आते थे । लोक सेवा में विशेष रूचि थी। दुनिया के मान सम्मान में कोई रूचि नहीं होने का उदाहरण इस से मिलता है कि जब बख़्तियार खिलजी बिहार के भ्रमण पर आये तो मनेर की सत्ता आप के ही पास थी । आप ने मनेर का नेतृत्व बहुत दबाव डालकर बख्तियार ख़िलजी को वापस कर दिया । उन्हों ने कहा कि मैं मुसलमानों का माल नही लेता हूँ । आपने कहा कि बादशाही और सत्ता वंशागत और स्वामित्व नही हैं, यह अल्लाह की ओर से है । वह जिसे चाहता है इस से सुशोभित करता है। मुझ से यह भारी बोझ नहीं उठेगा इसके कारण इबादत और ज्ञान ध्यान में विघ्न पड़ता है। फिर बखितयार खिलजी को न्याय के साथ शासन का उपदेश दिया और राज-काज सौंप कर संयास ले लिया। 'आसारे मनेर' के लेखक लिखते हैं ।

''आप के उपदेशों से असंख्य लोग प्रभावित हुए। आप ने अपना पूरा जीवन अल्लाह की याद और समाज सेवा में बिता दिया । मोह माया से हमेशा दूर रहे, यही कारण है कि मनेर का राज-काज और सत्ता एक मुजाहिद को सौंप कर स्वयं संयास ले लिया ।'' (आसारे मनेर)

आपका स्वर्गवास 11 शबानुल मुअज़्ज़म 669 हिजरी में हुआ । मृत्यु के समय आपकी आयु 117 वर्ष थी । आपका मज़ार शरीफ मनेर शरीफ में स्थित है और 11 शाबान को उनका वार्षिक उर्स होता है जिसमें भारत के कोने-कोने से लोग आते हैं।

मख़दूमे जहां का व्यक्तित्व और कृतित्व

हज़रत शैख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी का नाम अहमद और उपनाम शरफुद्दीन, उपाधी मखदूमेजहां और मखदूमुल मुल्क था पिता का नाम शैख कमालुद्दीन यहया था, जिनकी वंशावली रसुलुल्लाह (स०)के हज़रत जुबैर इबन अब्दुल मुतलिब से मिलता है । आपकी माँ की वंशावली हुसैनी सादात की है आपके नाना शैख शहाबुद्दीन पीर जगजोत (रह०) बड़े बुजुर्ग और बहुत अल्लाह वाले थे । उनका पैतृक स्थान काशग़र था। वह वहां से भारत आये थे और पटना से तीन मील दूर जेठुली नाम के गाँव में वास किया आप ही की पुत्री बीबी रजिया ने हज़रत मखदूमेजहां शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी को जन्म दिया । इस प्रकार आप अपने पिता और माता दोनों ही ओर से बहुत उच्च श्रेणी के लोग थे ।

जन्म :

हज़रत मखदूमेजहां का जन्म हिजरी कैलेण्डर के अनुसार 29 शाबान 661 अर्थात् अगस्त 1263 जुमा के दिन मनेर शरीफ में हुआ । उस समय नसीरूद्दीन इब्न शम्सुदीन अलतमिश भारत का शासक बन चुका था ''शर्फ आगी'' से जन्म तिथि निकलती है । आपकी माता बीबी रज़िया बहुत ही नेक और अल्लाह की उपासना करने वाली महिला थीं । उन्होंने कभी भी अपने पुत्र को बिना वज़ू दूध नहीं पिलाया । इतिहास की पुस्तकों में आपके बचपन

की एक रोचक घटना का पता चलता है। एक बार आपकी माताश्री आपको घर में अकेला छोड़ कर दूसरे मकान में चली गईं। थोड़ी देर के बाद वापस आयीं तो देखा कि एक व्यक्ति वहां पर बैठा हुआ है और मक्खिया उड़ा रहा है । और पालना हिला रहा है । आप डर गयीं तो वह गायब हो गया । यह घटना उन्होंने अपने पिता हज़रत शेख शहाबुद्दीन से बयान किया तो उन्होंने कहा कि डरो नहीं वह तो हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम थे ।

शिक्षा :

आपकी आरम्भिक शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई । आप घर पर ही महत्वपूर्ण पुस्तकें मनेर में ही रह कर पढ़ते रहे। तभी उनकी उच्च शिक्षा के लिये आश्चर्यजनक अवसर निकला। हज़रत मौलाना अशरफुद्दीन अबु तवामा दिल्ली में शिक्षा-दीक्षा का काम कर रहें थे । उनके ज्ञान की चर्चा दूर दूर तक थी । उनकी ख्याति और उनके मानने वालों की बड़ी संख्या को देख कर उस समय के राजा ग्यासुद्दीन बलबन को यह भय सताने लगा कि कहीं यह सत्ता पर कब्जा न कर लें । बलबन ने राजनीतिक कारणों से उन्हें सोनार गांव (बंगला देश) चले जाने का आदेश दिया । आप दिल्ली से सोनार गांव जाते हुए 668 हिजरी में हज़रत मखदूम कमालुद्दीन यहया मनेरी से मिलने के उद्देश्य से मनेर आये और कुछ दिन वहां रुके, शैख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी ने जब अल्लामा अशरफुद्दीन अबू तवामा से भेंट की तो उनके ज्ञान से बहुत प्रभावित हुए। मन में सोचा कि क्यों न उनके साथ रह कर शिक्षा प्राप्त की जाये । अपने पिता और माता की अनुमति से आप अल्लामा अबुतवामा के साथ सोनार गांव के लिये निकल पड़े । मखदूमेजहां ने अपनी पुस्तक ''ख्वानेपुर नेमत'' के छठे अध्याय में अपने गुरु से अपने प्रेम और आदर के सम्बन्ध में लिखा है ''मौलाना अशरफुद्दीन अबु तवामा ऐसे ज्ञानी थे कि पूरे

भारत के लोगों का ध्यान उनकी ओर जाता था ज्ञान के मामले में कोई भी उनकी बराबरी नहीं कर पाता था ।'' आप सोनार गांव पहुँच कर शिक्षा की प्राप्ति में लग गये। आप बहुत ध्यान और एकाग्रता के साथ शिक्षा प्राप्त करने लगे । साथ ही वह इबादत और ध्यान के लिये भी समय निकाल लेते थे । आप समय को इतना बहुमूल्य समझते थे कि उन्हें लगता था कि सभी विद्यार्थियों तथा दूसरों के साथ बैठ कर भोजन ग्रहण करने में बहुत समय बर्बाद होता है। मौलाना अशरफुद्दीन अबू तवामा ने आपके इन विचारों को पढ़ लिया और भोजन उनके विश्रामगृह में ही भेजने का प्रबन्ध कर दिया ।

मौलाना शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी का विद्यार्थी जीवन शिक्षा के प्रति पूर्ण समर्पण तथा ध्यान में बीता। आप अपनी शिक्षा-दीक्षा में इतने व्यस्त रहते थे कि घर से जो पत्र आते थे उसे पढ़ते भी नहीं थे बल्कि एक बक्स में जमा कर देते थे। उन्हें लगता था कि चिट्ठी पढ़ने में समय बहुत लगेगा और मन भी विचलित होगा । जिससे शिक्षा की प्राप्ति में रुकावट आयेगी ।

निकाह (विवाह) :

अल्लामा अशरफुद्दीन अबू तवामा ने आपकी हर तरह से देख रेख की और अच्छी शिक्षा से सुसज्जित किया और फिर अपनी पुत्री बहू बादाम से शैख शरफुद्दीन अहमद का निकाह (विवाह) कर दिया और अपना दामाद बना लिया । उनसे एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम ज़की उद्दीन था । ''अनवारे विलायत'' के लेखक सैयद शाह अब्दुल कादिर इस्लामपूरी के अनुसार हज़रत मखदूमेजहां को दो बेटियां भी थीं । एक का नाम बीबी फातिमा और दूसरी का नाम बीबी ज़ोहरा था । कुछ दूसरे सूत्रों से यह भी पता चलता है कि आप और बहूबादाम से एक पुत्र और दो पुत्रियों का जन्म हुआ ।

घर वापसी :

शिक्षा सम्पन्न होने के बाद हज़रत मखदूम ने पत्रों का बक्सा खोला पहला पत्र जो आपने पढ़ा उस में आप के पिता हज़रत मखदूम कमालुद्दीन यहया मनेरी की मृत्यु की सूचना थी। मखदूम कमालुद्दीन यहया मनेरी का देहान्त 690 हिजरी में हुआ । यह पत्र पढ़ कर आप विचलित हो गये और आप की आंखों में आंसू आ गये। मां के बारे में सोंचने लगे । मां के प्रेम से विवश होकर अपने गुरु से आज्ञा ली और अपने पुत्र शैख ज़की उद्दीन को लेकर मनेर वापस पहुंचे । ''मुनाक़िब-उल-असफिया'' में दर्ज है कि ''वहां से मनेर के लिये चल पड़े । मां की सेवा में उपस्थित हुये, बच्चे को दादी को सौंपा और कहा कि इसे मेरे स्थान पर स्वीकार करें और मुझे आज्ञा दें । इसके बाद दिल्ली रवाना हो गये और मशायख दिल्ली की सेवा में उपस्थित हुए।''

दिल्ली की यात्रा और पीर की तलाश :

जब मखदूमे जहां सोनार गांव से मनेर आये तो पीर-मुर्शिद की सेवा में रह कर और अध्यात्म तथा तसव्वुफ की राह पर चलने की इच्छा हुई । इच्छा में शक्ति थी, अल्लाह का सच्चा प्रेम दृढ़ निश्चय और अध्यात्म की प्यास ने उन्हें अब तक की शिक्षा पर चैन नहीं लेने दिया आपने अपने पुत्र को अपनी मां के हवाले करने के बाद उनसे दिल्ली जाने की आज्ञा मांगी । अनुमति मिलने के बाद अपने बड़े भाई मखदूम जलील मनेरी के साथ 690 हिजरी के अन्तिम दिनों में दिल्ली के लिये चल पड़े। दिल्ली में बहुत से मशायख और सुफियों से आप ने भेंट की मगर कहीं भी आत्मा की सन्तुष्टि और तृप्ति नहीं मिली । विख्यात इतिहास कार और इस्लामिक विद्वान मौलाना सैय्यद अबुलहसन अली नदवी ''तारीख दावतो अज़ीमत'' के तीसरे भाग में

लिखते हैं, अनुमान होता है कि महान ज्ञानी गुरू की शिक्षा और उनके द्वारा जलाई ज्योति के कारण आप में अपने समय के ज्ञानियों और शिक्षाविदों को परखने की शक्ति और क्षमता विकसित हुई थी । दिल्ली पहुंच कर आप ने उस समय के महान ज्ञानियों के यहां उपस्थिति दी और उन्हें इस प्रकार परखने का प्रयास किया कि इन में से किसे अपना आध्यात्यिक गुरू बनाया जा सकता है। परन्तु जैसा कि इतिहासकारों ने लिखा है कि उन्हें दिल्ली के बुज़ुर्गों में कोई भी ऐसा नहीं लगा जिसे वह अपना गुरू बना सकते। ''मुनाकिबुल असफिया'' में है कि आप सभी बड़े मशायख़ के यहां गये और उसके बाद कहा कि यदि पीरी मुरीदी यही है तो हम भी शैख़ हैं। फिर सुलतानुल मशायख हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया से भेंट हुई । आप से ज्ञान की बातें हुई और हज़रत निज़ामुउदीन औलिया की बातों से बहुत प्रभावित हुए हज़रत ख्वाजा ने आप का बहुत सम्मान किया और कहा ''सेमुर्ग अस्त, नसीबे दामे मा नीस्त'' अर्थात एक ऊँची उड़ान वाला शाहीन (पंछी) है जो मेरे जाल के भाग्य में नहीं है ।

दिल्ली से शैख शरफुद्दीन यहया मनेरी पानीपत आये और यहां शैख बूअली क़लन्दर पानीपति की सेवा में उपस्थित हुये परन्तु वहां भी संतुष्टि नहीं मिली और कहा ''शैख अस्त अमा मग़लूबुल हाल अस्त ब तरबीयत नमी परदाज़'' अर्थात शेख है परन्तु स्थिति के वश में हैं और दूसरों को प्रशिक्षण नहीं दे सकते ।

शेख नजीबुद्दीन फ़िरदौसी से बैत :

जब आप दिल्ली और पानीपत से वापस हुये तो आपके बड़े भाई शैख़ जलीलुद्दीन ने खाजा नजीबुद्दीन फ़िरदौसी के बारे में बताया और उनकी बड़ी प्रशंसा की। आपने उत्तर दिया कि जो दिल्ली के कुतुब (धर्मगुरू) थे

उन्होंने तो हमें पान देकर विदा कर दिया। दूसरे के पास जाकर क्या मिलेगा? भाई ने कहा कि भेंट कर लेने में क्या बुराई है। उन से जरूर मिलना चाहिए। भाई ने जब अधिक दबाव डाला तो उन से मिलने का निर्णय किया और फिर दिल्ली पहुँचे । आप इस तरह से दिल्ली पहुंचे कि पान खा रहे थे और कुछ पान रूमाल में बंधा हुआ था । जब ख़्वाजा नजीबुद्दीन फिरदौसी के दरबार में पहुंचे तो घबराहट हुई। डर सा लगा और पूरा बदन पसीने में भींग गया। आश्चर्य हुआ, कहने लगे शेख़ निज़ामुद्दीन के यहां, दूसरे बड़े मशायख़ के यहां भी गया परन्तु कहीं यह हालत नहीं हुई । मन का जो हाल यहां है वह कहीं और नहीं हुआ। जब हज़रत शैख के यहां पहुंचे और शैख़ की दृष्टि उन पर पड़ी तो शैख ने फरमाया "मुंह में पान और रूमाल में भी पान और उस पर दावा कि हम भी शैख हैं," यह सुनते ही हज़रत मख़्दूम ने मुंह से पान फेंक दिया और उन के आज्ञाकारी बन कर शैख के सामने बैठ गये । कुछ समय बीतने के बाद शैख से मुरीद होने की इच्छा व्यक्त की। शैख ने स्वीकार कर लिया वह सिलसिला-ए-फिरदौसिया के मुरीदों में शामिल हो गये । और फिर उन्हें जाने की अनुमति दे दी । शैख शरफुद्दीन ने निवेदन किया कि मैंने अभी आपकी सेवा भी नहीं की और ना ही शरीयत और तरीक़त की आपसे शिक्षा ही ली फिर मैं इतना महत्व पूर्ण दायित्व कैसे निभा पाऊँगा । खाजा नजीबुद्दीन ने फरमाया कि यह अनुमति गैबी (अदृश्य दूनिया) है तुम्हारी शिक्षा-दीक्षा रसुल्लाह (स०) की रूह (आत्मा) करेगी । चिन्ता न करो। फिर आवश्यक निर्देश देकर उन्हें जाने को कहा साथ ही यह भी फरमाया कि यदि रास्ते में कोई समाचार सुनो तो वापस मत आना । इसके बाद आप वहां से रवाना हुए मगर एक दो पड़ाव भी पार नहीं किया था कि हज़रत ख़ाजा नजीबुद्दीन फिरदौसी के देहान्त का समाचार मिला। परन्तु गुरू आदेश के अनुसार आपने अपनी यात्रा जारी रखी और मनेर की ओर चलते रहे ।

बिहिया के जंगल में तपस्या एवं आराधना :

हज़रत शैख नजीबुद्दीन से भेंट और सेवा मे रहने से आप विशेष भक्ति और संवेदना में विभोर हो गये थे । दिल में एक चोट सी लगी थी और इश्के हक़ीकी (ईश्वर से प्रेम) उमड़ने लगा था । जब आप बिहिया पहुंचे तो मोर की आवाज सुनी। मन में एक हलचल सी मच गई। अचानक जैसे सारा धैर्य समाप्त हो गया। अपना पुरा वस्त्र फाड़ दिया और जंगल में छुप गये । लोगों ने बहुत खोजा परन्तु नहीं मिले। अन्ततः भाई और शैख नजीबुद्दीन द्वारा जारी यात्रा अनुमति पत्र और उत्तराधिकारी पत्र तथ खिर्क़ा इत्यादि निशानी के रूप में लेकर वापस लौट आये। यह घटना 691 हिजरी की है। पता चलता है कि शैख शरफुद्दीन यहया मनेरी बारह वर्षों तक बिहिया के जंगलों में रहे और तपस्या करते रहे। बिहिया मनेर से लग भग 20 मील की दूरी पर पश्चिम में अवस्थित है इस समय यह भोजपूर जिला में है और यहां रेलवे स्टेशन और सड़कों की भी व्यवस्था है। आपने इस जंगल में खूब इबादत की और बहुत कष्ट के साथ जीवन बिताया। कहा जाता है कि इसी जंगल में बारगाहे नब्वी से आपकी शिक्षा और आध्यात्मिक प्रशिक्षण का कार्य हुआ ! जिस समय आप बिहिया के जंगल में थे उस समय की एक अभूतपूर्व घटना के बारे में बताया जाता है कि जंगल में कुछ खाने पीने की व्यवस्था तो थी नहीं इस लिये फल फूल पर जीवन यापन होता था । अन्तिम वर्षों में आप एक पेड़ में सट कर बैठे गये और इबादत में लीन हो गये । ध्यान में ऐसा डूबे कि फिर किसी बात का कुछ पता नहीं रहा। पूरे बदन पर मिट्टी जम गई चीटियाँ मुंह में आती जाती थीं। और आप को पता भी नहीं चलता। एक दिन शाहाबाद (जिला भोजपुर) के डुमरांव का एक ज़मीनदार जो गैर मुस्लिम था शिकार करता हुआ उस पेड़ के पास पहुँचा। पहले तो आपको इस हाल में देख कर उन्हें मृत समझा। मगर जब वह पास गया तो पाया कि वह जीवित हैं। वह

आप को पलंग पर उठाकर घर लाया, मिटटी साफ की, स्नान कराया मालिश कराया, दवा और इलाज कराया, खूब सेवा की। कुछ दिनों के बाद आपको स्वास्थ लाभ हुआ। शक्ति लौट आई, आप चलने फिरने योग्य हो गये तो आपने जाने की अनुमति मांगी। ज़मीनदार ने आपसे आग्रह किया कि आप यहीं रह जाइए ।

मगर आप इसके लिये तैयार नहीं हुए। थक हार कर वह आप के साथ चलने पर राज़ी हो गया और आपको साथ लेकर मनेर के पास तक पहुंचा दिया "शर्फा की नगरी" के लेखक सैयद क़ियामुद्दीन के अनुसार वह गैर मुस्लिम राजा आपका सन्देश पाकर मुसलमान हो गया । इस का प्रभाव यह पड़ा कि उसने बहुत उन्नति प्राप्त की और प्रभाव में वृद्धि हुई । आज भी उस के वंशज इस क्षेत्र में आबाद हैं ।

राजगीर के जंगल में :

हजरत मखदूमेजहां 12 वर्षों तक बिहिया के जंगल में तपस्या करने के बाद राजगीर के जंगल में रहने लगे। राजगीर बिहार शरीफ से लगभग चौदह मील की दूरी पर दक्षिण पश्चिम में है । कभी यह मगध की राजधानी थी। डा० हंटर के अनुसार राजगीर के पहाड़ दो भाग में समानान्तर दक्षिण पश्चिम की ओर चले गये हैं । जिनके बीच में एक तराई क्षेत्र है जहां जगह जगह नदी नाले हैं । यह पहाड़ किसी भी स्थान पर हज़ार फिट से अधिक ऊँचे नहीं हैं। बताया जाता है कि राजगीर का वह जंगल और पहाड़ जहां आप ने समय बिताया वह सभी धर्मों के लोगों के लिये एकान्त और उपासना का स्थान रहा है। इतिहास बताता है कि बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध ने भी वर्षो यहां रह का पूजा आराधना की और ध्यान किया । उन्होंने ज्ञान की बहुत सारी सीढ़ियां यहीं चढ़ीं, बड़ी संख्या में हिन्दू जोगियों

की भी यह पूजा स्थली रही है। उन्होंने यहां तपस्या की। यहां के जंगलों के बारे में कहा जाता है कि यह प्राकृतिक रूप से पूजा आराधना और ध्यान तथा तप के लिये अनुकूल है। जिस समय हज़रत मखदूमेजहां यहां इबादत और ध्यान में लीन थे उस समय यहां हिन्दू जोगी भी विभिन्न स्थान पर ध्यान में लगे हुये थे और तपस्या कर रहे थे। कुछ पुस्तकों में आपके और उन हिन्दू जोगियों के बीच होने वाली बातचीत के बारे में भी लिखा गया है। आज भी मखदूमेजहां का हुजरा (शरण स्थली) उस पहाड़ की तराई में एक झरने के पास है जहां आप इबादत करते और ध्यान लगाते थे । मखदूमकुण्ड के नाम से एक झरना भी है जो बहुत विख्यात है । मखदूमे जहां ने जीवन का बड़ा भाग इस जंगल में इबादत और ध्यान की हालत में बिताया। एक बार क़ाजी ज़ाहिद ने आपसे उस समय की इबादत और ध्यान के बारे में पूछा तो आपने फरमाया: मैं ने तीस वर्षों तक खाना नहीं खाया, आवश्यकता पड़ने पर पेड़ के पत्ते और छाल खा कर समय बिता देते थे, पेशाब पैखाना बन्द हो गया था । एक रात स्नान की आवश्यकता हुई। सुबह तालाब किनारे गये कि स्नान करलें। पानी बहुत ठंडा था। ठंड भी बहुत थी। सोंचा कि रूख्सत के प्रावधान के अन्तर्गत तयमुम्म(मिट्टी की सहायता से शुद्धि किया जाता है) करलें, तुरन्त विचार आया कि आत्मा रूख़सत की आड़ में आराम खोज रही है तो तुरन्त पानी में कूद गये । बाहर आये तो अचेत होगए । फिर जब सूर्योदय हुआ और सूर्य की गर्मी बदन को लगी तब चेतना वापिस आई । उस दिन फ़जर (सुबह) की नमाज़ छूट गई । आपने फरमाया, मैंने इतना कड़ा तप किया कि यदि पहाड़ भी करता तो पानी हो जाता मगर शरफुद्दीन को कुछ नहीं हुआ।

काफी लम्बे समय के बाद लोगों ने आपको राजगीर के जंगल में देखा तो उनसे भेंट करने जाने लगे । हज़रत शैख निज़ामुद्दीन औलिया के एक

खलीफ़ा जो उन्हीं के नाम वाले थे । जब मौलाना निज़ामुद्दीन को यह पता चला कि शेख़ शरफुद्दीन से लोग भेंट करने जाते हैं तो वह भी जाने लगे । शेख़ शरफुद्दीन यहया मनेरी ने जब उनकी सच्ची तलब देखी तो कहा यह जंगल बहुत ही घना और खतरनाक है तुम लोग इतनी दूर से आते हो । यहां नरभक्षी और दूसरे खतरनाक पशु रहते हैं । मुझे तुम्हारी चिन्ता लगी रहती है। तुम लोग शहर में ही रहा करो । मैं हर जुमा (शुक्रवार) को शहर आ जाया करूंगा और जामा मास्जिद में तुम लोगों से भेंट होजाया करेगी । सभी को यह बात अच्छी लगी । मखदूमे जहां शुक्रवार को बिहारशरीफ आते कुछ देर मौलाना निज़ामुद्दीन और अनके साथियों के साथ रहते और फिर जंगल लौट जाते लम्बा समय इसी प्रकार बीता ।

खानक़ाह का निर्माण :

जब श्रद्धालुओं से भेंट का यह सिलसिला बहुत दिनों तक चला तो श्रद्धालुओं ने आपस में सलाह की कि हज़रत मखदूमेजहां के लिये एक स्थान सुरक्षित होना चाहिए जहां वह जुमा की नमाज़ के बाद विश्राम कर सकें । इसके बाद शहर से बाहर बिहार शरीफ मखदूमेजहां के लिये दो छप्पर डाल दिये। जब आप जुमा की नामज़ पढ़ लेते तो वहां आकर सभी के साथ समय बिताते । कभी कभी वहां वह दो तीन दिन रुक भी जाते । इसके बाद मौलाना निज़ामुद्दीन ने बिहार के गर्वनर मोजाहिद मलिक से अनुमति लेकर अपने ध न और श्रम से एक पक्का भवन निर्माण कराया। जब भवन का निर्माण हो गया तो एक बड़े भोज का आयोजन किया और सभी को निमंत्रण दिया। इस में मौलाना के मित्रों और सम्बधियों ने भाग लिया। जब सभी लोग इकटठा हो गये तो उपस्थित लोगों ने हज़रत मखदूमेजहां से सज्जादा पर बैठने का अनुरोध किया आप ने उसे सम्मानित किया । इसके बाद मौलाना निज़ामद्दीन और सभी

को सम्बोधित करते हुये कहा ''याराने मजालिस शुमाबरईन हद आवर्द के दरीं खाना निशान्दी'' मित्रों तुम्हारे साथ उठने बैठने ने मुझे इस बुतखाना में बिठा दिया ।

यह वह समय था जब सुलतान मो० तुगलक अपने पिता ग्यासुद्दीन तुग़लक की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठा था । सुलतान मो० तुगलक को सूचना मिली कि शैख़ शरफ़ुद्दीन यहया मनेरी जो वर्षों बिहिया और राजगीर के जंगल में रहे और आमजन से दूर रहे अब शहर में आ गये हैं। लोगों के साथ उठने बैठने और मिलने जुलने लगे हैं तो उसने मोजाहिद मलिक गर्वनर बिहार को पत्र लिखा कि शेख के लिये एक ख़ानकाह का निर्माण कराया जाये और राजगीर की खानकाह के फ़कीरों के लिये धनराशि उपलब्ध करा दी जाये। यदि मखदूमेजहां स्वीकार न करें तो अनुरोध पूर्वक स्वीकार कराया जाये इस के साथ ही एक बलग़ारी जाये-नमाज़ भी आपकी सेवा में भेजी। बादशाह तुगलक का यह आदेश जब मोजाहिद मलिक को पहुंचा तो वह हजरत मखदुमेजहां के दरबार में आये और बोले कि बादशाह के आदेश का पालन न करना मेरे लिये संभव नहीं है। यदि आप स्वीकार नहीं करेंगे तो आरोप मुझ पर आयेगा और बादशाह मुझे पता नहीं इसके लिये क्या दंड दें। हजरत मखदूमेजहां ने जब मोजाहिद मलिक का आग्रह सुना और उसकी स्थिति पर विचार किया तो लाचार होकर उसे स्वीकार कर लिया । सुलतान के देहान्त के बाद जब उसका पुत्र फिरोज़ शाह तुग़लक दिल्ली की गद्दी पर बैठा तो आपने उस जागीर को वापिस लौटा दिया ।

मख़दूमेजहां का अदभुत व्यक्तित्व

फ़िना फ़िल्लाह (अल्लाह के लिये समर्पित):

हज़रत मखदूमेजहां तसव्वुफ और सलूक के शीर्ष स्थान पर विराजमान थे और अल्लाह को समर्पण आपकी सबसे प्रमुख विशेषता थी हर समय उसी की सोच और प्रेम में डूबे रहते । मौलाना अली मियां नदवी (रह०) उनकी इस विशेषता के बारे में लिखते हैं "आपकी सबसे बड़ी विशेषता जो आपकी जीवन शैली और प्रकृति बन गई थी और जिस पर आपका कोई वश नहीं था वह नीस्ती (कुछ न होने की अनूमूर्ति) और फिनाईयत (एक दिन नष्ट हो जाने का एहसास) है जो मोजाहिदा और रेयाज़त का फल और सालिक तरीक़ के बुलन्दतरीन कमालात में से है।"

(तारीख-ए-दावतो अज़ीमत (भाग तीन) 205)

मोनाक़िबुल असफिया में आप फरमाते हैं "आर्जू-ए-मन आनस्त के नामे मन दरी जहां बाशद व दरां बाशद" मेरी यह इच्छा है कि मेरा नाम न इस दुनियां में रहे और न उस दुनिया में इससे आप की दुनिया और इसके मोह माया से दूरी का पता चलता है ।

व्यवहार एवं नैतिकता :

मखदूमेजहां का व्यवहार कुरान शरीफ के अनुसार था । सुफियाये

कराम का व्यवहार चिराग-ए-नबवी(रसुल्लाह के चिराग़) प्रकाश से चमकते है। ''मोनाकि़बुल असफिया'' में लिखा है कि ''अख़लाक़ शैख शरफुद्दीन मानिद अखलाक़े नबी बूद'' शैख शरफुद्दीन के व्यवहार नबी (स०) के जैसे थे । लोगों के साथ व्यवहार, उनके साथ प्रेम, आदर और स्नेह के साथ पेश आना, लोगों की कमियों और त्रुटियों को छुपाना और उनकी हर संभव सहायता करना उनके व्यवहार में शामिल था । आपका व्यवहार ही नहीं सच तो यह है कि उनका पूरा जीवन ही, रसुल (स०) के आचार विचार और संदेश में ढला हुआ था । आप अपनी बैठकों में भी लोगों को उच्च आचार व्यवहार का संदेश दिया करते थे । आपने अपने एक पत्र में लिखा '' जो कोई भी शरीयत (धर्म) के पालन में जितना सच्चा होता है उतना ही वह विनम्र शुद्ध विचार और व्यवहार वाला होता है और जो जितना विनम्र और शुद्ध व्यवहार वाला है वह अल्लाह को उतना ही प्यारा होता है । अच्छा व्यवहार हज़रत आदम (अ०) से मिली धरोहर और भगवान का दिया हुआ उपहार है । इस लिये मोमिन (इमान वाले) के लिये अच्छे व्यवहार का अर्थ अल्लाह ताला के आदेशों का पालन और उनके रसूल के दिखाये रास्ते पर चलना है क्योंकि सैय्यदुल कायनात (सृष्टि के शीर्षस्थ) अलैह अफ़जलुस्सलातो वस्सालाम के सभी क्रिया कलाप सदा ख़ल्क़ और खालिक़ (सृष्टि और उसके रचयिता)को पसन्द रहे हैं और जो कोई आप का अनुसरण करता है उसे चाहिए कि अपना जीवन इस प्रकार व्यतीत करे जिस प्रकार आप (स०) ने जीवन बिताया ।'' (तारीख दावतो अज़ीमत)

इत्तेबा-ए-सुन्नतः

हज़रत मख़दूमेजहां पूर्ण रूप से सुन्नत (हज़रत मोहम्मद स० का अनुसरण) के अनुसार चलते थे और छोटी से छोटी सुन्नत को भी कभी नहीं

छोड़ते थे। यात्रा पर भी होते तो तब भी रुख़सत पर नहीं बल्कि अज़ीमत पर चलते थे ''मनिसुल कलूब में है कि एक बार आप से पूछा गया कि कितनी रेयाज़त की और क्या क्या पाया तो फर्माया, जिस ज़माने में बिहिया के जंगल में था तो एक रात नहाने की आवश्यकता हुई ठंडा मौसम था, बहुत ठंडा पड़ रहा था। ख़्याल आया कि रुख्सत पर अमल करूं और तैयमुम्म करके नमाज़ पढ़ लूं फिर मैं ने सोचा शैतान बहका रहा है आत्मा को भटकाने का प्रयास है कि शरीयत में भी रूख्सत खोजता है। यह सोंच कर कि जब तक कपड़े उतारू शैतान फिर न बहका दे, कपड़ा समेत नदी में कूद गया, बाहर निकला तो बेहोश हो गया फज्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई सालेकीन और सुन्नत की चाहत रखने वालों को हमेशा आक़ा के तरीकों पर पूरी तरह चलते हुये पाया गया है । वह सुन्नत और शरीयत से एक इंच भी दूर नहीं होते। हज़रत मखदूमेजहां का पूरा जीवन सुन्नत-ए-रसूल का नमूना था। सुन्नत पर चलने के आपका तरीका का अन्दाज इस बात से लगाया जा सकता है कि देहान्त के दिन आप की आयु 121 वर्ष थी। कमजोरी बहुत बढ़ गई थी आपने जो आखरी वज़ू दिया इसमें सुन्नत पर चलने और अज़ीमत पर चलने का पूरा प्रयास किया। आप सुन्नत को जितना मानते थे और शरीयत का जितना अनुपालन करते थे उतना ही बिदअत और खुराफात (धर्म में मिलावट) से घृणा करते थे । बिदअत से आपको इतनी घृणा और दूरी थी कि एक अवसर पर फर्माया ''यहां और जहां कहीं भी सुन्नत और बिदअत दोनों सामने आ जायें उस समय सुन्नत का छोड़ देना श्रेष्ठ है बिदअत के अनुपालन से कि सुन्नत पर चलने से बिदअत का अनुपालन हो ।

प्रेम स्नेह और कृपा :

हजरत मखुदमेजहां (रह०) लोगों से बहुत स्नेह और प्रेम से मिलते

थे बड़े कृपालू थे। वह उनकी कमियों और भूलचूक को छुपा लेते तथा दूसरों को प्रसन्न रखने में उन्हें बहुत आनन्द मिलता था । लोगों को हमेशा फायदा पहुंचाते । कभी किसी को हानि पहुँचाने की कोशिश नहीं की आपके प्रेम और स्नेह का यह हाल था कि किसी को दुखी नहीं करते एक बार की घटना है कि आप नफ़िल रोज़ा रखे हुये थे । एक व्यक्ति बहुत ही प्रेम और श्रद्धा पूर्वक कुछ खाने की वस्तु लेकर आया और बहुत ही श्रद्धा के साथ बोला कि हजूर मैं बहुत आशा के साथ आपके पास लेकर आया हूँ । कृपया ग्रहण करें । आपने ग्रहण किया और कहा कि ''रोजा़ तोडकर फिर रखा जा सकता है मगर दिल तोड़ कर जोड़ा नहीं जा सकता ।''

आपके स्नेह, प्रेम का अनुमान आपकी लेखनी और पत्रों से भी होता है । एक पत्र में आपने आरिफ बिल्लाह और सालिक का स्थान और जीवन शौली के बारे मे जो कुछ लिखा है उन सब बातों को अपने जीवन में भी शामिल किया । नीचे उनके एक पत्र का अनुवाद दिया जा रहा है ।

1. उसके स्नेह और कृपा का सूर्य हर एक पर चमकता है । वह स्वयं नहीं खाता मगर लोगों को खिलाता है, स्वयं नहीं पहनता पर दूसरों को पहनाता है, लोगों से उसे जो कष्ट पहुँचता है वह उस पर ध्यान नहीं देता और उनके अत्याचार को नहीं देखता, बल्कि उसके बदले उन पर कृपा करता है, गाली के उत्तर में शुभ वचन देता है । तू जानता है कि वह ऐसा क्यों करता है? इस लिये कि वह सुरक्षित है । उसके ह्रदय से केवल राहत पहुँचाने वाली हवा ही चलती है । वह स्नेह और राहत के मामले में सूर्य के समान होता है जो दोस्त और दुशमन दोनों के लिये एक प्रकार से चमकता है वह सत्कार में जमीन के समान है कि सभी उस पर पांव रखते हैं परन्तु वह किसी से झगड़ा नहीं करता, किसी पर हाथ नहीं उठाता, सभी उसके

परिवार का हिस्सा होते हैं। वह किसी का संबन्धी नहीं है। वह एक दरिया जैसा होता है जितना दोस्त को लाभ पहुँचाता है उतना ही दुश्मन को भी लाभ पहुँचाता है । पूर्व से पश्चिम तक के सभी प्राणियों पर रहमत बन कर बरसता है, क्योंकि वह स्वतंत्र होता है जो कुछ देखता है एक ही स्थान से देखता है (अर्थात सभी प्राणियों को एक ही मालिक की रचना समझता है) उसकी आंख "अहले ज़मां" की आंख होती है । उसके व्यक्तित्व के हर भाग को वह उसी प्रकार अलंकृत रखता है और जिस में यह सब विशेषतायें नहीं हों। उसका तरीकत में कोई महत्व और स्थान नहीं होता ।

दुनिया का मोह नहीं :

हज़रत मखदूमेजहां को दुनिया का कोई मोह नहीं था । बहुत सरल और सादा जीवन व्यतित करते थे । आप को इस बात का गर्व था कि दुनिया के ऐश, मस्ती, आराम,धन, दौलत और सत्ता से दूर वाले जीवन का चयन किया । वास्तविकता यह है कि, जो मार्फत और सुलूक की राहों पर चलता है, वह धन दौलत को ठुकराता और फ़कीरी को अपनाता है, उसे दुनिया की नहीं आखिरत की चिन्ता होती है । मखदूमेजहां दुनिया के आराम और धन वैभव, सुविधा से इतनी दूर थे कि सुलतान तुग़लक ने जो जागीर दी थी, उनके देहान्त के बाद वह जागीर लौटाने उनके पुत्र फिरोज शाह तुग़लक के पास पहुँचे। बादशाह ने आपका स्वागत किया और बहुत आदर सत्कार किया । प्रश्न किया कि या मखदुम आपने आने का कष्ट क्यों किया ? आपने कहा कि एक अनुरोध लेकर आया हूँ आप वादा करें कि उसे स्वीकार कर लेंगे तो कहूँ, सुलतान ने कहा कि, जो आदेश होगा उसे स्वीकार करूंगा । तब आपने जागीर का पत्र सौंपते हुए कहा कि खुदा के वास्ते इसे स्वीकार कर लें यह

मेरे काम का नहीं। बादशाह और दरबारी आश्चर्यचकित हो गये । बादशाह ने वादा कर लिया था इस लिये इनकार नहीं कर सका। मगर आग्रहपूर्वक कुछ धन पेश किया, जो आप ने स्वीकार किया। जब बादशाह के दरबार से बाहर निकले तो सारा धन ग़रीबों में बांट दिया और खाली हाथ आगे बढ़ गये । एक बार हज़रत मखदूम शैख मुज़फ़्फ़र बल्खी़ (रह०) ने कहा "हजरत आपने चालीस वर्ष से कुछ खाया नहीं" आपने फरमाया कि ऐसा न कहो कि कुछ खाया नहीं । हां इतने समय से मैं ने अनाज नहीं खाया मगर कभी कभी फल, पत्ते और घास तो खा ही लिया करता था । सोचिये ज़रा चालीस वर्ष उन्होंने बिना अन्न ग्रहण किये फल, फूल, घास और पत्ते खाकर अल्लाह की इबादत की। आप लोगों की कमियों को छुपाते थे। सबसे खुले मन से मिलते थे और सब की सहायता करते थे ।

ज़ौक और वज्द (रूची और आत्मशक्ति) :

मखदूमेजहां की आत्मशक्ति को लेकर बहुत सी बातें मशहूर है। इनमें से एक यह हैं कि एक बार काज़ी ज़ाहिद ने आप से पूछा कि हज़रत आप को कब कब ज़ौक हुआ? आपने फर्माया, एक बार जब राजगीर के जंगल में था तो एक जगह एक चरवाहा गाय चरा रहा था, मैं उधर जा रहा था । गाय मुझे अच्छी लगी। मैं उसे देखने लगा चरवाहा एक पेड़ के नीचे आराम कर रहा था । उसी समय कुछ हिन्दू महिलायें उधर आई उनमें एक डाइन थी उस ने जादू चलाया और गाय गिर कर तड़पने लगी इतने में चरवाहा वहां पहुँच गया वह मुझे जादूगर समझ कर मुझे पकड़ लिया कि तुमने मेरी गाय मार डाली । आवेश में मेरे सर पर ज़ोर से लाठी मारी वह और मारना चाहता था पर मैं ने पूछा कि मुझे क्यों मारते हो ? उसने कहा तुमने मेरी गाय मार दी । मैंने कहा अगर तुम्हारी गाय अच्छी हो जाये तो मुझे नहीं मारोगे ? उसने

कहा नहीं। मैं उस समय दोहरी समस्या में फंस गया । अगर चुप रहता तो चरवाहा मारता और सच बोलता तो उस औरत का सच सामने आ जाता मैं औरत के पास गया और कहा कि कुछ ऐसा करो कि गाय ठीक हो जाये, तुम्हारा सच भी छुपा रहेगा और मैं भी बच जाऊंगा । नही तो मेरी पिटाई होगी और तेरी बदनामी होगी । उस औरत ने जादू किया तो गाय जीवित हो गई पर मुझे चरवाहा की लाठी खाने में मज़ा आया क्योंकि मेरा अंह कुचला गया । हज़रत शैख मुजफ्फर मरहूम के हवाले से कहा जाता है कि एक बार मखदूम साहब ने राजगीर के पहाड़ के बारे में फरमाया कि एक बार जब मैं राजगीर के पहाड़ पर था विचलित स्थिति में कोई जायज़ चीज खाने के लिये चल पड़ा । पहाड़ के नीचे एक व्यक्ति खाना खा रहा था मैं। उसके पास गया और कहा ''अलतौफीक शैय अज़ीम'' आर्थात इच्छा बड़ी चीज़ है । उसने कहा आओ, खाना खाओ, मैं ने आवश्यकतानुसार उसमें से खाना उठाया ही था कि उस के कुछ मित्रों ने झिड़कना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा तुम्हे शर्म नहीं कि ऐसे व्यक्ति के साथ खा रहे हो । मुझे बड़ा मज़ा आया, पहाड़ पर चढ़ गया और तीन दिन इसी खुशी में नाचता रहा कि मेरी इच्छाओं पर मार पड़ी ।

कश्फ़-व-करामात (चमत्कार) :

बुर्जुगानेदीन और औलिया अल्लाह से कभी कभी ऐसी चमत्कारी घटनायें हो जाती हैं जो साधारण नहीं होती और साधारण भाषा में उसे करामत (चमत्कार) कहते हैं । अल्लाह ने कुछ नबियों को चमत्कारी शक्तियां दी थी । नबी जब चमत्कार करते हैं तो उसे ''मोजज़ा'' कहा जाता है और जब कोई वली या बुजुर्ग ऐसा करते हैं तो उसे करामत कहते हैं । औलिया और बुजुर्गों ने ऐसे चमत्कारों द्वारा लोगों तक ज्ञान पहुंचाया । हज़रत मखदूमेजहां के भी

कई चमत्कार हैं मगर यहां यह याद रहे कि केवल चमत्कार से ही कोई बुजुर्ग या वली नहीं बन जाता और नही कोई वली या बुजुर्ग स्वयं को बड़ा सिद्ध करने के लिये ऐसा कुछ करता है । हज़रत मखदूमेजहां नीस्ती और वाखतगी के जिस उच्च स्थान पर थे और अल्लाह ने आपको जो विशेषतायें प्रदान की थीं उनके कारण चमत्कारी घटनायें होती रहती थीं । परन्तु मखदूमेजहां इसे पसन्द नहीं करते थे जिससे कि उनकी बुजुर्गी का पता चले । आप अपने पत्र में करामत के बारे में लिखते है " कौले मशायख़ है कि दुनिया में बहुत से बुत हैं और उन बूतों में से एक गिरोह (मशायख) के लिये एक बुत करामत है। अगर अपनी करामत पर सन्तुष्ट होये तो महजूब (पराये) हुये और यदि करामत से दूरी बना रखी तो अल्लाह के करीब हुए ।"

(मक्तूबाते सदी - पत्र दस)

❁ **एक** बार की घटना है कि कुछ लोग आपके पास मरी हुई मक्खियां लेकर आये और कहा कि विख्यात कथन है कि "अलशेख योहियो व युमित" अर्थात शेख ज़िन्दा करता है और मारता है । आप आदेश करें कि यह मक्खियां जीवित हो जायें । आपने उत्तर दिया" मैं खुद मरा हुआ हूँ दूसरे को क्या जिन्दा करूंगा। कहा जाता है कि एक बार शेख मिनहाजुद्दीन आप की बैठक में आये हज के फ़र्ज़ होने और उसके लाभ पर बात हो रही थी । शेख मिनहाजुद्दीन ने निर्णायक रूप से कहा कि हज सभी मुसलमान पर फ़र्ज़ है । उनके बोलने के ढंग में घमंड था । आप को उनकी यह बात अच्छी नहीं लगी । मन में बेचैनी हुई । स्वयं पर नियंत्रण न रहा अपनी आस्तीन शैख मिनहाजुद्दीन को दिखाई और कहा कितने हज का व्याख्यान करोगे ? गुलामाने शरफुद्दीन की आस्तीन में देख उन्होंने अपनी दृष्टि आस्तीन पर की

तो काबा दिखाई दिया। अचंभित हुए । मखदूमेजहां ने फरमाया तुम अपनी करामत पर घमंड कर रहे हो मगर करामत देने वाले की अनदेखी कर रहे ।

❊ **मोनाकिबुल** असफिया में एक जोगी के बारे में लिखा है कि जिस समय मखदूमेजहां राजगीर के जंगल में थे उसको पता चला कि इस जंगल में एक बुजुर्ग रहते हैं । उसे मिलने की इच्छा हुई तो जंगल में चला आया और मखदूमेजहां से भेंट की। शेख़ से पूछा ''हज़रत' मर्द-ए-कामिल' की क्या पहचान है? आपने कहा कि अगर वह इस जंगल से कहे कि सोना बन जाओ तो यह जंगल तुरन्त सोना बन जाये । आपके मुख से यह शब्द निकलते ही जंगल सोने का हो गया आपने जंगल की ओर इशारा किया और कहा कि अपनी पहली स्थिति में लौट जाओ तो वह फिर हरा हो गया ।

❊ **एक** बार सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तुग़लक़ को एक प्रकार के कुष्ठ रोग के लक्षण का आभास हुआ तो वह बड़ा चिंतित हुआ। राजकीय हकीम एवं वैद्य के अतितिक्त अन्य नामी-गिरामी हकीमों ने इलाज किया लेकिन कारगर नहीं हुआ तो चिन्ता और बढ़ी। ऐसे में सुल्तान को सुफ़ी-संतों से आशीर्वाद प्राप्त करके रोगमुक्त होने की उम्मीद जगी तो हज़रत शैख़ शरफुद्दीन यहया मनेरी का विचार आया। इसलिए बड़ी अक़ीदत और आदर के साथ सुल्तान फ़ीरोज़ शह तुग़लक़ बिहारशरीफ़ आया। हज़रत मख़दूम ने ख़ानक़ाह से निकल कर उस का स्वागत किया तो सुल्तान ने हज़रत मख़दूम का पवित्र हाथ पकड़कर आगे चलने को कहा लेकिन हज़रत मख़दूम ने

बादशाह को ही आगे किया और स्वयं पीछे चले। बादशाह जब ख़ानक़ाह में आकर बैठा तो हजरत मख़दूम ने लंगर ख़ाने के प्रभारी मौलाना मुज़फ़फर बल्ख़ी से कहा कि बादशाह अतिथि हैं, जो कुछ पका हुआ हो उसे लाकर सामने रखो। उस समय रोटी और कुछ पंछियों का मास पका हुआ था। मौलान बल्ख़ी ने स्वयं अपने होथों से बादशाह के आगे खाना परोसा। बादशाह ने जब पंछायों के मास को देखा तो मन में सोचने लगा कि जो मुझे हकीमों ने खाने से मना किया है वही यहां खाने को मिल रहा है। ऐसा लगता है कि यहां भी मेरे भाग्य में रोग से मुक्ति नहीं लिखी है।

मौलाना बल्ख़ी अपनी महानता से बादशाह के विचारों को समझ गए और आवेश में आकार भुने हुए पंछायों की ओर इशारा करके बोले ''बादशाह नहीं खाएगा तो क्यों पड़े हो, जाओ उड़ जाओ।'' यह कहना था कि भुने हुए पंछी उड़ गये। जब हज़रत मख़दूम को इस की सूचना मिली तो फिर रोटी और भुने हुए पंछी बादशाह के लिए मंगवाए जिसे बादशाह ने बड़े आदर और अक़ीदत के साथ खाया और रोगमुक्त होगया। लेकिन हज़रत मख़दूम ने भुने हुए पंछी को उड़ा कर चमत्कार दिखाने के लिए अपने प्रिय शिष्य मौलाना मुज़फफर बल्ख़ी पर बड़ा रोष व्यक्त किया ।

❊ **एक** जोगी जो बहुत सुन्दर थे और हृदय भी सुन्दर था, बिहार आये और मखदुमेजहां के कुछ मुरीदों से भेंट की । इन लोगों ने जोगी के सामने मखदूमेजहां के बारे में कहा और उनकी विशेषताएँ बताईं। उसने कहा मुझे भी अपने पीर के पास ले चलो । वह लोग उसे मखदूमेजहां के पास ले गये। जैस ही उसने मखदूमेजहां को देखा

पीछे हट गया । लोगों ने कारण पूछा तो उसने कहा "कर्त्ता रूप हो गये हैं" अर्थात उन्होंने स्वयं को सृष्टि के रचयता के अनुसार ढाल लिया है, उनके सामने जाने की हिम्मत नहीं। लोगों ने यह बात मखदूमेजहां को बताई तो आपने मुस्कुराते हुये फरमाया "उस से कहो कि आये, अपने अन्दर आने की शक्ति पायेगा। जब जोगी दूसरी बार आया तो उसे डर नहीं लगा। वह कुछ दिनों तक मखदूम साहब के पास रहा। एक दिन बोला मुझे इस्लाम के बारे मे बताइये, आपने उसे इस्लाम के बारे में बताया कुछ दिनों तक उसकी शिक्षा-दीक्षा की, उसके बाद उसे विदा कर दिया। लोगों ने पूछा कि इतना कम समय अपने पास रख कर उसे क्यों जाने दिया। मखदूमेजहां ने कहा कि वह तमाम काम कर चुका था। बस कुफ्र का रंग जंग बना हुआ था । कुछ दिन यहां रहने से वह जंग उतर गया, इस लिये उसे जाने की अनुमति दे दी ।

❊ **जब** आप बिहिया के जंगल में रह रहे थे तो एक व्यक्ति शेख चुलहाई से भेंट हुई । वह गाय चरा रहे थे । मखदूमेजहां को प्यास लगी। शैख चुलहाई के पास गये और कहा कि मुझे थोड़ा सा दूध अपनी गाय का गार कर दो । उन्होंने कहा कि इसने बच्चा नहीं दिया है । अभी तो यह बछिया है। आपने बहुत दबाव डाला कि दूह कर तो देखो। तब शेख ने गुस्सा में दूहना शुरू कर दिया। यह चमत्कार हुआ कि बर्तन दूध से भर गया । फिर तो शेख चुलहाई आपके पैरों पर गिर पड़े और सब कुछ छोड़ छाड़ कर आपकी सेवा में लग गये ।

❊ **यह** भी कहा जाता है कि अहमद बिहारी और अज़ काक्वी गरीब और दीवाना शकल थे। आलमे दिवानगी में ऐसी खुली खुली बातें करते कि जिसे सुनने की शक्ति सब में नहीं थी। इन दोनों बुजर्गों को हज़रत शेख़ शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी से विशेष लगाव था। आपकी सेवा में आते जाते थे और तौहीद से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर किया करते। यह दोनों मर्द कामिल सुलतान फिरोज़ शाह के समय में दिल्ली गये। दिल्ली के धर्म गुरुओं ने फिरोज शाह से कहा कि यह दोनों तौहीद में खुली खुली बातें बोलते हैं तथा ऐसी बातें बोलते हैं कि दोनों को मृत्यु दण्ड दिया जाना चाहिए। बादशाह ने दिल्ली के सभी बड़े आलिमों को बुलाया और उनकी सलाह पर दोनों को मृत्यु दण्ड दे दिया । जब दोनों की हत्या का समाचार मखदूमेजहां को मिला तो आपने कहा दिल्ली जैसा शहर जहां बड़े बड़े उलमा और मशायख़ हों, किसी से इतना भी नहीं हो सका कि दोनों को दीवनगी के बहाने बचा लेता । आपने फरमाया जिस शहर में ऐसे बुजुर्गों का खून बहे वह शहर कैसे आबाद रह सकता है। अल्लाह को भी यह बात बुरी लगी। कुछ ही दिनों बाद सुलतान फिरोज़ शाह के राज में अराजकता फैली, क़ानून व्यवस्था जैसी कोई चीज़ नहीं रही। बादशाह का पुत्र मंत्री से लड़ गया । बहुत से लोगों की हत्या हो गई। शहर में बर्बादी फैल गई । इस पूरी स्थिति के बारे में ''अलशर्फ'' के लेखक ने ''सीरतुल मुताख्खरीन'' में इस प्रकार लिखा ।

❊ ''**फिरोज़शाह** जब बूढ़े और कमजोर हो गये तो अपने बेटे नासिरूद्दीन को वली अहद बनाया और राज काज का भार उस पर डाल दिया और स्वयं संयास ले लिया। मोहम्मद शाह के कारण सरकार की

व्यवस्था में भंग पड़ा, पहले मंत्री के साथ झगड़ा हुआ, फिर राज्य के अमीरों पर हमला बोल दिया । सेना के अधिकारियों ने फ़िरोजशाह को पूरी स्थिति बताई और उनका नेतृत्व मांगा, फिरोज शाह सेना का नेतृत्व करते हुये चल पड़े । मोहम्मद शाह सामना नही कर पाया और भाग खड़ा हुआ । फिरोज शाह बेटे से बहुत गुस्सा थे। इस लिये अपने लाल शाह इब्न फतह खान को, जिन के पिता का देहान्त हो चुका था, अपने शासन का युवराज बना दिया। कुछ ही दिनों के बाद फिरोज़शाह बीमार पड़े और उनकी मृत्यु हो गई ।

एक शीतलहर वाली रात में जब मुसलाधार वर्षा हो रही थी तेज़ हवा चल रही थी तो मखदूमेजहां की माताश्री बीवी रज़िया अपने पुत्र की याद में दुखी बैठी थी और सोंच रही थीं। मेरा शर्फ (शरफुद्दीन यहिया मनेरी) किस हाल में होगा। उस पर क्या बीत रही होगी। थोड़ी देर के बाद देखा कि अचानक हज़रत मखदूम आंगन में खड़े हैं और कह रहे हैं अम्मा मैं हाज़िर हूँ। आवाज़ सुन कर वह आंगन में आईं। पुत्र को सीने से लगाया पर आप यह देख कर चकित रह गई कि इतनी तेज वर्षा में भी आप के शरीर पर वर्षा का कोई प्रभाव नहीं था। आपके कपड़े भी सूखे हुये थे। आपने फरमाया कि अम्मा देखिए अल्लाह किस तरह हमारी रक्षा करता है और आप मेरी चिन्ता करती हैं । आप मेरी चिन्ता न किया करें। अल्लाह मेरी रक्षा करता है। इसके बाद आप अदृश्य हो गये।

जन्मजात वली :

हज़रत शैख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी की महानता के लक्षण तो

उनके जन्म से पूर्व ही परिलक्षित होने लगे थे। फिर जब आपका जन्म हुआ तो आपने रमज़ान मास में व्रत की अवधि में स्तनपान कभी नहीं किया। आपके स्तनपान की अवधि में एक बार 29 रमज़ान को आकाश बादल भरा था, लोग सामान्य रूप से चाँद न देख सके। कारणवश चाँद दिखने के सम्बन्ध में मतभेद हुआ। प्रातः लोग हज़रत मख़्दूम के पिता के पास अपने मतभेद के निदान के लिए पहुँचे कि रोज़ा रखा जाए या नमाज़े ईद की तैयारी की जाए? उसी क्षण घर के भीतर से दाई यह समाचार लाई कि नवजात शिशु ने आज भी दूध नहीं पिया है। हज़रत मख़्दूम के पिताश्री ने लोगों से कहा कि आप लोग रोज़ा रखें और दाई से कहा कि बच्चे को मत छेड़ो वह रोज़े से है।'''

हज़रत मख़्दूम की दृष्टि से लोहा चूर-चूर :

एक बार स्वतंत्र प्रवृति का संत (कलन्दर) इस प्रकार हज़रत मख़्दूम की सेवा में पहुँचा कि उसका शरीर लोहे की जंज़ीरों और कवच से ढका हुआ था। उपस्थित लोगों ने आश्चर्य से पूछा कि:

> ''तुम यह लोहा अपने शरीर से क्यों नहीं उतारते?'' उसका उत्तर था- ''कोई है, जो इसे उतार दे?'' हज़रत मख़्दूम ध्यानमग्न हुए और स्वतः उसके शरीर से सारा लोहा चूर हो कर धरती पर गिरा और बिखर गया।''

जिन चमत्कारों और घटनाओं के बारे में अभी तक लिखा गया उस से यह अनुमान लगाना कठिन नहीं है कि मखदुमेजहां विलायत और अध्यात्म की किस बुलन्दी पर थे। मगर इन सब के बाद भी आप हमेशा इस से दूर रहते और इसे अच्छा नहीं समझते थे। जो कुछ भी चमत्कार हुये वह अनायास

ही हुये । हालांकि वह समय ऐसा था कि घर घर में बुजुर्गों के चमत्कारों की चर्चा थी और आम जन इसी को बुजुर्गी समझते थे ।

''हालांकि आप का काम अधिकतर खिरक़ आदत और चमत्कार पर था। पर आप चमत्कार दिखाने को अच्छा नहीं समझते थे। अनीक्षा दिखाते थे। यदि कोई व्यक्ति किसी कार्य या सहायता के लिये आता तो उसे मीरान जलाल दिवाना के पास भेज देते थे । (मोनाक़िबुल असफिया)

समाज सेवा :

मखदूमेजहां को अल्लाह ने दूसरों की सहायता और स्नेह का खज़ाना दिया था। आप के पास प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के सैकड़ों लोग आते थे । आप सब से खुशी खुशी और स्नेह के साथ मिलते। आप की मजलिस में हर धर्म और जाति के लोग होते। राजा भी रंक भी, अमीर भी गरीब भी, मर्द और औरत बच्चे, बूढ़े सभी होते । उन में ज्ञानी और अज्ञानी दोनों होते । मोह माया से जुड़े लोग भी और अध्यात्म से जुड़े लोग भी, स्वस्थ भी और बीमार भी । मखदूमेजहां के द्वार सभी के लिये सदा खुला रहता । आप सब से एक समान मिलते । सब से स्नेह रखते और सब की हर संभव सहायता करते । इस बात का पूरा ध्यान रखते कि किसी के साथ अन्याय न हो और जो ऐसा करते आप उन्हें पसन्द नहीं करते थे । आप इसे गुनाह समझते थे । सभी के हक़ और हित का ध्यान रखते चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, यहां तक की जानवरों का भी ध्यान रखते ! आप फरमाते थे हकूकुल इबाद (समाज का हक़) हूकूकुल्लाह (अल्लाह के हक़) से अधिक मुशकिल है। अल्लाह तो माफ़ी मांगने पर माफ़ कर देगा मगर समाज और बन्दों का हक़ अल्लाह तब तब माफ़ नहीं करेगा जब तक वह स्वयं माफ़ न करे ।

अपने सगे सम्बन्धियों का बहुत ख़्याल रखते थे। उनकी आवश्यकताओं

का ध्यान रखते । शेख मग़रबी के नाम अपने एक पत्र में आप लिखते हैं । ''मेरे ऊपर अपनी मां का अधिकार (हक) है इस लिये'' मैं भारत नहीं छोड़ सकता ऐसा नहीं होता तो मैं कब का भारत छोड़ चुका होता । आप के भाई और उन के बच्चे आप के यहां पले बढ़े अनको अपनी औलाद के समान पालापोसा और उनकी आवश्यकताओं को ध्यान रखा । आप बड़े दानी थे । आप अपना सभी सामान धन दौलत गरीब लोगों को दे देते थे । किसी को कभी भी झिड़कते नहीं थे । कोई कुछ मांगने आता तो उसे खाली हाथ जाने नहीं देते थे । आपके दान पुण्य का यह हाल था कि बादशाह फिरोज़ शाह ने आप को खर्च के लिये जो रुपये दिये वह आप ने उसी समय गरीबों को बांट दिये दूसरों के काम आने को आप बहुत बड़ी इबादत समझते थे इसी कारण दूसरों के दुख दर्द को आप अपना दुख दर्द समझते थे । उनके काम आते थे उनका दुख दर्द दूर करते, उनकी सहायता करते थे ।

आपकी इन विशेषताओं के बारे में सैय्यद जहीरूद्दीन अजीमाबादी लिखते है ''आप करुणा दिखाने में बहुत आगे थे, ऐसा लगता था आप इसी के लिये बने ही हों और करूणा आप के लिये । किसी को ज़रा चोट लगी और आपकी आंखें भर आईं, किसी पर बुरा समय आया और विचलित हुये, उधर किसी की आयु समाप्त हुई इधर आप का हाथ उसके लिये दुआ करने को उठा ।''

(सीरतुशर्फ - P 157/58)

आप पूरी तहर दुनिया त्याग कर अल्लाह की राह में लग गये थे परन्तु आम जन की समस्यायें सुनने और उनका समाधान ढुंढने से कभी नहीं भागते, बुजुर्गों की कथनी है कि मशायख़ को बादशाहों के पास बिना बुलाये नहीं जाना चाहिए, हां मगर तब जब आम जन का कोई काम रूका हुआ हो। इसी कारण मखदूमेजहां कभी कभी उन से मिल लेते या पत्राचार कर लेते थे और उन्हें उचित राह पर चलने और न्याय करने का उपदेश देते थे । एक बार

ख़्वाजा आबिद ज़फ़र आबादी का माल बर्बाद हो गया तो आपने बादशाह फिरोज़ बख़्त को एक पत्र लिखा ।

''अल्लाह का शुक्र है कि आज वह आदर व सम्मान वाला व्यक्तित्व जो बेचारों और दबे कुचलों का आसरा और सहारा है और न्याय उसके दरबार से फैल रहा है वह उस स्थान पर पहुँच गया जिसके बारे में पैगम्बर (स०) ने फर्माया कि एक क्षण का न्याय साठ वर्ष की इबादत से बढ़ कर है । (सीरतुशर्फ)

मखदूम जहां को सोनार गांव से शैक्षणिक और अध्यात्मिक लगाव था क्यों कि आप ने वहां से अपनी शिक्षा पूरी की थी । इसी कारण आप वहां की स्थिति से परिचित थे और उस में रूचि भी लेते । मौलाना मुजफ़्फर बल्खी ने एक पत्र जो उन्होंने शाह बंगाल ग्यासुद्दीन को लिखा था उसमें लिखते हैं : (स्वयं वह)

> ''शेख शरफुद्दीन कूदस सरा, अलअज़ीज़
> को बन्दा (स्वयं वह) हर समय इस देश
> में जन सेवा और दूसरों पर दया और
> स्नेह बरसाते हुये देखता था और (वास्तव)
> में खोदावंद ताला की इस भूमि पर और
> इस देश पर कृपा थी कि शेख शरफुद्दीन
> जो लश्कर एलाही (इश्वर की सेना) थे
> इस भूखण्ड पर आबाद रखा'' (सीरतशर्फ)

मखदूम किसी से अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये नहीं मिलते । यह सब वह दूसरों के लिये और जन सेवा के लिये करते हैं । आपका तो यह

हाल था कि पूरा जीवन फ़कीरी में बिताया । मोनाकि़बुल असफिया में है कि एक बार समय के बड़े मशायख ने अपनी अपनी आशाओं और अकांछाओं के बारे में बताया, जब आपकी बारी आई तो आप ने फरमाया कि मेरी आरज़ू यह है कि मेरा नाम न इस दुनिया में रहे न उस दुनिया में। वह हमेशा दूसरों का ख्याल रखते, उनकी कमियां छुपाते। एक बार एक व्यक्ति इमामत के लिये (नमाज़ पढ़ाने) के लिये आगे आ गया । लोगों ने कहा कि वह शराब पीता है। आपने फरमाया कभी कभी पीता होगा । लोगों ने कहा हज़रत वह हर समय पीता है। तो आप ने फरमाया कि रमज़ान में नहीं पीता होगा । इसी प्रेम, स्नेह, सहायता और दरिया दिली के कारण पूरी दुनिया के दिल पर राज करते थे और सभी उन पर जान भी न्योछावर करने को तैयार रहते थे । लोगों ने उनको हाथों हाथ लिया और आज भी जब कि सैकड़ों वर्ष बीत गये तब भी इन बुजुर्गों की रहमत और ज्ञान का प्रकाश जारी है । लोगों के दिलों में उनका असीम प्रेम और स्नेह मौजूद है ।

मख़दूम की वह नगरी अल्लाह रे क्या कहना
झुकती जहाँ जबीं है बिहार-शरीफ में

हज़रत मखदुम शरफुद्दीन के जीवन के अन्तिम दिन और मृत्यु

हज़रत मखदूमेजहां शेख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी की आयु हिजरी कैलेण्डर के अनुसार 121 वर्ष और ईसवी कैलेण्डर के अनुसार 118 वर्ष की हुई। नेकी, ज्ञान, स्नेह, प्रेम, करुणा और कृपा से भरे मखदूमेजहां का स्वर्गवास 6 शव्वालुल मुकर्रम, 782 हिजरी अर्थात 2 जनवरी, 1381ई० को वृहस्पतिवार की रात में हुआ । उनके खलीफ़ा और स्वर्गवास के समय उनके पास उपस्थित शेख ज़ैनबदर अरबी ने बहुत ही प्रभाव पूर्ण रूप से उनके देहान्त के बारे में लिखा है जिसे पढ़ने के बाद मखदूमेजहां के जीवन के अन्तिम क्षण आंख के सामने घूमने लगते हैं । उसका सार पेश हैं ।

5 शव्वाल 782 हिजरी बुधवार के दिन हज़रत मखदुमेजहां ने नेमाज़ फ़जर (सुबह) के बाद अपने नये हुजरा में गद्दी पर टेक लगाकर बैठे थे आप के भाई और खादिम ख़ास (विशेष सेवक) जलीलउद्दीन और कुछ मित्र, सम्बन्धी और खादिम जो कई रात से जाग रहे थे, सेवा में उपस्थित थे आपके मुख से ''लाहौल विला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अज़ीम'' निकला और आप ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुये कहा कि आप लोग भी यही पढ़ें। सब लोग पढ़ने लगे । तब आप ने मुस्कुराते हुये फरमाया । सुभान अल्लाह वह शैतान इस समय भी तौहीद में कमजोरी पैदा करना चाहता है । अल्लाह की कृपा और आसरा से इसका क्या कारण हो सकता है ? फिर आपने पढ़ा

''लाहौल विला कुव्वत इल्लाबिल्लाहिल अज़ीम'' और उपस्थित लोगों से कहा कि आप सब पढ़ें । फिर दुआ और वज़ीफा में लग गये चाश्त के बाद दुआ और वजाइफ समाप्त हुये, कुछ देर अल्लाह ताला का गुणगान करके ऊँची आवाज में ''अलहम्दुलिल्लाह'' पढ़ना शुरू कर दिया और कहते जाते कि अल्लाहताआला ने विशेष कृपा की, बार एक तेज के साथ यही पढ़ते और बोलते रहे । ''अल्हमदु लिल्लाह, अल मन्नतुल्लाह'' थोड़ी देर के बाद हुजरा से निकल कर आंगन में आये और तकिया का सहारा लिया, थोड़ी देर बाद हाथ ऐसा बढ़ाया जैसे किसी से हाथ मिला रहे हों , आप ने काज़ी शम्सुद्दीन का हाथ हाथ में लिया, थोड़ी देर पकड़े रहे फिर छोड़ दिया , खादिमों को विदा करने का काम उन्हीं से शुरू हुआ । फिर काज़ी जाहिद का हाथ पकड़कर अपने सीने पर रखा फिर फरमाया, जाहिद ! हम वही हैं, हम वही हैं, फिर फरमाया, हम दीवाने हैं, हम दीवाने हैं, फिर कहने लगे नहीं हम दीवानों की जूतियों की खाक (मिट्टी) हैं । फिर वहां उपस्थित सभी लोगों के हाथ और दाढ़ी को चूमा और अल्लाह ताला की रहमत और फ़जल से हमेशा आशा रखने पर जोर देते हुये ज़ोर से पढ़ा ''ला तक़नतू आमन रहमतिल्लाह इनल्लाह यग़फरूल ज़नूबे जमीआ ''और यह शेर पढ़ने लगे ।

रहमते खोदा दरिया ए आम अस्त
अंजा अज़ कतरा ए बरमा तमाम अस्त

फिर उपस्थित जन से फरमया ''कल तुम से प्रश्न करें तो कहना'' लातक़नतू मिन रहमतिल्लाह लाये हैं और यदि मुझे पूछेंगे तो मैं भी यही कहूंगा । उसके बाद कलमा शहादत ज़ोर से पढ़ना शुरू कर दिया ....

(मैं अल्लाह को रब मानता हूँ, इस्लाम को दीन, मोहम्मद सल्लाहो वसल्लम को नबी, कुरआन को अपना पेशवा, काबा को क़िब्ला, इमान वाले को अपना भाई जन्नत को अल्लाह का इनाम और दोज़ख को अल्लाह का

अज़ाब (कड़ी सज़ा) मानता हूँ और इस पर सन्तुष्ट हूँ)

इसके बाद मौलाना तक़ीउद्दीन अवधी की ओर हाथ बढ़ाया और कहा अंजामबख़ैर हो (अन्त भलाहो) फिर मौलाना आमून को पुकारा वह हुजरा के अन्दर थे वह दौड़ते हुए आये आप उनका हाथ पकड़ कर अपने चेहरा मुबारक पर रगड़ने लगे और कहा तुम ने मेरी बड़ी सेवा की, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा निश्चित रहो । हम सब एक ही स्थान पर रहेंगे, अगर कयामत के दिन तुम से पूछा जाय, कि तुम क्या लाये तो कहना'' लातक़नतू मिन रहमतिल्लाह .... मुझ से पूछेंगे तो मैं भी यही कहूंगा । उपस्थित लोगों से कह दो कि निश्चित रहें मैं किसी को नहीं छोड़ूंगा । इसी प्रकार एक एक व्यक्ति आते और कदम बोस होते ।

इसी बीच मौलाना शहाबुद्दीन नागोरी आये, आपने कई बार उनकी दाढ़ी, सर, चेहरा और पगड़ी को चूमा आप आह आह किये जाते थे । अल्हमदुलिल्लाह पढ़ते जाते फिर फरमाया तुमने मेरी बड़ी सेवा की, आप मुझसे बहुत करीब थे अन्त भला हो मौलाना शहाब्बुदीन ने मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्खी और मौलाना नसीरूद्दीन जौनपुर का नाम लिया और पूछा कि उन दोनों के बारे में आप क्या फरमाते हैं ? आप बहुत खुश हुये और अपनी उंगली को सीने की ओर लेजाकर कहा मुजफ्फर मेरी जान है, मुझे प्यारा है और मौलाना नसीरूद्दीन वैसे ही हैं, खिलाफत और अध्यात्म की विशेषतायें दोनों में हैं । इस बीच क़ाजी मीना उपस्थित हुए, मियां बिलाल ने बताया कि यह क़ाजी मीना हैं अपने उनका हाथ चूम कर कहा तुम खुदा की रहमत हो इमान के साथ दुनिया में रहो और इमान के साथ दुनिया से विदा हो । मौलाना इब्राहीम आये आपने अपना दाहिना हाथ उनकी दाढ़ी पर फेरा और कहा तुम ने मेरी अच्छी सेवा की बड़ा साथ दिया है आदर के साथ रहोगे । इसके बाद क़ाज़ी शम्सुद्दीन के भाई क़ाज़ी नुरूद्दीन उपस्थित हुये । आपने उनका हाथ

अपने हाथ में लिया और चूम कर बोले तुम हमारे साथ रहे, बहुत सेवा भी की, अल्लाह ने चाहा तो कल एक साथ रहेंगे । इसके बाद मौलाना निज़ामुद्दीन आये आपने फ़रमाया गरीब अपना घर बार छोड़ कर मेरे पास आया था । यह कह कर अपनी कुलाह मुबारक (टोपी) सर से उतार कर उन्हें दे दी और हमेशा चैन से रहने की दुआ दी। फिर सभी उपस्थित लोगों से कहा कि जाओ अपने दीन और इमान की चिन्ता करो और सत्य की सेवा में लगे रहो । इसके बाद ज़ैन बदर अरबी के दस्त मुबारक को चूमा अपनी आंख, सर और बदन पर फेरा, आपने पूछा कौन है कहा आप के आस्ताना का फ़कीर ज़ैनबदर आप की कृपा चाहता हूं । फिर से बैत स्वीकार कीजिये। आपने फरमाया जाओ मैं ने तुम्हें भी क़बूल किया और तुम्हारे परिवार वालों को भी, निश्चिंत रहो। मैं तुम में से किसी को नहीं छोड़ूंगा बदर ने कहा क्या मखदूम के गुलामों की भी आबरू रहेगी ? आप ने फरमाया, आशायें तो बहुत हैं । इस बीच क़ाजी शम्सुद्दीन आये और हज़रत मखदूम के पास बैठ गये, मौलाना शहाबुद्दीन, हेलाल और अक़ीक ने पूछा, मौलाना शमसुद्दीन के बारे में क्या विचार है? आपने कहा काज़ी शमसुद्दीन को क्या कहूँ? यह मेरा बच्चा है, कई जगह इसे अपना बेटा लिख चुका हूँ । कहीं कहीं भाई भी लिखा है इन को इल्मी दरवेशी को व्यक्त करने की अनुमति मिल चुकी है । इन्हीं के कारण इतना लिखा और कह पाया हूँ नहीं तो कौन लिखता ? इसके बाद हज़रत के भाई और ख़ादिम खास शेख जलीलुद्दीन जो आपके पास ही बैठे हुये थे ने आप का हाथ पकड़ लिया । आपने फरमाया मत घबराओ तुमको उलेमा और दरवेश छोड़ेगें नहीं एक निज़ामुद्दीन खाजा मलिक आयेगा । उसको मेरा सलाम और दुआ पहुंचा देना, न मिल पाने के क्षमा चाहना और कहना कि मैं उस से राज़ी जा रहा हूँ । तुम भी उस से राज़ी रहना । इसके बाद काज़ी खानख़लील उपस्थित हुये, आपने कहा काज़ी हमारा पुराना मित्र है ।

अल्लाह इसका भला करे फिर ख्वाजा मोईजुद्दीन आये, आपने कहा अन्त भला तो इसी बीच फ़तूह बावर्ची रोता हुआ आया और आपके पैरों पर गिर पड़ा आप ने फरमाया बेचारा फ़तूह जैसा भी था मेरा ही था आपने उसके लिये भी भली बातें कहीं ।

इसी दौरान काज़ीये आलम मुफती निज़ामुद्दीन के भाई जो विशिष्ट मुरीदों में थे, आये हुस्सामुद्दीन के भाई शहाबुद्दीन अपने लड़के के साथ आये आप की नज़र जब उस लड़के पर पड़ी तो आपने फरमाया पांच आयतें पढ़ो, हाज़रीन ने कहा हजूर अभी यह बच्चा है । सैय्यद ज़हीरूद्दीन मुफती का लड़का भी उपस्थित था । मियां हिलाल ने उस लड़के को बुलाया और कहा कि पांच आयतें पढ़ो । लड़का सामने आया और अदब से बैठ गया और सूरह फ़तह की आखरी रूकू की आयतें ''मोहम्मद रसूलल्लाह वल्लज़ीना'' पढ़नी शुरू कर दी । आप तकिया का सहारा लेकर आराम कर रहे थे । उठ बैठे और दो जानू होकर बैठ गये । लड़का जब अलकुफ्फार'' पर पहुंचा तो घबरा गया और उसके आगे नहीं पढ़ सका, आप ने आगे पढ़ने के लिये कहा । जब उसकी किरात खत्म हो गई तो आपने फ़रमाया अच्छा पढ़ता है । उसके बाद आप ने कपड़ा अपने जिस्म से उतारना चाहा और वज़ू के लिये पानी और मिस्वाक मांगा । आस्तीन समेटी और ऊंची आवाज़ से पढ़ना शुरू किया ''बिस्मिल्लाह'' वज़ू करना शुरू किया, सभी दुआयें पढ़ते गये, केहुनियों तक हाथ धोया और मुंह धोना भूल गये । शैख फरीद्दीन ने याद दिलाया कि मुंह धोना बाकी रह गया है आपने फिर वज़ू करना शुरू किया । वज़ू के बाद कंघी मांगा और दाढ़ी में कंघी करके मुसल्ला मंगवाया और नमाज पढ़नी शुरू किया दो रिकात नमाज पढ़ी । थकावट बहुत थी इस लिये कुछ देर आराम किया । हुजरा में गये और शेर की खाल पर लेट गये मियां मुनव्वर ने बैत का अनुरोध किया तो आपने उनसे बैत लिया, आपने उन्हें टोपी दी और कहा

कि जाओ नमाज पढ़ लो यह अन्तिम बैत थी जो आपने कराई ।

मग़रिब की नमाज़ के बाद शेख जलीलुद्दीन, काज़ी शमसुद्दीन, मौलाना शहाबुद्दीन, काज़ी नुरूद्दीन, हेलाल और अक़ीक के अतिरिक्त दूसरे मित्र और सेवक आप के पास बैठ गये आप ने बिस्मिल्लाह पढ़ा और फिर ''लाइलाहा इल्ला अन्ता सुबाहानक इन्नी कुन्तो मिनज़्ज़ालेमीन'' ज़ोर से पढ़ा और फिर बार बार बिस्मिल्ला'' ज़ोर से पढ़ने लगे । फिर कभी लाहौलविला कू़व्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीइल अज़ीम और कलमा तौहीद ''लाइलाहा इल्लल्लाह'' पढ़ते इसके बाद बहुत ही हृदय विदारक आवाज़ में दरूद पढ़ी और फिर यह आयत ''रब्बना अन्ज़लअलैना माएदत मिनस्समाये आखिर तक पढ़ी और यह दुआ की ''रज़ैतो बिल्लाह रब्बी व बिलइस्लामे दीनान व बेमोहम्मद नबीया। पढ़ी और फिर तीन बार कलमा तैय्बा पढ़ा, हाथ बुलन्द किया और कहा

अल्लाहुम्मा अस्लह ....
बेरहमतेका या अरहमर्राहेमीन तक पहुंचते पहुचते आवाज़ बन्द हो गई । उस समय जुबान पर यह शब्द थे ''ला खौफ अलैहिम वलाहुम यहज़नून लाइलाहा इल्लल्लाह'' इस के बाद एक बार बिस्मिल्लाह कही और शरीर से आत्मा निकल गई यह 6 शव्वाल 782 हिजरी जुमरात (वृहस्पतिवार) की रात और इशा का समय था । दूसरे दिन चाश्त के समय (तीसरे पहर) आप की मिट्टी मंजिल हुई ।

नमाज़े जनाज़ा और तदफीन (दफन होना) :

हज़रत मखदूम जहां की नमाज़ जनाज़ा हज़रत शेख अशरफ जहांगीर समनानी ने पढ़ाई ''लता एफ अशरफी'' में लिखा है कि हज़रत मखूदमेजहां की वसीयत के अनुसार हज़रत शेख अशरफ जहांगीर (रह०) ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई ! इसमें विस्तार से लिखा गया है । इस से पता चलता है कि लोगों ने जनाज़ा पढ़ाने हेतू तैयार करके रख दिया और नमाज़ पढ़ाने वाले की प्रतीक्षा होने लगी कि शेख अशरफ जहांगीर उसी समय दिल्ली से बिहारशरीफ पहुंचे। जब सब लोग नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने के लिये प्रतीक्षा कर रहे थे । आपने नमाज़ पढ़ाई और जनाज़ा कब्र में उतारा ''अलशर्फ'' के लेखक डा० मो० तैय्यब अब्दाली के अनुसार हज़रत मखदूमेजहां की नमाज़ जनाज़ा के मामले में हैरत भरी घटनायें पेश आई और सभी इतिहासकारों ने इस मामले में धोखा खाया, हज़रत मखदूमेजहां के मुरीदीन और खोल्फा इस मामले में चुप हैं हां मगर ''लताएफे अशरफी मल्फूज़ हज़रत मखदूम अशरफ जहांगीर समनानी में लिखा है कि जनाज़े की नमाज़ हज़रत मखदूमेजहां की वसीयत के अनुसार हज़रत मखदूम अशरफ जहांगीर समनानी ने पढ़ाई ।'' (अलशर्फ - P-71)

आपको बड़ी दरगाह, बिहार शरीफ में दफन किया गया, पक्की कबर है उस पर सुन्दर गुम्बद है । जिस परिसर में आपकी कबर है उसमें आप की माताश्री बीबी रज़िया का मज़ार मुबारक है। आप के बायीं ओर आप के भाई मखदूम खलीलुद्दीन और हज़रत ज़ैन बदर अरबी और दूसरे महत्वपूर्ण लोगों की क़बरें हैं ''सीरतुशर्फ'' में है कि सूरियों के शासन काल में इन क़बरों के आस पास मकान, मस्जिद, हौज और फव्वारे बना दिये गये थे, सुन्नत के अनुसार क़बरों को उनकी वास्तविक स्थिति में छोड़ दिया गया । पूरे देश से ज़ायरीन(तीर्थ यात्री) और श्रद्धालू यहां आते हैं और फैज़ पाते हैं।

हज़रत मख़दूम शैख ज़कीउद्दीन (रह०)

हज़रत मख़दूमे जहाँ को दो सुपुत्रियां और एक ही पुत्र थे। पुत्र का नाम शैख ज़कीउद्दीन था । उनका जन्म बांग्लादेश के सुनारगांव में अपने नाना अल्लामा अबु तवामा के घर हुआ जब आपके पिताश्री शैख शरफउद्दीन यहया मनेरी शिक्षा से सम्पन्न हुए और अपने पूज्य पिता शैख कमालउद्दीन के निधन का हाल पढ़ा तो मनेरशरीफ आ गए। उस समय शैख जकीउद्दीन किशोरवस्था में थे । यह भी अपने पिताश्री के साथ 490 हि० में मनेर शरीफ आये। आपका जन्म कब हुआ इसका उल्लेख इतिहास के पुस्तकों में नहीं मिलता है। शिक्षा-दिक्षा दादी माँ (बीबी रजियां) के संरक्षण और देख-रेख में हुई चूँकि आपके पिताश्री मनेर आने के बाद आपको अपनी मां के हाभले कर ईश्वर की तलाश में निकल गए थे । उसी क्रम में आपके छोटे चचा हज़रत हबीउद्दीन का संरक्षण आपको प्राप्त हुआ । शिक्षा ग्रहण के पश्चात् आप भी ईश्वर भक्ति में लग गये और सत्यवादी होकर घर से निकल पड़े। यात्रा के क्रम में एक संत से मुलाकता हुई। इनके सत्यवादी और निष्ठावान चरित्र से वे प्रभावित होकर उनके मुरिद हो गये । फिर शहर कोढ़ा कला कूच कर गये यहां के रज़ा सैयद हसन आपके आचरण और व्यवहार से प्रभावित एवं मुग्ध हुये और अपनी सुपुत्री से आपका निकाह कर दिया ।

शकरडीह, सेवढ़ी जिला बीरभूम में श्रण लिया । युवावस्था में ही आपका निधन हो गया । आपसे एक पुत्री हुई जिनका नाम बीवी बारका था

। आपके निधन के बाद इस बच्ची को अपने दादा हज़रत मख़दूम शरफुद्दीन यहया मनेरी के पास लाया गया, दादा एवं परदादी की देख-रेख में इनका लालन-पालन सुचारू, रूप से चलता रहा। बीबी बारका का निकाह हज़रत वहीद उद्दीन चिल्लाकश ख़्वाहरज़ादा हज़रत नजीबउद्दीन फ़िरदौसी से हुआ। हज़तर शैख ज़कीउद्दीन और इनकी धर्मपत्नि का मज़ार पश्चिम बंगाल के ग्राम शकरडी, वीरभूम मख़दूम नगर में अवस्थित है।
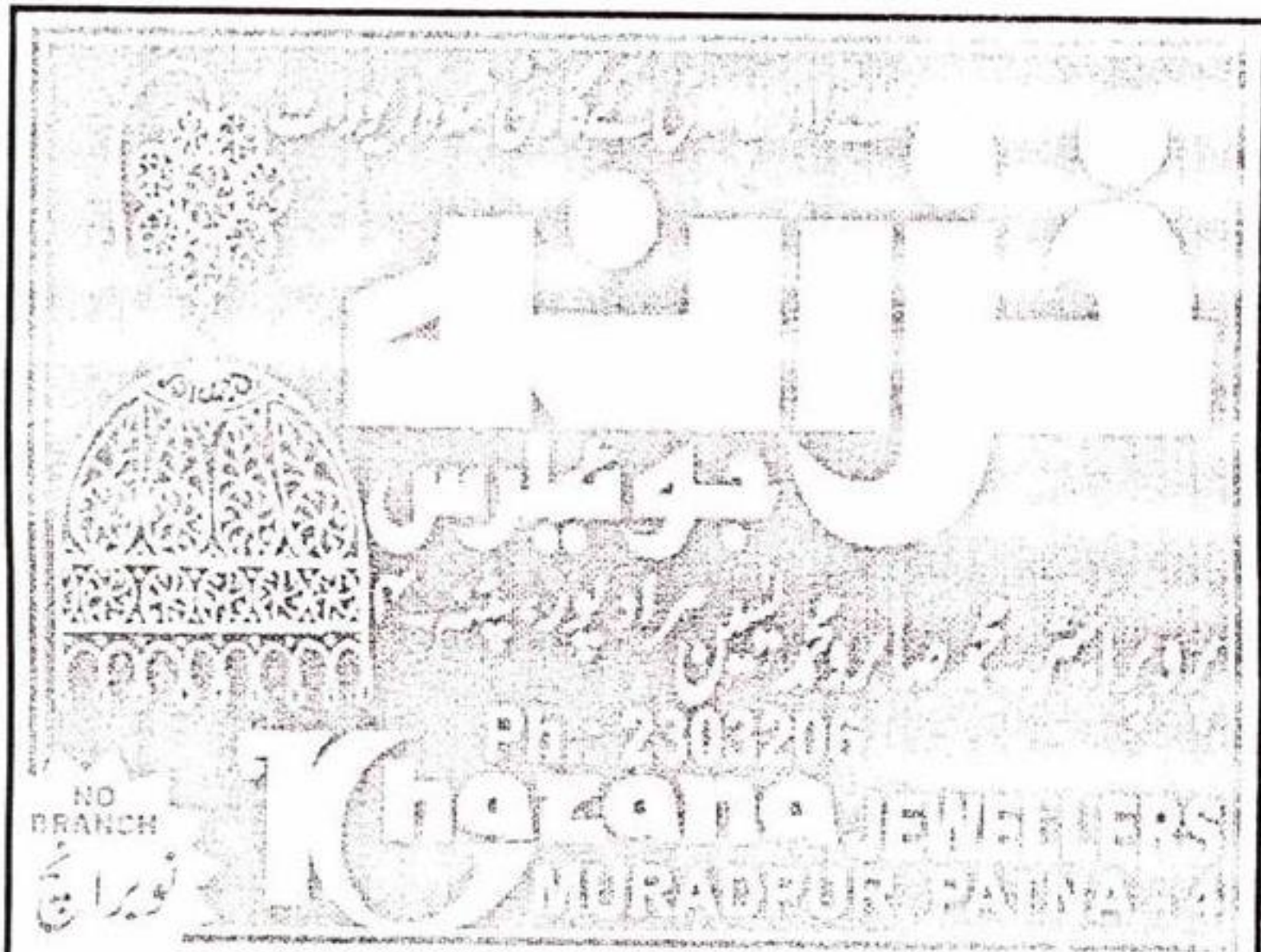
हज़रत मखदूम शरफुद्दीन के

प्रमुख ख़लीफ़ा और मुरीद

ऐसे तो हज़रत मखदूमेजहां के मुरीदों की संख्या बहुत है, कुछ ने तो यहां तक लिखा है कि हज़रत मखदूमेजहां के खलीफा और मुरीदों की संख्या एक लाख से अधिक है, । संभव है कि इस में कुछ अतिशयोक्ति हो परन्तु उनकी संख्या बहुत थी । हज़रत के महत्वपूर्ण खलीफ़ा और मुरीदों के नाम इस प्रकार हैं ।

हजरत मौलाना मोजफ्फर बल्खी (रह०), हजरत मखदूम शाह शुऐब (रह०) हजरत हुसैन मोइज़ बल्खी, उर्फ नौशा तौहीद (रह०), हजरत नसीरूद्दीन जौनपुरी (रह०), हजरत शेख सुलेमान (रह०), हजरत इमाम ताजद्दीन (रह०), हजरत मौलाना अबुलहसन (रह०), हजरत काज़ी मिन्हाजुद्दीन (रह०), हजरत काज़ी शरफुद्दीन (रह०),हजरत शेख खलीलुद्दीन (रह०), हजरत काज़ी सदरूद्दीन (रह०), हजरत मौलाना रकीउद्दीन (रह०), हजरत मौलाना ज़ैनबदर अरबी (रह०), हजरत शेख मोइजुद्दीन (रह०), हजरत मौलाना तक़ीउद्दीन अवधी (रह०), हजरत मौलाना करीमुद्दीन (रह०), हजरत खाजा हाफिज़ जलालुद्दीन (रह०), हजरत खाजा हमीदद्दीन सौदागर (रह०), हजरत मौलाना अहमद आमोन (रह०), हजरत हाजी रूकनुद्दीन (रह०), हजरत मौलाना वहीदुद्दीन (शेख नजीबुद्दीन फिरदौसी की बहन के बेटा), हजरत सैय्यद जलालुद्दीन (शेख नजीबुद्दीन फिरदौसी की बहन के बेटा),

हजरत काज़ी बदरूद्दीन ज़फ़र आबादीश, हजरत मौलाना हुस्सामुद्दीन (रह०), हजरत मौलाना लुत्फुद्दीन (रह०), हजरत शेख ज़की उद्दीन (रह०), हजरत मौलाना जैनुउद्दीन (रह०), हजरत मौलाना निज़ामुद्दीन (रह०) (मखदूम जहां की बहन के बेटे) ।

इनमें मौलाना मुज़फ्फ़र बल्खी को आप ने खिलाफत खास दी और अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया । मौलाना मोज़फ्फर बल्खी की सज्जादा नशीनी की घटना को ''मोनाकिबुल असफिया'' में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि जब हज़रत मखदूमेजहां का स्वर्गवास हुआ तो उस समय मौलाना मोज़फ्फर बल्खी उपस्थित नहीं थे । उस समय वे सउदी अरब के नगर अदन में थे। जब आप बिहारशरीफ पहुंचे तो खानकाह में कुछ मुरीदों ने कुलाह (टोपी) देना शुरू कर दिया था । एक बार जब सभी मुरीद उपस्थित थे तो आप ने पूछा कि आप लोग किस आधार पर कुलाह देते हैं । मौलाना शहाबुद्दीन मानिकपूरी ने कहा मेरे पास हज़रत की टोपियां हैं उपस्थित लोगों ने कहा इसकी कोई असल नहीं, कुछने कहा हज़रत मखदूम ने मुझे गिलाफ़ दिया था उसी से कुलाह देता हूँ । फिर लोगों ने आपसे पूछा कि आप के पास क्या दलील है ? आपने मियां हुसैन से फरमाया कि जाओं घर में हज़रत मखदूम का लिखा हुआ खास अनुमति पत्र है उस को लेकर आओं, मियां हुसैन थोड़ी दूर गये थे कि आपने फरमाया ''पीरम मुर्दा नीस्त'' मेरा पीर मुर्दा नहीं है। चलों हम सब हज़रत मखदूम से अर्ज़ करें वह जिसके बारे में आदेश करें वही खलीफ़ा और उत्तराधिकारी होगा। क़ाजी मखदूम आलम ने कहा कि क्या आप लोग फितना पैदा करना चाहते हैं । मैं जानता हूँ कि जब हज़रत मखदूम जहां से अर्ज (अनुरोध) किया जायेगा तो उत्तर इन्हीं के बारे में मिलेगा । यह सून कर सब चुप हो गये और मौलाना मोज़फ्फर बल्ख़ी सज्जादा नशीं हुए ।

हज़रत शैख शरफुद्दीन मनेरी के उत्तराधिकारीगण

मखदूमुल मुल्क हज़रत शैख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी के परदा फरमाने के वक्त मौलाना मुज़फ्फर बल्ख़ी अदन (अरब की एक प्रसिद्ध बन्दरगाह) में थे। अपने धर्मगुरू की मृत्यु के बाद बिहार पहुँचे और हज़रत मख़दूम के पहले सज्जादानशीन उत्तराधिकारी हुए ।

1

मौलाना मुज़फ्फर बल्खी

(782-803 हि०/1380-1401 ई०)

मौलाना मुज़फ्फर बल्खी मखदूमुल मुल्क हज़रत शैख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी के पहले उत्तराधिकारी हुए और 21 वर्षों तक इस पद पर आसीन रहकर हज़रत मख़दूम के शिक्षा-दिक्षा को लोगों तक पहुँचाते रहे । इनका पैतृक देश बल्ख़ था, जो कि अविभाजित सोवियत रूप का एक थाग था। आपके पिता शैख़ शमसुद्दीन बल्ख़ी अपने देश के राजपरिवार से सम्बन्धित थे और यहाँ किसी सम्मानित पद पर आसीन रह कर सच्चे गुरू की खोज में व्यस्त थे। बिहार के महान सूफ़ी संतों की शुभ चर्चा सुनकर बिहारशरीफ़ पधारे और हज़रत मख़दूम चिरमपोश के मुरीद हो कर यहीं के हो रहे । आपके बाद आपका परिवार भी बिहार शरीफ़ आ गया । अपने

परिवार के साथ मौलाना मुज़फ्फर बल्ख़ी भी बिहारशरीफ़ आए तब आप एक तेजस्वी छात्र थे और आपके अन्दर असामान्य मेधा छिपी हुई थी। प्रकृति में वाद-विवाद करने और बिना प्रमाण और दलील के किसी बात को न मानने की विशिष्टता थी। इसीलिए ऐसे ज्ञानी गुरू की खोज थी जो इस कसौटी पर खरा उतरे। अपने पिता के गुरू मख़दूम चिरमपोश के पास मन नहीं लगा तो हज़रत मख़दूमुल मुल्क की सेवा में पहुँचे और कुछ ज्ञान, विज्ञान की उलझी गुत्थियाँ उनके समक्ष रखीं। हज़रत मख़दूम ने बड़े ध्यान से उनके प्रश्नों को सुना और उत्तर देना प्रारंभ किया। मौलाना मुज़फ्फर हर उत्तर को यह कहकर काटते गए कि मैं इसे स्वीकार नहीं करता हूँ परन्तु हज़रत मख़दूम ने बड़े धैर्य के साथ उत्तर देते गए यहाँ तक कि आप हज़रत मख़दूम से प्रभावित होकर मन्त्रमुग्ध हो गए और वाद-विवाद छोड़ अपने शिष्यों में सम्मिलित कर लेने की विनति करने लगे। हज़रत मख़दूम ने जिनकी दिव्यदृष्टि आपके भविष्य को भलीभाँति देख रही थी मुस्कुराकर आपको मुरीद कर लिया और फ़रमाया: मुज़फ्फर बल्ख़ी मुझसे है और मैं बल्ख़ी से हूँ। 803 हिजरी में रमज़ान के महीने में आप का निधन अदन में हुआ। आप का मज़ार अदन में अवस्थित है।

2

मख़दूम हुसैन बिन मुइज़ नौशाए तौहीद बल्ख़ी

(803-8848 हि०/1401-1421 ई०)

मख़दूम हुसैन बिन मुइज़ नौशाए तौहीद बल्ख़ी के सगे भतीजे, प्रिय शिष्य और ख़लीफ़ा हज़रत शैख़ मुइजुद्दीन बल्ख़ी के पुत्र तथा हज़रत शम्स बल्ख़ी के पौत्र थे।

इनका जन्म ज़फ़राबाद (जौनपुर से पूर्व में 4 मील की दूसरी पर स्थित एक ऐतिहासिक नगर) में हुआ । हज़रत मख़दूम ने आपके जन्म की

सूचना मिलने से पूर्व ही हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र बल्ख़ी को इसकी सूचना दी और अपनी ओर से शुभकामना व्यक्त की तो मौलाना को बड़ा आश्चर्य हुआ। परन्तु जब मौलाना मुइज़ की चिठ्ठी मिली तो इस पूर्व सूचना की पुष्टि हो गई।

हज़रत मख़दूम ने आपके लिए अपना एक पवित्र परिधान इसलिए प्रदान किया कि इससे नवजात शिशु का वस्त्र बनाया जाए तथा अपने एक रूमाल से नवजात शिशु के लिए एक टोपी भी सिलवा कर भेजी जो छठ्ठी के दिन मख़दूम हुसैन के सिर पर सुशोभित हुई। इस पवित्र टोपी में आश्चर्यजनक विशेषता यह थी कि हज़रत मख़दूम हुसैन ने इसे जीवन भर पहना जब सिर से उतारते छोटी प्रतीत होती और जब पहनते तो सही होती । जब मख़दूम हुसैन की मृत्यु हुई तो आपके सम्बन्धित और शिष्यों ने कहा कि इस पवित्र टोपी को आपकी छाती पर रख दिया जाए या उसे जीवन की भाँति ही पहना दिया जाए। हज़रत मख़दूम हुसैन के एक प्रिय शिष्य हज़रत सैयद मीर कोतवाल ने अपने हाथ से वह टोपी आपके सिर पर पहनाई तो उस समय भी वह ठीक आई।

एक बार हज़रत मख़दूम जहाँ को मौलाना मुज़फ़्फ़र वज़ू करा रहे थे और हज़रत मख़दूम ने अपनी पवित्र पगड़ी को उतार कर नमाज़ पढ़ने के स्थान पर रखा हुआ था। मख़दूम हुसैन बच्चे थे, खेलते हुए आए और पवित्र पगड़ी अपने सिर पर रख नमाज़ के स्थान पर नमाज़ पढ़ने की भंगिमा में खड़े हो गए। जब मौलाना मुज़फ़्फ़र ने देखा तो उन्होंने आपको ऐसा खिलवाड़ से रोकने और मना करने का प्रयास किया तो हज़रत मख़दूम ने उन्हें देख कर फरमाया कि मौलाना मुज़फ़्फ़र क्यों रोकते हो, वह अपने स्थान को पहचानता है। इस प्रकार हज़रत मख़दूम ने आपके बचपन में ही आपके अपने उत्तराधि कारी होने की भविष्यवाणी कर दी थी।

एक दिन हज़रत मख़दूम ने फरमाया : ''मौलाना मुज़फ़्फर हम और तुम परिश्रम करते हैं लेकिन इसका पारिश्रमिक श्रेय हुसैन को प्राप्त होगा ।'' दूसरी बार हज़रत मख़दूम ने फरमाया: ''मैंने तनूर (तन्दूर) को गर्म किया और मुज़फ़्फर ने रोटी पकाई और खाएंगे प्रिय हुसैन।''

हज़रत मख़दूम हुसैन को बचपन से ही हज़रत मख़दूम शरफुद्दीन का सत्संग प्राप्त रहा । फिर हज़रत मख़दूम से ही मुरीद होने का भी सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत मख़दूम के अध्यात्म व्यक्तित्व का आप पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा।

मौलाना मुज़फ़्फर बल्ख़ी की मृत्यु के समय आप उनके साथ अदन में ही थे और उनकी मृत्यु के बाद आदेशानुसार बिहार लौटे और हज़रत मख़दूम के दूसरे उत्तराधिकारी का पदभार संभाला और लगभग 41 वर्षों तक हजरत मख़दूम की गद्दी की शोभा बढ़ाते रहे ।

3

हज़रत मखदूम हसन दायम जश्न बल्ख़ी

(844-855 हि०/1441-1451 ई०)

हज़रत मख़दूम हसन दायम जश्न बल्ख़ी हज़रत मख़दूम के तीसरे उत्तराधिकारी हुये और 11 वर्षों तक इस पवित्र पद की गरिमा बढ़ाते रहे ।

आपकी शिक्षा-दीक्षा अपने पिता से ही हुई। आप भी बपने समय के महानह सूफ़ी संत हुए हैं। आप में दानशीलता की प्रवृत्ति बड़ी मुखर थी। घर में कुछ रखना आपको पसन्द न था । इन्होंने अपने पिता हज़रत मख़दूम हुसैन की अरबी भाषा में रचित पुस्तक 'हज़राते ख़म्स' की फ़ारसी भाषा में सुन्दर व्याख्या का बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है।

4

हज़रत मखदूम अहमद लंगर दरिया बल्खी फ़िरदौसी

(855-891 हि०/1451-1486 ई०)

हज़रत मख़दूम अहमद लंगर दरिया बल्ख़ी फ़िरदौसी अपने पिता के बाद हज़रत मख़दूम के चौथे उत्तराधिकारी हुये और छत्तीस वर्षों तक इस गद्दी की शोभा बढ़ायी । आपका जन्म रमज़ान की 27 तारीख़ को 826 हिजरी में हुआ था। जन्म के बाद चालीस दिनों तक आपकी आँखें बन्द रहीं जिसके कारण घर वाले बड़े चिंतित थे लेकिन आपके दादा हज़रत मख़दूम हुसैन ने लोगों को सान्तवना दी और चालीस दिनों तक लगातार चाश्त की नमाज़ पढ़ कर अपने पवित्र मुखस्राव को आपकी बन्द आँखों पर मलते रहे । अन्तत: चालीसवों दिन आखें खुलीं और आपको इस संसार में पहला दर्शन हज़रत मख़दूम हुसैन का प्राप्त हुआ । आप बराबर अपने दाना की सेवा में रहे और उनसे ही शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की ।

बताया जाता है कि एक बार पवित्र मक्का के दर्शन के लिए आप सपरिवार भ्रमण कर रहे थे कि समुद्र में तेज़ आँधी के कारण जहाज़ डूबने लगा और बचने की कोई आशा नहीं रही । सारे यात्री मौत को सामने देखने लगे । इस अवस्था में आप परमात्मा के ध्यान में लीन होकर कहने लगे कि ऐ अल्लाह! मैं तेरे इस कार्य से भी सहमत हूँ अवश्य ही इसमें भी कोई भलाई छिपी होगी । उसी समय आप की सुपुत्री फातिमा को निंद आई तो उसने हज़रत अली को स्वप्न में देखा कि वे तसल्ली दे रहे हैं कि तुम लोग चिंतित न हो, तुम्हारा जहाज़ सुरक्षित रहेगा । उइसके बाद जहाज खतरे से बाहर हो गया। इसी कारण आप लंगर दरिया प्रसिद्ध हो गए।

आप रमज़ान की 19 तारीख़ को 891 हि० में परलोक सिधारे आपकी दरगाह भी पहाड़पूरा में हज़रत मख़दूम हुसैन की दरगाह में प्रवेश से

पहले की क़ब्रिस्तान में एक सामान्य घर के भीतर है। आपको प्रवचनों का संग्रह 'मूनिसुलकुलूब' के नाम से विख्यात है। फ़ारसी भाषा में यह भी अभी तक हस्तलिखित है।

5

हज़रत मख़दूम इबराहीम सुलतान बल्ख़ी फ़िरदौसी

(891-914 हि०/1486-1508-09 ई०)

हज़रत मख़दूम इबराहीम सुलतान बल्ख़ी फ़िरदौसी अपने पिता के बाद पाँचमें उत्तराधिकारी हुए और 23 वर्षों तक इस पद पर आसीन रहे। आप भी अपने काल के लोकप्रिय सूफ़ी संत गुज़रे हैं। रमज़ान की 19 तारीख को 914 हिजरी में आपकी मृत्यु हुई। आपकी दरगाह बिहारशरीफ में गंगन दीवान की दरगाह से पहले कांटा पर अवस्थित है।

6

हज़रत मख़दूम हाफिज़ बल्ख़ी फ़िरदौसी

हज़रत मख़दूम हाफ़िज़ बल्ख़ी फ़िरदौसी अपने पुज्य पिता की मृत्यु के बाद 914 हिजरी में में हज़रत मख़दूम के छठे उत्तराधिकारी हुये। आप एक महान संत के वंशज और स्वयं भी एक महान संत थे आपके समय में ही हज़रत मख़दूम के वशंज में से एक सूफ़ी संत हज़रत मख़दूम शाह भीख, बड़ी दरगाह बिहारशरीफ़ में अपने स्वास्थ्य की कामना से आकर रहने लगे तो मख़दूम के वंशज होने के कारण आपने उनका इस सीमा तक आदर सत्कार किया कि स्वयं उन्हें अपने स्थान पर हज़रत मख़दूम का उत्तराधिकारी बना कर धन्य हो गए। आपने बिहारशरीफ में ही अपने गुरूओं की भाँति लोगों की शिक्षा-दीक्षा और कल्याण में समय बिताया ।

7

हज़रत मखदूम सैयद शाह भीख फ़िरदौसी

हज़रत मखदूम सैयद शाह भीख फ़िरदौसी हज़रत मखदूम हाफिज़ बल्ख़ी के जीवन में ही उनके स्थान पर हज़रत मखदूम के सातवें उत्तराधि कारी हुए। आप हज़रत मखदूम के सुपुत्र हज़रत मखदूम ज़कीउद्दीन की एकमात्र सुपुत्री बीबी बारका (हज़रत वहीदुद्दीन चिल्लाकश की धर्म पत्नी) के वंशज थे। इसलिए हज़रत मखदूम के वंशज होने के कारण सभी आपके प्रति आदर भाव रखते थे और बिहारशरीफ में आपके आगमन से मानो हज़रत मखदूम की स्मृति को जीवन्त बना दिया था ।

आप न केवल हज़रत मखदूम की औलाद में थे बल्कि हज़रत मखदूम के पीरो-मुर्शिद हज़रत नजीबुद्दीन फिरदौसी की बहन (वहीदुद्दीन चिल्लाकश की माता) के वंशज भी थे। आपकी लोकप्रियता आकाश छूने लगी। हर व्यक्ति आपके प्रेम और स्नेह में भावविभोर हो गया । इस बीच हज़रत मखदूम की भी आप पर स्पष्ट कृपादृष्टि चमत्कार स्वरूप हुई अर्थात आप रोगग्रस्त होकर दरगाह शरीफ़ पर हाज़री ने आपको रोगमुक्त कर दिया । तब से आज तक आप ही के वंश में हज़रत मखदूम की सज्जादानशीनी चली आ रही है।

8

हज़रत मखदूम शाह जलाल फ़िरदौसी

हज़रत मखदूम शाह जलाल फिरदौसी अपने पिता शाह भीख फिरदौसी के बाद हज़रत मखदूम के आठवें उत्तराधिकारी हुए। आप अपने पिता के मार्ग का पूर्णत: अनुसरण करते रहे और आपका निवास भी बड़ी

दरगाह पर ही रहा केवल वार्षिक उर्स शरीफ़ के अवसर पर ख़ानक़ाह पधारते और सज्जादानशीन के कर्त्तव्यों को पूरा करते । आपका का मज़ार भी अपने पिता और बड़े भाई हज़रत शाह लाल के समीप है।

9

हज़रत मख़दूम शाह अख़वन्द फ़िरदौसी

हज़रत मख़दूम शाह अख़वन्द फ़िरदौसी अपने पिता के निर्धन के बाद हज़रत मख़दूमुल मुल्क के नौवें उत्तराधिकारी हुये और पूर्वजों के मार्ग का अनुसरण किया ।

10

हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद फ़िरदौसी

हज़रत मख़दूम शाह मुहम्मद फ़िरदौसी अपने पिता की मृत्यु के बाद 10वें उत्तराधिकारी बने। उन्होंने सूफ़ीवाद की शिक्षा-दीक्षा अपने पिता से ही प्राप्त की और उन्हीं के मुरीद और ख़लीफ़ा हुए आपका जीवन भी बुजुर्गों की भांति दरगाह शरीफ पर ही गुजरा ।

11

हज़रत मख़दूम शाह अहमद फ़िरदौसी

हज़रत मख़दूम शाह अहमद फ़िरदौसी अपने पिता के मृत्यु के बाद 11वें उत्तराधिकारी हुये। इन्होंने अल्प अवधि में ही दरगाह के रख-रखाव पर विशेष ध्यान दिया ।

12

हज़रत मखदूम दीवान शाह अली फिरदौसी

हज़रत मखदूम दीवान शाह अली फ़िरदौसी पिता के मरणोपरान्त 12वें उत्तराधिकारी हुये इन्होंने भी शिक्षा-दीक्षा अपने पिता से ही प्राप्त की और वे महान सूफ़ी संत हुए । वे हज़रत मखदूम शाह भीख के वंशज सर्वप्रथम थे जिन्होंने बड़ी दरगाह का निवास छोड़ कर खानकाह में स्थाई निवास प्रारम्भ किया। इन्होंने अपने काल में खानकाह के प्रांगन में निर्माण कार्य कराया और लंगर जारी किया ।

13

हज़रत मखदूम दीवान शाह अब्दुस्सलाम फिरदौसी

हज़रत मखदूम दीवान शाह अब्दुस्सालम फ़िरदौसी पिता के निर्धन के बाद 13वें उत्तराधिकारी हुये। 1033 हिजरी में सम्राट जहाँगीर ने मौज़ा मसिदिरपुर आपही को भेंट किया था ।

आपका मज़ार हज़रत मखदूम के चरणों के बाद दूसरी पंक्ति में है।

14

हज़रत मखदूम शाह ज़कीउद्दीन फिरदौसी

हज़रत मखदूम शाह ज़कीउद्दीन फ़िरदौसी अपने पिता के बाद 14वें उत्तराधिकारी हुये। वे अपने पिता के शिष्य मुरीद और खलीफ़ा थे। इस्लामी विद्या में निपुण और महान सूफ़ी संत थे। आप ही के काल में हबीव खाँ सूरी ने बड़ी दरगाह में ईदगाह और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए हौज़े शरफुद्दीन (मखदूम तालाब) का निर्माण कराया ।

आपका मज़ार हज़रत मखदूम के चरणों के पास तीसरी पंक्ति में स्थित है।

15

हज़रत मखदूम शाह वजीउद्दीन फ़िरदौसी

हज़रत मखदूम शाह वजीउद्दीन फ़िरदौसी अपने पिता के निर्धन के बाद हज़रत मखदूम के 15वें उत्तराधिकारी बने । आपके काल में हज़रत मखदूम का उर्स बड़े धूम-धाम से होता था। आप ही के काल में सारी पवित्र वस्तुएं (तबर्रुकात), जो अब तोशाखाने में रखी हैं, खानकाह में एकत्र हुई। आप का मज़ार भी बड़ी दरगाह में है।

16

हज़रत मखदूम शाह मुहम्मद बुजुर्ग फ़िरदौसी

हज़रत मखदूम शाह मुहम्मद बुजुर्ग फ़िरदौसी अपने पिता के निधन के बाद 16वें उत्तराधिकारी हुये परन्तु कुछ ही दिनों में आप का स्वर्गवास हो गया।

17

हज़रत मखदूम शाह अली फ़िरदौसी

हज़रत मखदूम शाह अली फ़िरदौसी अपने सगे भाई के निर्धन के बाद वे 17वें उत्तराधिकारी हुये।

18

हज़रत मखदूम शाह अलाउद्दीन फ़िरदौसी

हज़रत मखदूम शाह अलाउद्दीन फ़िरदौसी अपने सगे भाई हज़रत

मख़्दूम शाह अली फिरदौसी के निधन के बाद 18वें उत्तराधिकारी बने ।

19

हज़रत मख़्दूम शाह बदीउद्दीन फ़िरदौसी

हज़रत मख़्दूम शाह बदीउद्दीन फ़िरदौसी की अपने सगे भाई हज़रत मख़्दूम अलाउद्दीन फिरदौसी के निधन के बाद 19वें उत्तराधिकारी हुये । अपने तीन भाइयों की जल्दी-जल्दी मृत्यु के बाद आपके काल में ठहराव आया। इन्होंने राजगीर में हज़रत मख़्दूमुल-मुल्क के हुजरा का निर्माण आप ही काल में 1150 हि० में हुआ । आपके समय में ही मुगल शासक मुहम्मद शाह रंगीला ने कई गावं ख़ानक़ाह में भेंट किये। आपका मज़ार भी बड़ी दरगाह में है।

20

हज़रत मख़्दूम शाह अलीमुद्दीन दुरवेश फ़िरदौसी

हज़रत मख़्दूम शाह अलीमुद्दीन दुरवेश फ़िरदौसी आप अपने पिता हज़रत मख़्दूम शाह बदीउद्दीन फ़िरदौसी के बाद हज़रत मख़्दूम के 20वें उत्तराधिकारी हुये। आपका मज़ार बड़ी दरगाह बिहारशरीफ में अवस्थित है।

21

हज़रत मख़्दूम शाह वलीउल्लाह फ़िरदौसी

हज़रत मख़्दूम शाह वलीउल्लाह फ़िरदौसी अपने पिता की मुत्यु के बाद 21वें उत्तराधिकारी हुए । आप 1234 हिजरी में 23 रजब को हुआ । आपका मज़ार बड़ी दरगाह बिहारशरीफ में है।

22

हज़रत मख़्दूम शाह अमीरउद्दीन फिरदौसी

(1234-1287 हि०)

हज़रत मख़्दूम शाह अमीरउद्दीन फ़िरदौसी, पिता के निर्धन के बाद हज़रत मख़्दूम के 22वें उत्तराधिकारी हुये और 53 वर्षों तक इस पद को सुशोभित किया । आप फारसी और उर्दू भाषा के लोकप्रिय कवि भी थे। आप 1287 हि० में जमादि प्रथम मास की 5वीं तिथि को शुक्रवार की रात्रि में परलोक सिधारे और अपने पिता से सटे पश्चिम दफ्न हुए।

23

हज़रत मख़्दूम शाह अमीन अहमद फ़िरदौसी

(1287-132 हि० / 1870-1903 ई०)

हज़रत मख़्दूम शाह अमीन अहमद फ़िरदौसी, पिता के निर्धन के बाद 23वें उत्तराधिकारी हुए। इन्होंने सूफ़ीवाद की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की और फिर उन्हीं के निर्देश पर हज़रत मख़्दूम शोऐब फ़िरदौसी के उत्तराधि कारी शाह जमाल अली फ़िरदौसी से मुरीद हुये और अपने पिता के अतिरिक्त उनसे भी खिलाफत प्राप्त की । आपने खानक़ाह से प्रकाशित होने वाली 'अनवारे मख़्दूम' एक विशेषांक प्रकाशित किया । आपका निर्धन 12 मई 1903 ई० को हुआ । आपका मज़ार बड़ी दरगाह बिहारशरीफ में स्थित है।

24

हज़रत मख़्दूम सैयद शाह मुहम्मद हयात फ़िरदौसी

(1903-1935 ई० / 1321-1354 हि०)

हज़रत मख़्दूम सैयद शाह मुहम्मद हयात फ़िरदौसी अपने दादा सैयद

शाह अमीन अहमद फ़िरदौसी के बाद पिता के आकस्मिक निर्धन के कारण हज़रत मखदूम के 24वें उत्तराधिकारी हुये और 32 वर्षों तक इस पवित्र पद पर आसीन रहे । आपकी की मृत्यु 1935 ई० में हुई । आपका मज़ार बड़ी दरगाह बिहारशरीफ में स्थित है।

25

हज़रत मखदूम सैयद शाह मुहम्मद सज्जाद फ़िरदौसी

(1935ई० - 1976 ई०)

हज़रत मखदूम सैयद शाह मुहम्मद सज्जाद फ़िरदौसी पिता के निधन के बाद 25वें उत्तराधिकारी हुये और 41 वर्षों तक इस पद पर आसीन रहे । आपका जन्म 1911 ई० में हुआ था। इन्होंने शिक्षा-दीक्षा अपने पिता से प्राप्त की और उन्हीं से मुरीद हुये और खेलाफत प्राप्त की। 25 शव्वाल की 25 तारीख को 1976 ई० में आपका निर्धन हुआ । आपका मज़ार बड़ी दरगाह बिहारशरीफ में स्थित है।

26

हज़रत मखदूम सैयद शाह मुहम्मद अमजाद फ़िरदौसी

(1976 - 1997 ई०)

हज़रत मखदूम सैयद शाह मुहम्मद अमजाद फ़िरदौसी, पिता के निधन के बाद 26वें उत्तराधिकारी हुये और 21 वर्षों तक इस पवित्र गद्दी की शोभा बढ़ायी । आप अपने पिता के शिष्य, मुरीद और खलिफा थे वे शांत और सुशील स्वभाव के दयालु ह्रदय वाले मृदु भाषी सूफ़ी पुरुष थे । बहुत ही कम बोलने वाले और सादा तथा सहज जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति थे । आपके काल में हज़रत मखदूम की रचनाएं मकतुबाते दो सदी, माअदेनुल

मआनी, ख़्वाने पुरनेमत इत्यादि पुस्तकों का पहली बार उर्दू में रूपान्तरण प्रकाशित हुआ । आपके मुरीद देश-विदेश में हजारों की संख्या में मौजूद हैं। 29 जून 1997 ई० को रविवार को 2 बजे दिन में वे अल्लाह को प्यारे हो गये और बड़ी दरगाह बिहारशरीफ में अपने पिता के चरणों में दफ्न हुये ।

27

हज़रत मख़दूम के वर्तमान उत्तराधिकारी

हज़रत मख़दूम सैयद शाह मुहम्मद सैफुद्दीन फ़िरदौसी

हज़रत मख़दूम सैयद शाह मुहम्मद सैफ़ुद्दीन फ़िरदौसी, पिता के निधन के बाद 2 जुलाई 1997 को वे हज़रत मख़दूम के 27वें उत्तराधिकारी हुये। वर्तमान उत्तराधिकारी प्राख्यात इस्लामिक विश्वविद्यालय, नदवतुलउलमा लखनऊ से धार्मिक शिक्षा प्राप्त की और संत मार्ग में अपने पूज्य पिता के शिष्य, मुरीद और खलीफा हैं। आपके के दौर में हज़रत मख़दूम हुसैन नौशए तौहीद बल्ख़ी की पवित्र दरगाह (पहाड़पूरा) बिहारशरीफ की विशाल घेराबंदी का महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ । यह दरगाह असुरक्षित थी।

ख़ानक़ाह, बड़ीदरगाह और पहाड़पुरा दरगाह में जीणोद्धार और निर्माण का कार्य बड़े पैमाने पर हुआ । ख़ानक़ाह के मुख्य हॉल के दोनों ओर के कमरे दो मंजिलें हो गये, जिससे शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के निवास के लिये जगह निकल आयी । हज़रत मख़दूम का वह हुजरा जहाँ आपका स्वर्गवास हुआ था और वह पवित्र स्थान जहाँ आपको अंतिम स्नान कराया गया था, उसपर एक भव्य इमारत का निर्माण कराया जिसमें ख़ानक़ाह का ग्रन्थालय और दूसरे शोध कार्यों के लिये प्रर्याप्त जगह निकल आयी ।

हज़रत शैख़ शरफ़ुउद्दीन यहया मनेरी की शिक्षा-दीक्षा उनके मानव

प्रेम और मानवीय संदेश को आमजनों तक पहुँचाने में वर्तमान उत्तराधिकारी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान उत्तराधिकारी प्रखर वक्ता के साथ-साथ मृदु भाषी भी हैं। अरबी, फारसी और उर्दू पर समान रूप से इन्हें अधिाकार प्राप्त है। इनके काल में कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार एवं सेम्पोजियम आयोजित किये गये, जिसमें देश भर के सूफीइज़्म पर लिखने वाले रचनाकारों और वक्ताओं को आमंत्रित कर उन्हें सम्मानित किया तथा हज़रत मख़दूम के शिक्षा-दीक्षा तथा उनके संदेश को आम लोगों तक पहुचाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। विगत 15 वर्षों से हज़रत मख़दूम की शिक्ष-दीक्षा के प्रचार प्रसार के लिए त्रैमासिक पत्रिका "मख़दूम" का अनवरत प्रकाशन जारी है। इस के अतिरिक्त आसताना के निकट प्राचीन मस्जिद को शहीद कर भवय मस्जिद निमार्णधीन है।

मखदूमुल मुल्क
अपनी रचानाओं के दर्पण में

हज़रत मखदूमेजहां तरीक़त और तसव्वुफ (अध्यात्म) की राहों के मुसाफिर थे और इस में आप निपूर्ण थे आप के व्यक्तित्व और कृतत्व के अध्ययन से पता चलता है कि अध्यात्म के ही कारण चारों ओर लोग आप को जानते थे और आप लोकप्रिय थे। आप अपने प्रेम, स्नेह, समाज सेवा, दान, माफ़ी, दुआ और सरल साधारण जीवन के लिये जाने जाते थे। मगर साथ ही साथ आप महाज्ञानी और बहुत बड़े लेखक भी थे। आप को बड़े लेखकों में माना जाता है तथा आपकी बहुत ऐसी पुस्तकें है जो अत्यन्त लोक प्रिय हुईं मगर उस से भी बड़ी संख्या में उनके पत्र-लेख सुरक्षित न रह कर बर्बाद हो गये। फिर भी जितना कुछ सुरक्षित रह सका वह साहित्य का अनमोल हिस्सा है। तथा लोग उस से ज्ञान का असीम प्रकाश पाते हैं। आपकी दो दर्जन से अधिक पुस्तें सुरक्षित रह पाई हैं।

(1) राहतुल क़लूब
(2) इर्शादुत्तालेबीन
(3) इर्शादुस्सालेकीन
(4) ख्वाने पुर नेमत
(5) बहरूल मोआन्नी
(6) फवायदे स्कनी
(7) मोनिसुल मुरीदीन
(8) अजूबा
(9) रेसाला मक्किया
(10) मेदुल मआनी
(11) लताएफल मआनी
(12) शरह आदाबुल मुरेदीन

(13)	इशारात मखुल मआनी	(14)	तहफाए गैबी
(15)	रेसाला दर तलबेतालेबान	(16)	मलफ़ूजात
(17)	ज़ादे सफर	(18)	अक़ायेद शरफी
(19)	कवायदे मुरीदीन	(20)	सफरूल मोज़फ्फर
(21)	कंजल मआनी	(22)	गंजुल यफना
(23)	इशाराते शर्फी	(24)	अवरादे खुर्द

मखदूमेजहां शीर्ष स्तर के लेखक और साहित्यकार थे। चुंकि उस समय फारसी भाषा का चलन था, फारसी में बात करना और लिखना पढ़ना महत्वपूर्ण समझा जाता था। इस लिये मखदूमेजहां ने धर्म के प्रचार प्रसार के लिये फारसी का प्रयोग किया और इसी में किताबें लिखीं। मखदूमेजहां की लेखनी सीधी सादी और सरल थी वह सरल भाषा का प्रयोग करते थें। चुंकि मखदूमेजहां दीन के लिये काम कर रहे थे धर्म का प्रचार प्रसार कर रहे थे इस लिये आपके दरबार में हर प्रकार के लोग आते थे। पढ़े लिखे लोग भी और बिना पढ़े लिखे भी इस लिये वह ऐसी भाषा का प्रयोग करते थे जो सब की समझ में आती थी। आपके लेखन में शब्दों से अधिक अर्थ महत्वपूर्ण था परन्तु इसका मतलब यह नही समझना चाहिए कि आपकी भाषा साहित्य के स्तर से नीचे की थी। सच तो यह है कि यह सब उच्च साहित्य के उदाहरण है। आपके यहां शब्दों का उतना ही महत्व है जितना किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये किसी यंत्र की ! शब्दों की सरलता उनकी साज सज्जा और उनका प्रयोग उनकी लोखनी की महत्वपूर्ण विशेषतायें हैं।

हज़रत मखदूमेजहां के लेखन में बहुत सादगी परन्तु बहुत चाशनी बहते पानी जैसी रवानी है। सीरतुशर्फ के लेखक सैय्यद जमीरूद्दीन अहमद आपके लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुये लिखते हैं।

''कभी शालीनता और सभ्यता की सीमा से बाहर नहीं निकले, कभी अभद्र शब्दों का प्रयोग नहीं किया। ऐसे वाक्यों का प्रयोग नहीं किया जिस से क़लम की नोक नापाक हो, किसी मुसलमान पर उसकी किसी भूल के कारण शब्दों के बाण से हमला नहीं करते थे तथा मतभेद के कारण किसी पर चोट नही करते थे। मगर जहां कहीं गुणवत्ता से नीचे उतरते वहां कलम की नोक से एलेक्ट्रिक शॉक पहुंचा कर चौंका देते हैं जिसका अचूक प्रभाव देर तक रहता है। मगर ऐसे में भी वह सीमा से आगे नही बढ़ते वह कम शब्दों में बड़ी बातें कह कर शब्दों के उचित प्रयोग का कमाल दिखाते।

मखदूम जहां के लेखन की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि आप सम्बोधक और पढ़ने वाले के ज्ञान, स्थान और हैसियत का पूरा ख्याल रखते थे। आपकी पुस्तकों को ध्यान से पढ़ने से पता चलता है कि अगर कोई साधारण पढ़ा लिखा आदमी भी इसे पढ़ेगा तो उसे कठिनाई का सामना नही होगा। क्योंकि हर जगह सावधानी बरती गई है कहीं भी ऐसी शैली नहीं है जो पढ़ने वाले की समझ में नहीं आये मगर जहां उन लोगों के लिये बात लिखी गई है जो ज्ञानी और दार्शनिक हैं तो वहां शब्दों और वाक्यों में ज्ञान का दरिया बहता दिखाई देता है। विचार और दर्शन की ऐसी बातें होती हैं जो उनके लिये नई दूनिया के रास्ते खोल देते हैं वहां आपकी सोंच और उड़ान सातवें आसमान पर दिखाई देती है।

मखदूम शैख़ शरफुद्दीन के मकतूबात

हज़रत मखदूमेजहां अपने कुछ मुरीदों, सम्बन्धियों और अनुयायियों को बराबर पत्र लिखते रहते थे । आपके लेखन में आपके इन पत्रों का विशेष स्थान है । यह पत्र केवल मुरीदों का हाल चाल पूछने और कुशल मंगल जानने के लिये नहीं थे । इन पत्रों में महत्वपूर्ण समस्याओं और तसव्वुफ व सलूक से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें भी बताई गई हैं । इसी कारण आपके पत्र ज्ञान और शोध के दृष्टिकोण से भी बहुत महत्वपूर्ण है । इनसे आपके श्रेष्ठ ज्ञान और आपके दृष्टिकोण तथा सोंच की गहराई का पता चलता है । आपके पत्र ''मकतूबात'', ''मकतूबाते सदी'' और ''मक्तुबाते दो सदी'' इत्यादि के नाम से मिलते हैं, हज़रत मौलाना अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी (रह०) हजरत मखदूमेजहां के पत्रों के बारे में लिखते हैं ।

शेख शर्फुद्धीन अहमद यहिया मनेरी हिन्दुस्तान के विख्यात मशायेख में से एक हैं । उनका व्यक्तित्व और महानता परिचय से परे हैं । उनकी पुस्तकें उच्च कोटि की हैं । उनकी सभी रचनाओं में मकतूबात अधिक जाने जाते हैं और लोक प्रिय हैं और वह उनकी बहुत ही सुन्दर रचना है। इसमें बड़ी संख्या में तरीक़त के आदाब और हकीक़त के आसार लिखे हैं । उनके मलफूज़ात को भी उनके मोतक़दीन में से एक ने जमा किया है । बहर हाल उनके मक्तूबात बहुत सरस है । (अख्यारूल अख्यार)

मकतूबात का शैक्षिक और साहित्यिक महत्व

हजरत मखदूमजहां (रह०) के पत्र शिक्षा, ज्ञान और विचारों का बड़ा खज़ाना हैं। जिसमें बहुत ही दार्शनिक और शोधपुर्ण वातें हैं। उनके अध्ययन से मखदूमजहां की दृष्टि, ज्ञान की गहराई, अध्ययन के विस्तार और उनके व्यक्तिगत अनुभव, उनकी सरलता, सादगी और दृढ़ निश्चय तथा शालीन व्यक्तित्व का पता चलता है। पढ़ने के वाद दिल और दिमाग़ पर एक विशेष प्रकार की अनुभुति होती है। विख्यात लेखक और साहित्यकार मौलाना सैय्यद अवुलहसन अली नदवी हज़रत मखदूमजहां के पत्रों के वास्तविक और सहितिक महत्व पर प्रकाश डालते हुये लिखते हैं।

''हजरत मखदूम की जीवित यादगार और उनके ज्ञान व अध्ययन का दर्पण उनके पत्रों का वह वहुमूल्य संकल्न है, जो न केवल उस समय के साहित्यिक में बल्कि मोआरिफ व हक़ायक के पूरे इस्लामी भण्डार में विशेष स्थान रखता है। ज्ञान की गहराई, शोध का अनोखापन, कठिनाईयों को दूर करने, व्यक्तिगत अनुभव, सच्ची रूचि, शोधपूर्ण दृष्टिकोण कितावो सुन्नत के सच्चे और गहरे बिन्दुओं और शराई गुणवता के आधार पर (हमारे सीमित ज्ञान के अनुसार) पूरी इस्लामी लाईब्रेरियों में हज़रत मखदूम के पत्रों और इमाम रव्वानी के पत्रों का कोई दूसरा उदाहरण हमें नहीं मिलता। इन पत्रों के अध्ययन से हमें पता चलता है कि उम्मते मोहम्मदिया के ज्ञानियों और शोध

कर्त्ताओं के ज्ञान और यक़ीन अनुभव और अनुमान, तस्फियाये क़ल्ब और तज़कियाये नफ़्स, आत्मा की शुद्धता और फैलाव, व्यवहार के महत्व और उसकी महत्वपूर्ण बातों और नफसे इन्सानी की कमजोरियों और गलतियों की खोज में कहां तक विकास और विजय पाया और उनकी सोंच के पंक्षी ने किन किन ऊंची शाखों पर अपना घर बनाया तथा किन फ़ज़ाओं में उड़ान भरी शिक्षा और ज्ञान के अतिरिक्त यह पत्र कलम की ताक़त, कहने की शक्ति और सरलता तथा साहित्य का बेहतरीन नमूना है और इसके बहुत से भाग ऐसे है कि उन्हें विश्व के बेहतरीन साहित्यिक उदाहरणों में और ''उच्च साहित्य'' में शमिल रखा जाये । दुनिया की बहुत सी भाषाओं और साहित्य के मामले में यह त्रुटि रही है कि केवल उन व्यक्तियों को साहित्यकार, लेखक और रचनाकार माना गया और उन्हीं के लेखन और विचार को साहित्य के रूप में परोसा गया जिन्होंने साहित्य और लेखन को एक पेशा या प्रस्तुति का साधन समझा। जो प्राचीन काल में राज दरबार से जुड़े हुये थे और लेखन का काम करते थे, जिन्हों ने लेखन में दिखावा और बनावटी पन से काम लिया इसका परिणाम है कि अरबी साहित्यिक में साहितिक लेखन में हमेशा अब्दुल हमीद अल कातिब, अबुइस्हाक अलसाबी, इब्नुलउमैद, साहेब इब्ने अब्बाद, अबू बकर खवारज़ी, अबुल कासिम हरीरी और काज़ी फाज़िल का नाम लिया जाता है । हालांकि उनके लेखन का एक बड़ा भाग दिखावटी, आत्मा से खाली, जीवन हीन और प्रभाव हीन है । इनकी तुलना में इमाम ग़ज़ाली, इब्न जोज़ी, इब्ने खिलदून अधिक बड़े लेखक और रचनाकार हैं और उनकी रचनाओं में सच और प्रभावपूर्ण लेखनी, विचार और अभिव्यक्ति और इन्सानी भाव और क्रिया प्रतिक्रिया के बेहतरीन उदाहरण है । मगर इन बेगुनाहों का गुनाह यह है कि उन्हों ने कभी लेखन और साहित्य को अपना पेशा या अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में नहीं अपनाया तथा उनकी अधिकतर लेखनी

धार्मिक या शैक्षणिक है।

हिन्दुस्तान के फारसी साहित्य का आवलोकन करें तो यह के साहित्य और लेखनी पर ज़हूरी, अबुल फ़ज़ल और नेमत ख़ान आली छाये हुये दिखाई देते हैं । हालांकि यदि लेखन के लिए भाव और सच्चाईयों की प्रभाव पूर्ण अभिव्यक्ति को गुणवत्ता का पैमाना माना जाये तो उनकी लेखनी का बड़ा भाग जिन में केवल शब्दों का जाल तथा अनुपुरक शब्दों, वाक्यों का भ्रामक खज़ाना है जो अपना मुल्य और महत्व खो देता है और बहुत छोटा सा भाग साहित्य की कसौटी पर खरा उतरता है । इनकी तुलना में ऐसी बहुत सी रचनायें अधिक महत्वपूर्ण हैं जिनको साधारणत: साहित्य के इतिहासकारों और आलोचकों ने अन्देखा किया । हज़रत शेख शरफुद्दीन अहमद याहिया मनेरी और हजरत मुजादिद अलिफ सानी' अहमद फ़ारूकी के पत्रों का बड़ा भाग, आलम्गीर की चिठिठयां, शाह वलीउल्लाह साहब (रह०) की 'अज़ालतुल खफ़ा' और शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब (रह०) की तहफ़ा असना अशरिया का बहुत सा टुकड़ा फारसी साहित्य का बेहतरीन उदाहरण है । ऐसा लगता है कि हर भाषा में साहित्य की जो लकीर किसी ने खींची बाद के लोगों ने उसकी सीमा से बहार निकलने, दूसरी भाषाओं और साहित्य को खंगालने और नये साहित्यिक नमूनों तक पहुंचाने का प्रयास ही नहीं किया और इस प्रकार सदियों तक यह मुल्यवान साहित्यिक लेखन धूल में दबा रहा ।''

(तारीख़ दावत-व- अज़ीमत)

मकतूबाते सदी

"मकतूबाते सदी" हजरत मखदूमेजहां के पत्रों का सब से महत्वपूर्ण और लोकप्रिय संग्रह है । इसे हज़रत मखदूम के खास मुरीद हज़रत ज़ैन बदर अरबी ने संकलित किया । यह पत्र काज़ी शमसुद्दीन हाकिम चौसा के नाम हैं । इसमें कुल सौ पत्र है । इनमें अध्यात्म की महत्वपूर्ण बातों और समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है । सालिकों के स्थान और महत्व तथा मुरीदों की विशेषताओं के बारे में बताया गया है । काज़ी शमसुद्दीन मखदूमेजहां के मुरीदों में थे और चौसा के हाकिम थे । जनता की देख रेख और शासन प्रशासन के कारण इतना समय नहीं मिलता था कि हज़रत की सेवा में उपस्थित हो सकें और समस्याओं पर बात हो। इस लिये हज़रत मखदूम जहां पत्रों द्वारा उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण करते । उन समस्याओं का समाधान बताते जो काज़ी साहब की समझ में नहीं आती थी । मकतूबाते सदी की प्रस्तावना में संकलनकर्त्ता लिखते हैं ।

"हम्द व दरूद के बाद बन्दा ज़ईफ जैन् बदर अरबी यह बताना चाहता है कि काज़ी शम्सुद्दीन हाकिम चौसा ने जो हजरत के मुरीदों में शामिल है । बार – बार अनुरोध किया कि यह गरीब रोजगार के कारण हजरत मखदूम की बैठकों में आने से वंचित है और हजरत के आस्ताना के दूर एक स्थान पर पड़ा है उसका अनुरोध है कि इल्मे सलूक के हर अध्याय में इस बन्दा की सोंच और ज्ञान के अनुसार कुछ लिख भेजा जाये जिस से यह बन्दा दूर

रह कर भी लाभ उठा सकें । हजरत मखदूमेजहां से सालिकों के महत्व और स्थान और मुरीदों सम्बन्धित आवश्यक बातें लिखीं और इस सन्दर्भ में तौबा, वारदात, तौहीद व मारफत, इश्क व मुहब्बत, गर्दिश व कोशिश, बन्दगी व अबूदियत, तजरीद व तफरीद, मलामती व मलामती, पीरी और मुरीदी की बहुत सी आवश्यक बातें तथा बुजुर्गों की कहानियां और उन की जीवनी से सम्बन्धित बहुत कुछ लिखा यह पत्र 747 हिजरी के अलग अलग महीनों में शेख शम्सुद्दीन को चौसा भेजे जाते रहे । खादिमों और उपस्थित लोगों ने इसे नकल कर लिया और संग्रह कर लिया जिससे कि तालेबीन, सादेकीन, असहाबे तौफीक़ और बाद में आने वालों के काम आयें तथा दारैन में ऊंचे स्थान का कारण बनें ।''

नीचे मकतुबात सदी से एक पत्र ''मक्तूबा वस्तो पंजम दर शरीयतों तरीक़त व ब्यान वही व दावते उम्मत'' के शीर्षक से है जिसका अनुवाद पेश किया जा रहा है । इस से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि हज़रत ने पत्रों में किस प्रकार ज्ञान और शोध के मोती बिखेरे थे ।

''तरीकत वह राज है जो शरियत से निकली है और शरीयत का सम्बन्ध तौहीद, तहारत, नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, जेहाद और दूसरे शरई निर्देशों और मामलों से है लेकिन तरीक़त इन मामलों के सत्य का पता करने व्यवहार की सफाई, ज़मीर की पाकीज़गी तथा भौतिक गंदगी से व्यवहार को शुद्ध करने से है । जब रेया, हवा, ज़फा, शिर्क और इसी प्रकार दूसरी आदतों को ठीक करने और उनकी सफाई से हो तो यह शरीयत है और जो कुछ आत्मा की शुद्धि और सफाई के लिये है वह तरीक़त है । उदाहरण स्वरूप नमाज़ पढ़ने के स्थान को पाक साफ़ रखना शरीयत है जब कि व्यक्तिगत गंदगी से दिल को पाक रखना तरीक़त है नमाज़ से पहले वज़ू करना शरीयत है और हमेशा वज़ू से रहना तरीक़त है । नमाज़ में किबला रूखे (काबा

शरीफ की ओर मुख) होना शरीरयत है और इस में दिल को अल्लाह से लगाये रखना तरीक़त है और इसी अनुसार कार्य करना शरीयत है जबकि जो कुछ दिल में है उसे पाबन्द शरीयत करना तरीक़त है और जानो कि अम्बेया अलैहिस्सलाम जो स्वयं करते हैं उसी का निर्देश देते हैं ।

तसव्वुफ के कुछ क्षेत्रों में लम्बे समय तक इस विचार का अनुसरण होता रहा कि विलायत का स्थान नबूवत से ऊपर है क्योंकि विलायत का अर्थ है दुनिया से मुंह मोड़ कर अल्लाह को समर्पित हो जाना और नबूवत का मतलब है इस्लाम का प्रचार प्रसार करना जिस का सम्बन्ध दुनिया से है इस कारण वली हक अल्लाह के पास होता है । और नबी दुनिया वालों के अधिक पास होते हैं । दुनयि वालों के पास होने से अधिक अच्छा है हक़ (अल्लाह) के पास होना कुछ लोगों ने इस में संयम रखते हुये कहा है कि विलायत नबूवत से ऊपर नहीं है । विलायत नबूवत से ऊपर है इस का अर्थ उन लोगों ने यह निकाला कि नबी की विलायत उसकी नबूवत से श्रेष्ठ है और नबी जब अल्लाह की ओर होते हैं तो अल्लाह के और अल्लाह के पास होते है तो उस की हालत उस हालत से अच्छी होती है जब वह प्रचार प्रसार के काम से लगे होते हैं यह एक ऐसी समस्या थी जो लम्बे समय से सुफियों के बीच मतभेद का कारण बनी हुई थी तथा इसे जो भी नाम दिया जाए मगर इस से कुफ़्र और दीन से दूरी का रास्ता खुलता था हजरत शेख शरफुद्दीन अहमद यहिया मनेरी, जिन को अल्लाह ने विलायत के साथ साथ अभूतपूर्व ज्ञान भी प्रदान किया था उन्होंने इस सोंच का भरपूर खण्डन किया तथा यह सिद्ध किया कि नबूवत विलायत से हर तरह ऊपर और श्रेष्ठ है अंबेया की एक सांस औलिया की पूरी उम्र से बढ़ कर है । मखदूमेजहां की प्रभावपूर्ण बातों और तर्कों से इस विचार पर भरपूर चोट पड़ी और यह दृष्टिकोण समाप्त हो सका । हाकिम चौसा शम्सुद्दीन के नाम अपने एक पत्र में लिखते है ।

''मेरे प्यारे भाई शम्सुद्दीन को मालूम हो कि सभी मशायख तरीक़त रिजवानुल्लाह ताला अजमइन सभी समय और मामलों में औलिया पैग़म्बरों के अनुयायी हैं और नबी औलिया से श्रेष्ठ हैं जो विलायत की न्याबत है और नबूवत की हिदायत है तमाम नबी वली होते है । लेकिन औलिया में से कोई नबी नहीं होता । अलेमा अहले सुन्नत वल जमाअत और इस विचार के ज्ञानियों में कोई मतभेद नहीं है । हां मुलहेदीन का एक जत्था (जो धर्म को नहीं मानता) वह यह कहता है कि औलिया नबियों से श्रेष्ठ हैं उनका यह तर्क है कि औलिया हर समय हक के पास रहते हैं और नबी अधिक समय धर्म के प्रचार प्रसार में लगे रहते हैं । इस लिये जो जितना हक़ के पास है उतना श्रेष्ठ है । उससे जो किसी किसी समय हमारे पास होता है एक जत्था जिसे सुफियों से प्रेम का दावा है वह यह मानता है कि विलायत का स्थान नबूवत से ऊपर है, नबी को वही (अल्लाह का वाणी) का ज्ञान होता है जब कि वली को छुपी बातों का ! वली को ऐसी बातों का भी ज्ञान होता है जो नबियों को नहीं होता । उन्होंने औलिया के लिये ''इल्मलदुन्नी'' सिद्ध किया! इसका स्रोत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत खिज़िर अलैहिस्सलाम के किस्सा से है उन्होंने कहा कि हज़रत खिज़िर वली थे और हज़रत मूसा नबी हज़रत मूसा पर वही आती थी जब तक वही नहीं आती थी उस समय तक किसी घटना का भेद उन्हें नहीं मालूम होता था हज़रत खिज़िर को इल्म लदुन्नी प्राप्त था इसी कारण वह वही के बिना ही भेद जान लेते थे । यहां तक कि हज़रत मूसा को उनका शागिर्द (अनुयायी) बनने की आवश्यकता पड़ी और सब को पता है कि गुरू चेला से श्रेष्ठ होता है । लेकिन यह याद रहे कि इस विचार के मानने वाले जिन के दीन पर भरोसा किया जा सकता है वह इस विचार से दूर रहते हैं और यह मानने को तैयार नहीं कि औलिया का स्थान नबियों से उपर है या उनके समान है । और हज़रत मूसा और

हज़रत खिज़िर की घटना का उत्तर है कि हज़रत खिज़िर को आंशिक श्रेष्ठता प्राप्त थी और विशेष घटनाओं का सम्बंध इल्म लदुन्नी से है । मगर आंशिक श्रेष्ठता पूर्ण श्रेष्ठ से ऊपर या समान हो ही नहीं सकती । आंशिक श्रेष्ठता पूर्ण श्रेष्ठता को समाप्त नहीं कर सकती । जैसी कि हज़रत मरियम (अ०) कि उन्हें एक प्रकार की फ़ज़ीलत प्राप्त थी कि मर्द के सम्पर्क के बिना हज़रत ईसा (अ०) पैदा हुये । मगर यह फज़ीलत (श्रेष्ठता) हज़रत आयेशा (रह०) और हज़रत फातिमा (रह०) की फज़ीलत से ऊपर नहीं है । इसलिये कि उन्हें पूरी दुनिया की औरतों पर पूर्ण श्रेष्ठता है । याद रखो अगर सभी औलिया के सभी धर्मक्रम को नबी के एक कदम (डंग) की तुलना में रखा जाये तो वह उससे बहुत छोटा और हीन सिद्ध होगा । औलिया जो चीज़ चाहते हैं और जिसके लिये प्रयास करते हैं नबी उस स्थान पर पहुंच चुके हैं उसे पा चुके हैं । नबी प्रचार का काम अल्लाह के आदेश से करते हैं और हजारों लाखों लोगों को अल्लाह का मानने वाला और अल्लाह के करीब कर देते हैं ।

इस तरह नबियों की एक सांस औलिया के पूरे जीवन के क्रम से बेहतर है इसलिये कि औलिया जब अपनी श्रेष्ठता को पाते हैं तब इन्सानी पर्दे से बाहर निकलते हैं और मुशाहदा की खबर देते हैं हालांकि वह इस हालत में भी वशर (इन्सान) ही रहते हैं पैगम्बर पहले कदम पर ही मोशाहदा के स्थान पर होते हैं जो औलिया का अन्त होता है वहां से नबी शुरू करते हैं। खाजा बायज़ीद किस्तामी (रह०) से किसी ने पूछा कि नबियों की हालत के बारे में आपकी क्या राय है ? तौबा, तौबा हमारा उनमें कोई दखल नहीं हैं। जिस तरह औलिया की स्थिति को मख्लूक (आम इन्सान) नहीं समझ सकते उसी तरह नबियों का स्थान औलिया नहीं जान सकते ।

औलिया नबियों की विशेपता के मामले में तेजी से चलने और दौड़ने वाले हैं जबकि नबी औलिया की तुलना में उड़ने वाले हैं । दौड़ने वाले उड़ने

वालों की बराबरी नहीं कर सकते ।

नबियों का नश्वर शरीर अपनी सफ़ाई और पाकी और अल्लाह से नजदीकी के मामले में औलिया-ए-कराम के दिल और उन के सर और छुपी जानकरियों के बराबर है अर्थात दोनों में बड़ा अन्तर है उसके बीच जिस के शरीर को वहां ले जायें जहां दूसरे का विचार पहुंच नहीं सकता है ।

(मक्तूबात सदी "मक्तूब बस्तम" दर फ़ज़ले अम्बेया बर औलिया व मलाईकान)

मक्तूबाते दो सदी

यह हज़रत मखदूमेजहां के उन पत्रों का संकलन है जो उन्होंने अपने कुछ मुरीदों और श्रद्धालुओं को लिखा यह लोग कुछ विशेष कारणों से खानक़ाह में नही आ पाते थे तरीक़त और सलूक की राह में जब कठिनाईयों का शिकार होते तो मखदूमेजहां को पत्र लिख कर इसका समाधान चाहते थे और मखदूमेजहां पत्रों के उतर में उन प्रश्नों का उतर देते और उनकी समस्या का समाधान करते ! मक्तूबात दो सदी में जिन लोगों के नाम पत्र हैं उनमें कुछ महत्वपूर्ण नाम शेख उमर, क़ाज़ी शम्सुद्दीन, क़ाजी ज़ाहिद, हज़रत मौलाना कमालुद्दीन सनोसी, मौलाना सदरूद्दीन, मलिकुल मामर उलमुल्क मुफर्रह, दाऊद मलिक दामाद सुलतान महमूद, शेख कुतुबुद्दीन, शेख सुलेमान, फिरोजशाह, मलिक मोइजुद्दीन मौलाना नसीरूद्दीन इत्यादि शमिल हैं·।

पत्रों का यह संकलन भी बहुत महत्वपूर्ण और सलूक व मार्फत की महत्वपूर्ण समस्याओं और उनके समाधान से सम्बंध रखता है इस संकलन को हज़रत मखदूमेजहां के विशेष मुरीद और स्वयं भी ज्ञानी हज़रत ज़ैन बदर अरबी ने संकलित किया है । यह पत्र जमादीउल उला 769 हिजरी और रमजानुल मुबारक 769 हिजरी के बीच लिखे गये हैं।

मकतूबाते बिस्त व हशत

अठाईस पत्रों का यह संकलन ''मकतूबात जवाबी'' (जवाबी पत्र) के नाम से मुद्रित हुआ और यह ''सेह सदी मक्तूबात'' में भी शामिल है । यह पत्र हज़रत मौलाना मोजफ्फर बल्खी के नाम लिखे गये हैं । कुछ इतिहास कारों का मत है कि हज़रत मखदूमेजहां ने मौलाना मोज़फ़्फ़र बल्खी को दो सौ से अधिक पत्र लिखे जिन्हें मौलाना मोज़फ़्फ़र बल्खी छुपा कर रखना चाहते थे । उन्होंने वसीयत की थी कि यह पत्र उनके साथ ही दफन कर दिये जायें किसी को दिखाये न जायें आपकी वसीयत के अनुसार सभी पत्र उनके साथ दफ़न कर दिये गये । मगर यह अटढाईस पत्र दफन होने से बच गये।

इन पत्रों में अधिकतर सलूक और मार्फत की राहों में आने वाली समस्याओं के समाधान और इस राह पर सफलता और आखरत की नेमत के बारे में हैं । इन पत्रों के अध्ययन से मौलाना मुजफ्फर बल्खी के ज्ञान, उनके अध्यात्म, अल्लाह की तलब और पीर हज़रत मखदूमेजहां से उनकी नज़दीकी का पता चलता है । मौलाना मोज़फ़्फ़र बल्खी हज़रत मखदूम जहां के विशेष मूरीद और उनके ज्ञान का सबसे अधिक लाभ उठाने वालों में थे । संभव है कि दूसरे पत्रों में ऐसी गुप्त बातें रही हूँ जो पीर और मुरीद के बीच होती हैं और हो सकता है कि इसी कारण मौलाना बल्खी ने इन पत्रों को दफन कर देने का आदेश दिया जो जिससे कि कोई गुप्त बात खुल न जाये । पत्रों के अध्ययन से यह लगता है कि हज़रत मखदूमेजहां ने इन पत्रों को सार्वजनिक

न करने का निर्देश दिया था । हज़रत मखदूमेजहां के पत्रों के तीनों संकलन बहुमूल्य हैं । इनमें ज्ञान के मोती लुटाये गये हैं । शोध की नदी बहाई गई है। तरीकत की राह और मारफ़त व सलूक के महत्वपूर्ण मुददों पर वाद विवाद हुआ है । इन पत्रों को पढ़ने से दिल में एक विशेष प्रकार की भावना जागती है । इमान में ताज़गी और यकीन पक्का होता है । हज़रत मौलाना सैय्यद अबुलहसन अली नदवी ने (रह०) पत्रों के सन्दर्भ में लिखा है ।

''हज़रत शेख शर्फुद्दीन यहिया मनेरी के पत्रों के अध्ययन से पढ़ने वाले को स्पष्ट पता चलता है कि यह विशेषज्ञान, यह सुक्ष्म बिन्दु और शोध लिखने वाले के दिमाग, ज्ञान की गहराई और विचार का परिणाम नहीं है बल्कि यह उसका व्यक्तिगत अनुभाव और दृढ़ निश्चय और विश्वास का परिणाम है अल्लाह की बारगाह, उसकी शान बेनेयाज़ी, दादरसी और किबरियाई, जलाल व जमाल, मोमिन का खौफ व रजा आरफीन और वास्लीन बारगाह के नाज व गुजार, सरूर व अन्दोह, दरियाए रहमत की तुग़ियानी, तौबा और अनावतलिलाह की आश्यकता पर जो लिखा गया है । साफ लगता है कि कोई महरमे राज़ और आशनाये हक़ीकत लिख रहा है ।

(तारीख़ दावतो अज़ीमत, भाग तीन, P-247)

मलफूज़ात

(प्रवचन संग्रह)

मआदेनुल मानी :

यह हज़रत मखदूम जहां के मलफूजात (प्रवचनों) का बहुमूल्य संग्रह है यह 63 चैप्टर और 500 पेज का है । इस के संकलन कर्त्ता मखदूम जहां के खलीफा हज़रत ज़ैन बदर अरबी हैं । इसका उर्दू रूपान्तर सैय्यद शाह क़सीमउद्दीन शर्फी अल बलखी अलफिरदौसी (रह०) ने किया है यह उर्दू संग्रह ''मकतबा शर्फ'' खानकाह़ मोअज्जम बिहार शरीफ से 1985 में प्रकाशित हो चुका है । इसमें विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है । तसव्वुफ की बातों पर बहुत विस्तार से चर्चा हुई है । तफ़सीर, हदीस, फ़िक़ह की समस्याओं पर भी विचार किया गया है । पुस्तक के महत्व का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता हे कि मुग़ल बादशाह शहनशाह जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर इसको अबुल फ़जल से पढ़वा कर सुनता था । यह मलफूज़ात हज़रत मखदूम जहां के द्वारा संशोधन और सुसज्जा के पात्र हैं सकंलनकर्त्ता लिखते हैं ।

''जब यह मलफूज़ात संकलित हो गये तो केवल इस विचार से कि इन्सान हूँ कहीं भूल चूक न हो गई हो, बारगाह आली में अर्ज किया बन्दा दर्गाह ने मलफूजात जमा किये हैं , अगर सुनलिये जायें तो खाक्सार को दौलते दारैन मिल जाये । उन्हेंने स्नेह के साथ स्वीकार किया, फिर तो मांगी मिल

गई जब जब समय मिला बन्दा ने शब्द, शब्द अध्याय अध्याय हज़रत मखदूम को सुनाना शुरू किया । कई स्थान पर अन्जाने में शब्द छुट गये थे आपने उन्हें ठीक करवा दिया हज़रत मखदूमेजहां सुनते समय अवसर के अनुसार कोई कहानी, उदाहरण या कोई छन्द भी सुनाते जाते, इन सब को मैं ने प्रवचन में शमिल कर लिया ।''

(मादेनुल मानी, अनुवाद सैय्ययदशाह क़सीमुद्दीन शर्फ़ी, अलबल्खी अलफिरदौसी P-45)

खाने पुरनेमत :

यह हज़रत मखदूम जहां के मलफ़ूज़ात का दूसरा संग्रह है । इसके संकलन कर्त्ता भी हज़रत जैनबदर अरबी ही हैं । किताब की प्रस्तावना से पता चलता है कि यह मादेनुलमानीका दूसरा भाग है । इससे 15 शाबानुल मोअज्जम 749 हिजरी से शव्वालुल मुर्करम 751 हिजरी तक के मलफ़ूज़ात जमा किये गये हैं । यह संग्रह डा० सैय्ययद मोहम्मद अली अरशद के उर्दू अनुवाद के साथ खानकाह, बिहार शरीफ से 1989 में प्रकाशित हुआ है।

राहतुल क़ुलूब :

यह दस मजलिसों (बैठकों) के मलफूजात का बहुमूल्य संग्रह है । इन में एक मजलिस वह भी है जो वफ़ात नामा हज़रत मखदूम जहां के नाम से जानी जाती है और इसमें विशेष रूप से वह दुआयें शमिल हैं जो देहान्त से कुछ पहले हज़रत मखदूम जहां के मुंह से निकली थी। यह पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है । इसके संग्रहकर्त्ता हज़रत जैन बदर अरबी हैं । उन्हों ने इस पुस्ताक की प्रस्तावना में लिखा है ।

''अम्माबाद'' यह कलेमात और हल मुश्किलात जो मेरे पीर रौशन ज़मीर, शेख नामदार, मक़बूल बारगाहे परवरदिगार, तरीक़त के सदर नशीन

हादी, दरयाये करामत के मोती, यकताए मोहब्बत , दिवाचाए मोहब्बत, खाजा दीवानं मउदत, सुलतानुल आशकीन, बुरहानुल आरफीन, उस्सालेहीन व हुज्जतुत्दीन अली जमीउल मुस्लेमीन हज़रत मखदुम शाह शेख शरफुद्दीन यहया मनेरी नुरूल्लाह मर्कदोहू की गौहर फेशां जुबान से जारी हुये और समाअते कासिर और फहमे नाकिस ने जो कुछ सुना और समझा उसे सपुर्दे कलम कर दिया । ताकि सालिकान राह और मोहकि काने दरगाह को इस मजमुआ मरगूब जिसका नाम "राहतुल कोलूब" है के मोताला से कुव्वतेयकीन और सैरो सलूके दीन का शौक हासिल हो और जो इफराती तफरीत में मुक्तला है उनकी जमीयत दीनी और ओलूम यक़ीनी आसान हो जाये, नबी अकरम (स०) के तुफैल में ।

गंजुलइफना :

मलफूजात का यह संग्रह 104 पेज का है । इसकी सबसे विशेप बात यह है कि हर मलफूज में दिन, महीना और वर्ष लिख दिया गया है । इसमें हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ (रह०) के बारे में और इमाम मो० और इमाम अबू यूसूफ की बात चीत भी दर्ज है । शबे क़दर का महत्व, उस के आसार, उसे छुपाने के कारण के बारे में है । बख्तियार खिलजी की वह भी घटना का उल्लेख है जब वह बिहार शरीफ आये थे और उन्होंने हज़रत मखदूम जहां से प्रश्न किया था कि हज़रत सुफिया का दावा है कि बारीताला की तजल्ली सालिक को दुनिया में भी हासिल होती है । जब बारी ताला की तजल्ली (प्रकाश) दुनिया में प्रकट होती है तो दुनिया और अखरत में क्या अन्तर बचा है ? इसके उत्तर में हजरत मखदूम जहां ने फरमाया कि अखरत में अल्लाह ताला को ज़ाहरी आंख से देखना संभव होगा जब कि दुनिया में देखने वाले उसे दिल की आंखों से देखेंगे । इस तरह देखने को तजल्ली और

मोशाहदा कहा जाता है । इसका सम्बन्ध दिल और बातिन में है।

मोईजुल मानी :

मल्फ़ूजात का यह संग्रह 32 मजालिस का है । इसके संग्रहकर्त्ता शेख शहाबुद्दीन अम्माद (रह०) हैं, इसमें तसाव्वुफ पर नये आयाम से प्रकाश डाला गया है । पीरी मुरीदी, तलब पीर और अहलियत शेख जैसी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है । यह संग्रह सलूक व तरीक़त की राह पर चलने वालो के लिये रोशनी का मीनार है । इसकी सब से बड़ी विशेषता यह है कि हज़रत मखदुमजहां ने स्वंय इसको देखा और परखा है । संकलनकर्त्ता इस सम्बध में किताब के प्रारम्भ में लिखते है ।

''मोइजुलमानी जमा करने में मौलाना खाजा के द्वारा अपने शेख बुजुर्गवार की बुलंद हिम्मत अर्ज उल्तमास किया कि मखदूम जहां की नज़रों से गुजर जाये उन्होंने इन्तेहाई शफकत से बेचारा का उल्तमास क़बूल किया और बाज़ जगह जो बेचारा से भूल चूक हो गई थी इसकी इस्लाह फ़माई और कहीं कही मज़मून की मुनासबत से शेर और रूबाई तहरीर थी उसको भी उसमें दर्ज किया ताकि आलिम और आलम वालों को इससे वाफिर हिस्सा मिले ।

तसनीफात (रचनाएं)

शरह आदाबुलमुरीदीन :

यह किताब ''आदाबुल मुरीदीन'' की शरह (विवेचन) है इसके लेखक महान विद्वान शेख ज़ियाउद्दीन अबू नजीब सेहरवर्दी है । आपने शरीयत व तरीक़त सम्बंधी ज्ञान और तसव्वुफ व मोआरिफ पर कई किताबें लिखी हैं । जिनमें आदाबुल मुरीदीन को विशेष लोक प्रियता प्राप्त हुई । यह पुस्तक अरबी में हैं । इसके बारे में हज़रत शेख जियाउद्दीन अबू नजीब ने कहा था कि इसकी विवेचना मेरे बच्चों में से कोई करेगा । अन्नत: हज़रत मखदूम जहां ने यह काम किया । आदाबुल मुरीदीन की विवेचना करने के सम्बंध में ''मोनाकिबुल असफिया'' के हवाले से डा० मो० तैय्यब अबदाली लिखते हैं ।

''शरह आदाबुल मूरीदीन जो (विवेचन) हज़रत शेख शर्फुदीन यहिया मनेरी का लेखन है कि उनकी मुरीदी और खिलाफत (खलीफा व मजाज़) की निसबंत (सम्बंध) इन ही पीरों के शिजरा (सिलसिला) से मशहुर है और हज़रत शेख शरफुद्दीन यहिया मनेरी के मक्तूबात में उल्लेखित क़ूदसुल्लाह अरवाहे हम से सुना है कि कुछ लोगों ने शेख अबु नजीब सेहरवर्दी से अर्ज किया कि अदाबुलमुरीदीन की विवेचना कर दें आपने उतर दियाकि मेरे बच्चों में से एक बच्चा यह काम करेगा । अल्लाह जानता है कि यही शेख शरफुद्दीन यहिया मनेरी है । मशायख तरीक़त अहले मानी है ।

मुरीदों को फ़र्ज़न्द (लड़का) कहा है । इस कारण कि मुरीदीन पीरों को सही अर्थों में फरज़न्द है ।''

शरह आदाबुल मुरीदीन इल्म तसव्वुफ और रमूज़ तसव्वुफ पर आधारित एक सम्पूर्ण पुस्तक है, इस के साथ ही साहित्य का भी बेहतरीन उदाहरण है । उस की ज़बान बहुत सरल और शुद्ध है । इसमें तसव्वुफ के एक एक बिन्दु को समझा कर लिखा गया है । शरीयत और तरीक़त के भेद को उजागर किया गया है । आपने इस दृष्टिकोण को नकारा है कि तसव्वुफ में एक समय ऐसा आता है जब वह शरीयत की सीमाओं और जकड़बन्दियों से मुक्त हो जाता है और उसके लिये आवश्यक शरई निर्देशों को मानना आवश्यक नहीं रह जाता है । आपने लिखा है कि फरायज व वाजिबात और शरीयत की पाबन्दी कभी भी और किसी भी हाल में समाप्त नहीं होती । चाहे वह कितने ही बड़े वली या सूफी क्यों नहीं । यह पुस्तक तरीकत और सलूक की राह पर चलने वाले लोगों के लिये प्रकाश स्तंभ है । अहले तसव्वुफ के सभी अक़ीदे, मसलक, मशरब, आदाब व शरायत और नियमों पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है ।

अक़ायदे शर्फा :

मखदूमेजहां की यह पुस्तक 19 अध्याय पर आधारित है जिसमें इमान और अकीदा पर प्रकाश डाला गया है । मखदूम जहां ने इमान के एक एक बिन्दु को पूरी तरह स्पष्ट किया है । इमान इक़रार बिल क़लब (दिल से स्वीकार करना) या इक़रार बिललेसान (ज़बान से स्वीकार करना) है इस सिलसिले में फ़ोकहा और अइम्मा में मत भेद बताते हुये कहा गया है कि कुछ लोगों को कहना है कि इमान इस्लाम से अलग है । इसका तर्क कुरान की यह आयत है ''फ़ालतिल आराबे ....''

(आरावी कहते हैं कि हम इमान लाये आप कह दीजिए कि हरगिज़ ईमान वाले नहीं हो हां अलबत्ता तुम यह कहो कि हमने इस्लाम लाया क्या मोमिन गुनाह से काफिर हो जाता है) ? इस सम्बन्ध में आपने लिखा कि अहले सुन्नत वल जमाअत के निकट मोमिन गुनाह से काफिर नहीं होता ।

इर्शादुत्तालेबीन व इर्शादुस्सालेकीन :

यह दानों पत्रिकायें बहुत सांक्षिप्त हैं। दोनों का उर्दू अनुवाद खानक़ाह मोअज्जम बिहार शरीफ से प्रकाशित हो चुका है । इर्शादुत्तालेबीन में मखदूम जहां ने तलिबे हक़ और सालिक को विभिन्न प्रकार के निर्देश दिये हैं । इर्शादुस्सालेकीन में वहदतुल वजूद की समस्या पर प्रकाश डाला गया है और फरमाया कि संसार की सभी चीज़ें एक ही प्रकाश के विभिन्न रूप हैं ।

औरादेखुर्द :

मखदुम जहां शेख शरफुद्दीन याहया मनेरी की यह संक्षिप्त पुस्तक विभिन्न दुआओं पर आधारित है दुआ का महत्व, इसकी विशेषता, कुरानी दुआओं, सुरतों और विशेष आयतों की विशेषता, उपयोगिता और पढ़ने का तरीक़ा बताया गया है ।

शैख़ शरफुद्दीन का वार्षिक उर्स समारोह (चिरागाँ)

हज़रत शैख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी के स्वर्गवास को 652 वर्ष बीत गए । अर्थात् इस वर्ष 2013 ई० में आपका 652वाँ उर्स समारोह आयोजित हुआ । हज़रत मख़दूम के वार्षिक उर्स के इस प्राचीन आयोजन का बिहार और बंगाल की संस्कृति पर गहरा प्रभाव रहा है। आपके वार्षिक उर्स में उमड़ने वाली भीड़ में हर धर्म और सम्प्रदाय के लोग बड़ी श्रद्धा और कामना के साथ सम्मिलित होते हैं। भारतवर्ष में अजमेरशरीफ को जो प्रसिद्धि प्राप्त है, और वहाँ के वार्षिक उर्स का जो महत्त्व है। वही बिहार और बंगाल में बिहार शरीफ को प्राप्त है।

रमज़ान शरीफ वे पवित्र मास के बाद ईद की खुशियों के साथ-साथ मख़दूम के वार्षिक उर्स का भी शुभागमण हो जाता है।

हज़रत मख़दूम का वार्षिक उर्स चिरागाँ कहलाता है। किसी स्थान को दीयों के प्रकाश से प्रकाशित करने को चिरागाँ कहते हैं। चूँकि हज़रत मख़दूम के उर्स के अवसर पर बड़ी दरगाह और उस ओर आने वाले बिहारशरीफ नगर के सभी मार्ग दीयों, मशालों, फ़ानूसों और रंगीन बल्बों के प्रकाश से जगमगा उठते थे। यह आयोजन इसलि चिरगाँ के नाम से प्रसिद्ध हो गया ।

रमज़ान के महीने से ही हज़रत मख़दूम के सज्जादानशीन उर्स की तैयारियां में संलग्न हो जाते हैं। दरगाह शरीफ की मरम्मत, चूनाकारी, पेंटिंग, श्रद्धालुओं की सुविधा के उपाय होने लगते हैं। उर्स शरीफ का मुख्य दिवस तो

ईद की पाँच तारीख हैं, लेकिन ईद के बाद से ही लोगों का समूह दरगाह शरीफ और खानक़ाह मुअज़्ज़म पहुँचने लगता है और हर घर अतिथियों से आबाद हो जाता है। सार्वजनिक स्थानों पर खेमें गाड़े जाते हैं और सरायें भर जाती हैं। पाँच तारीख आते-आते पूरा दरगाह क्षेत्र श्रद्धालुओं से पूर्णत: भर जाता है।

उर्स शरीफ के विशेष कार्यक्रम हज़रत मख़दूम की ख़ानक़ाह में सम्पन्न होते हैं। जहाँ ईद की पाँच तारीख प्रात: से ही पवित्र कुरआन की तिलावत और कुल का आरम्भ होता है और लंगर बंटने लगता है। शाम 4 बजे के बाद से ख़ानक़ाह में हज़रत मख़दूम के अनमोल पत्रों की शिक्षा का कार्यक्रम होता है। इस के पुर्व जिला प्रसाशन की ओर से जिलाधिकारी प्रंपरानुसार प्रसाशन के उच्च पदाधिकारीयों के साथ मख़दूमेजहां के आस्ताने पर हाज़री देते हैं। जिलाधिकारी सवयं अपने सर पर सेनी में रखी चादर हज़रत मखदूम को अर्पित करते हैं तथ जिला और राज्य में अमन और शांति की कामना के लिए मखदूमेजहां से फरियाद करते हैं।

रात्रि के सयम जबकि हज़रत मख़दूम का निधन हुआ था ख़ानक़ाह में उस समय का आँखों देखा हाल सुनाया जाता है, जिसे सुन कर हर व्यक्ति भाव-विभोर हो उठता है। फिर एशाँ (रात्रि) की नमाज़ के बाद हज़रत मख़दूम का प्रसाद लंगर सभी को खिलाया जाता है।

12 बजे रात्रि के करीब हज़रत मख़दूम के उत्तराधिकारी दरगाह शरीफ़ जाने की तैयारी करते हैं और पारम्परिक वेश भूषा में डोली पर बैठकर श्रद्धालुओं की अपार भीड़ में मशालों के साथ जब वह दरगाह शरीफ की ओर चलते हैं तो अजीब, अनोखा, मनमोहक दृश्य होता है। हर एक श्रद्धालु इसका प्रयास करता है कि हज़रत मख़दूम के उत्तराधिकारी के पवित्र हाथों को चूम सके नहीं तो स्पर्श करने का ही सौभाग्य प्राप्त कर ले। 12 बजे रात्रि में उत्तराधिकारी दरगाह में पधारते हैं। सीधे हज़रत मख़दूम के पवित्र मज़ार पर जाकर परम्परानुसार

हाज़री देते हैं फिर गुम्बद से निकल कर खुले प्रांगण में हज़रत मख़दूम के स्थान पर आसीन होते हैं और कुरआन शरीफ का पाठ (कुल) सम्पन्न होता है।

कुल शरीफ के बाद उत्तराधिकारी सभी श्रद्धालुओं की मनोकामना की पूर्ति और जनकल्याण, विश्वशांति तथा सद्भाव के लिए प्रार्थना करते हैं। फिर सभी को आशिर्वाद देते हुए डोली पर ख़ानक़ाह लौट जाते हैं। तब ख़ानक़ाह में सूफ़ी परम्परानुसार क़व्वालीं प्रारंभ होती है, जिसमें ईश्वरप्रेम जगाने वाली कविताएं, पैगम्बर हज़रत मोहम्मद सा० की स्तुतियाँ और हज़रत मख़दूम की महिमा में कही गई कविताएं लोगों को भावविभोर कर डालती हैं। यह आयोजन सुबह की नमाज़ तक चलता है। सुबह की नमाज़ के उपरांत बांस की बनी टोकरियों में रोटी और हलवा तथा कोरे घड़े में शरबत ला कर रखा जाता है और हज़रत मख़दूम तथा उनके पीरो मुर्शिद शैख़ नजीबुद्दीन फिरदौसी की पवित्र आत्मा के लिए कुल पढ़ा जाता है।

इसके बाद उत्तराधिकारी के साथ सभी उपस्थित सुफी संत व श्रद्धालुगण अपने-अपने हाथों में लम्बोतरे मृदभाँड (गागर) लिये हुए ख़ानक़ाह से निकल कर समीप ही हज़रत मख़दूम बाग़ में जाते हैं और वहाँ से सभी अपने-अपने गागर में हज़रत मख़दूम के नियाज़ के लिए पकने वाले भोजन हेतु पानी भर कर लाते हैं। पानी लाने को जाने और आने के क्रम में क़व्वाल साथ-साथ यह पारम्परिक बोल विशेष राग में गाते हुए चलते हैं। ईद की ही 6 तारीख को हज़रत मख़दूम के प्रयोग में लायी हुई बहुमूल्य वस्तूओं से श्रद्धालुओं को दर्शन कराया जाता हैं। उनमें हज़रत मख़दूम की तसबीह, कुलाहेमुबारक, ख़िर्क़ा, हज़रत मख़दूम के हाथों से लिखा हुआ कुरआन करीम एवं कैंची आदि उल्लेखनीय है। उर्स का सिलसिला 10 ईद तक चलता है जिसमें राज्य और देश के कोने-कोने से हजारों श्रद्धालु बिहारशरीफ पधारते हैं और हज़रत मख़दूम के अस्ताना-ए-अकदस पर हाज़री देते हैं, चादर पोशी करते हैं और अपनी मुरादें पाते हैं।
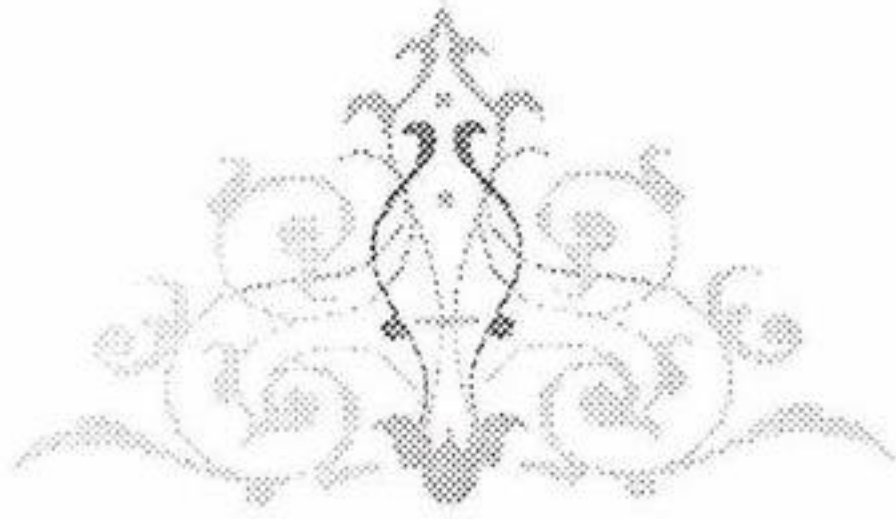
आस्ताना-ए-मख़दूमेजहां की प्रमुख तस्वीरें

حق
حق
حق
حق
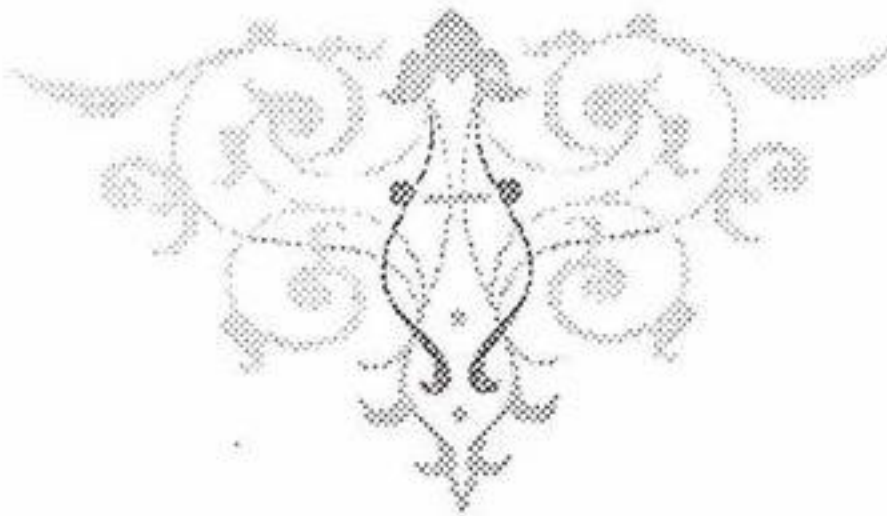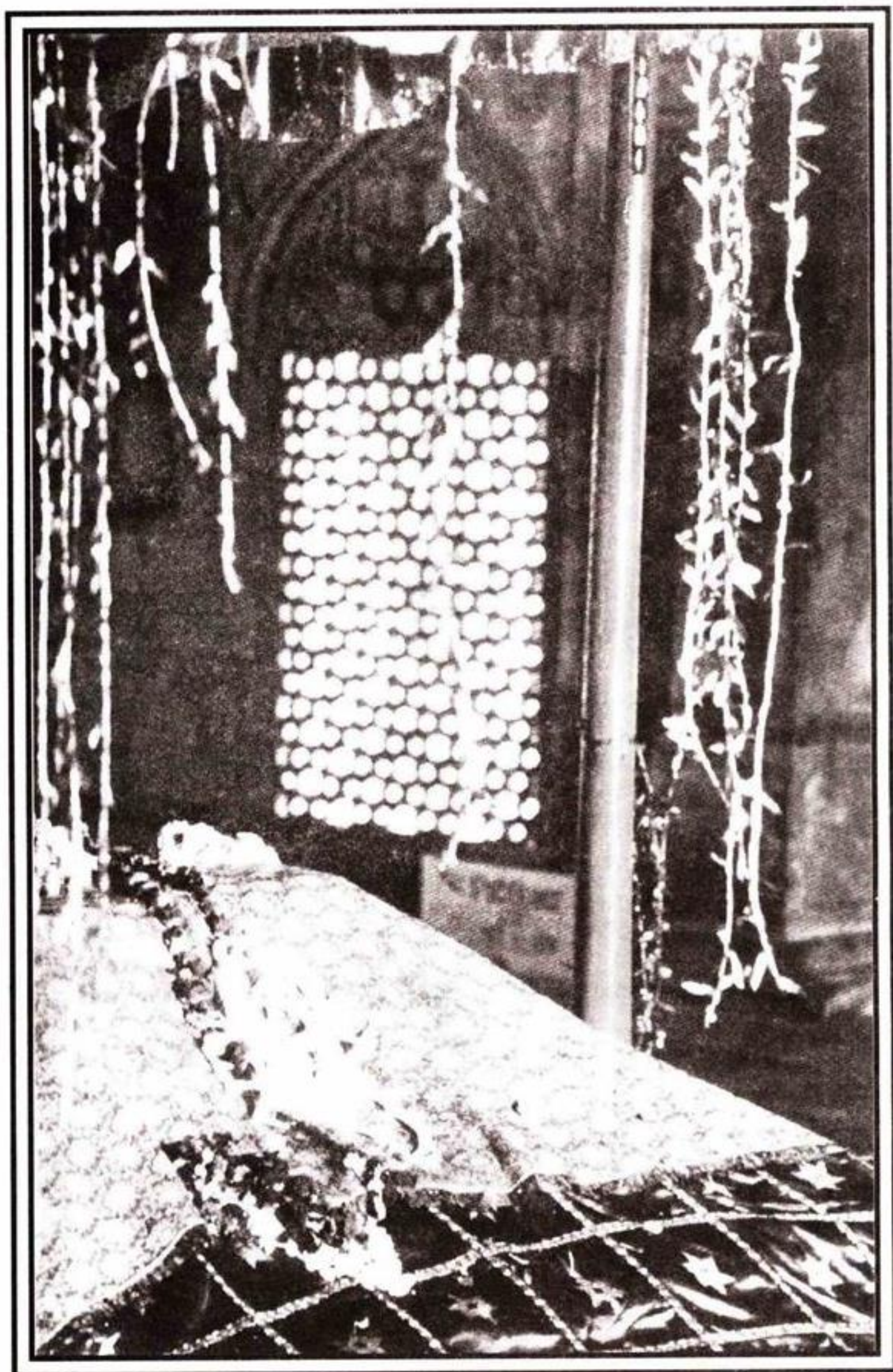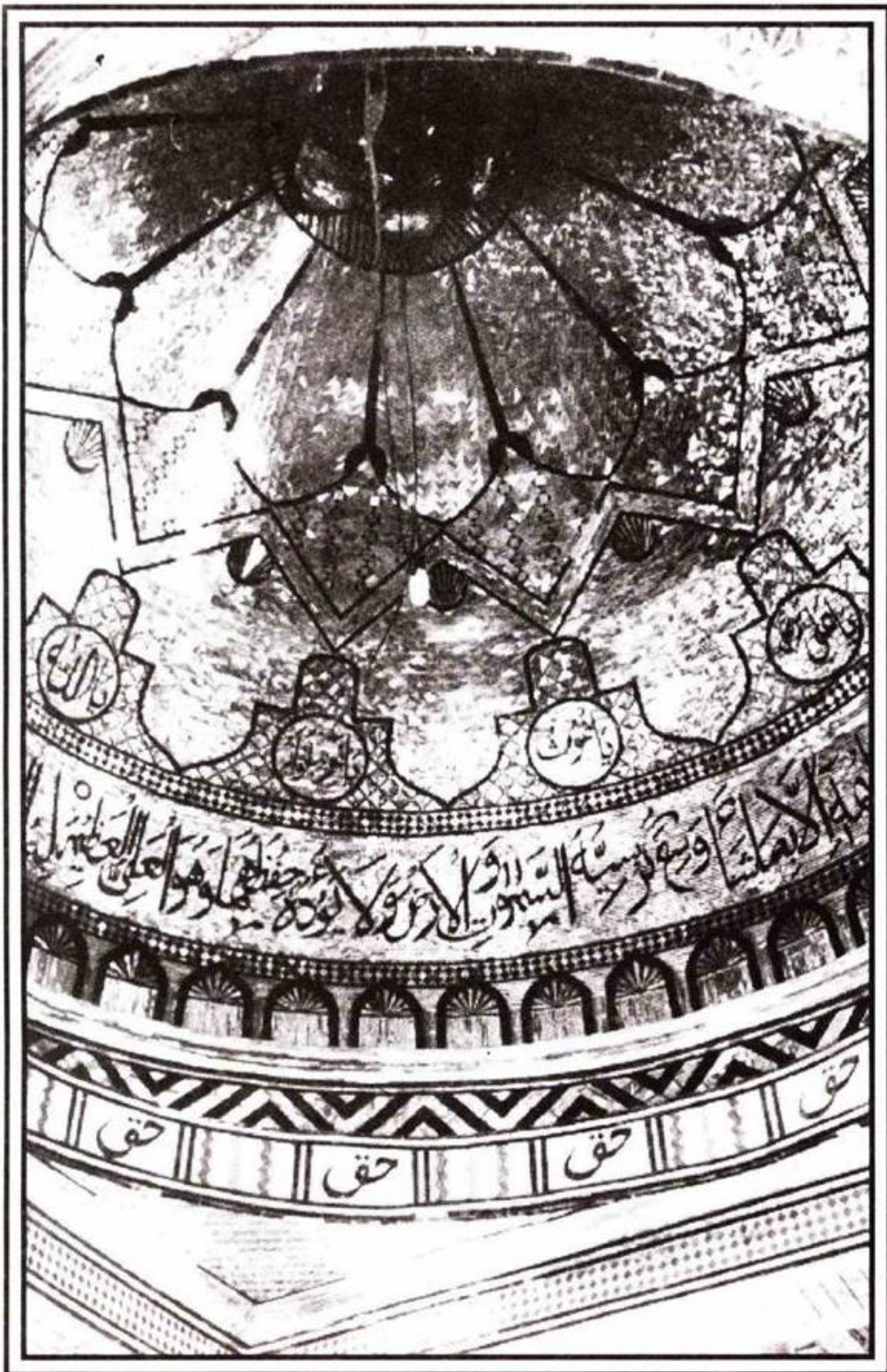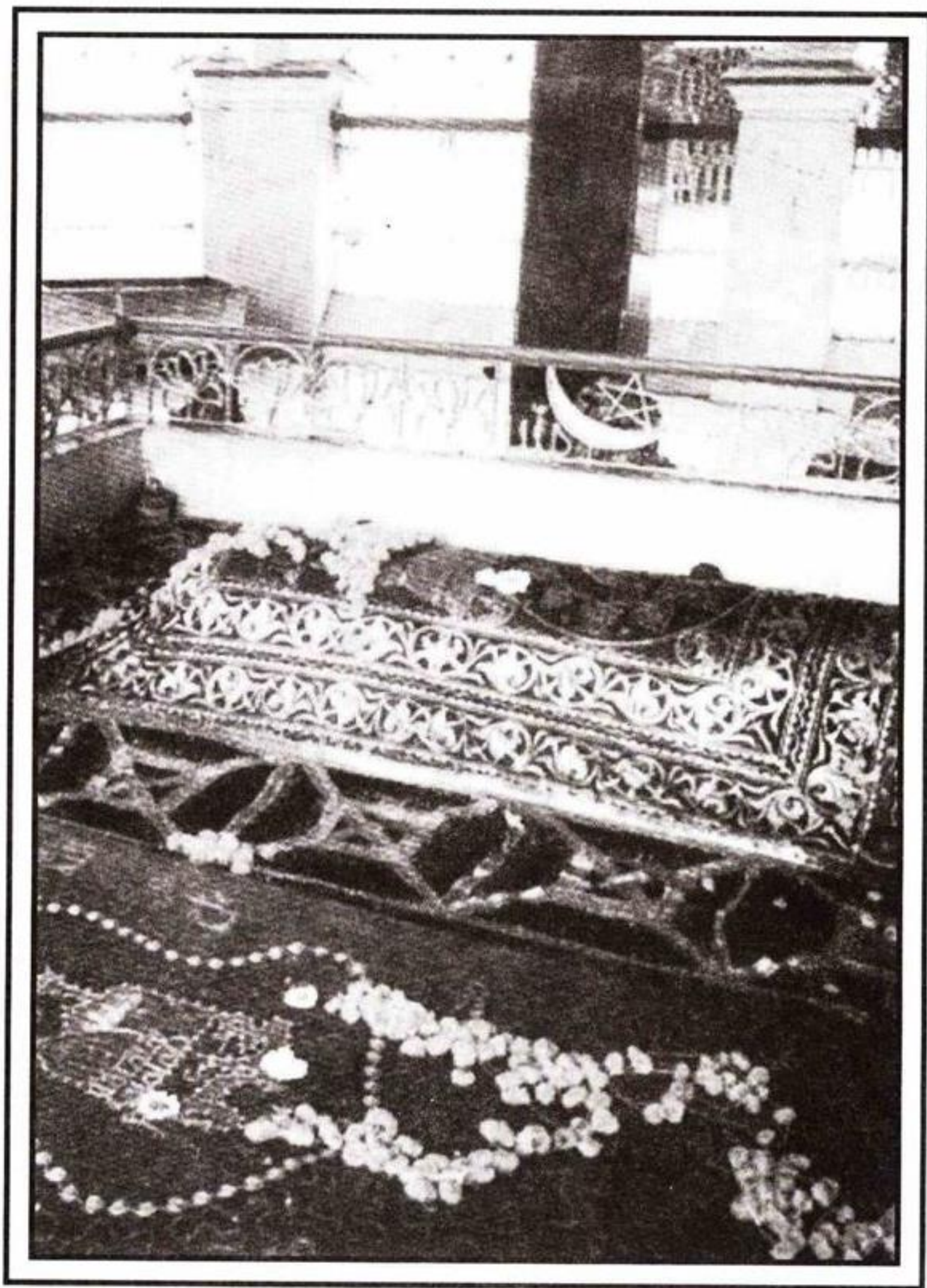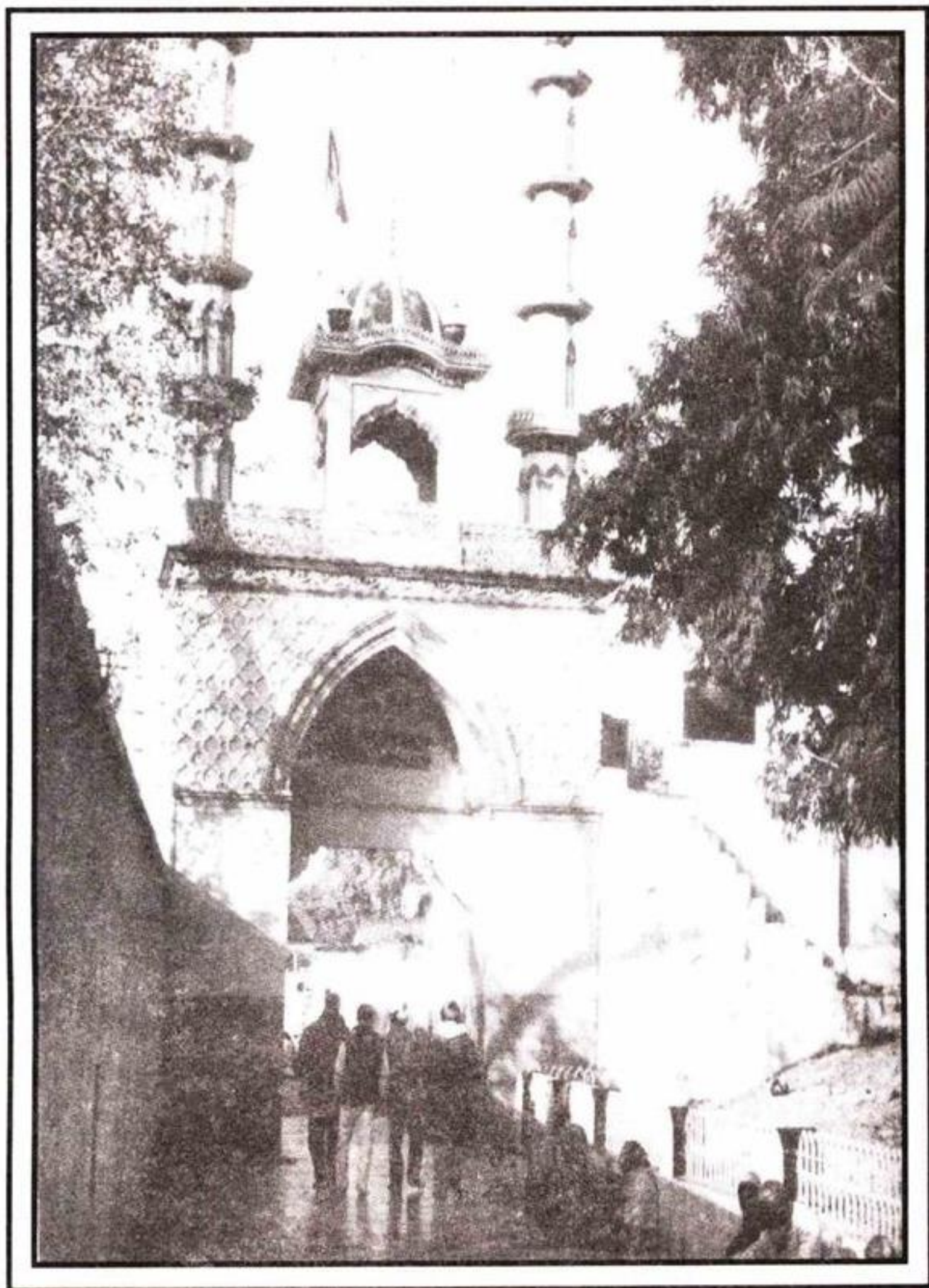
सैयद शाह कमालुद्दीन फिरदौसी (रह०)
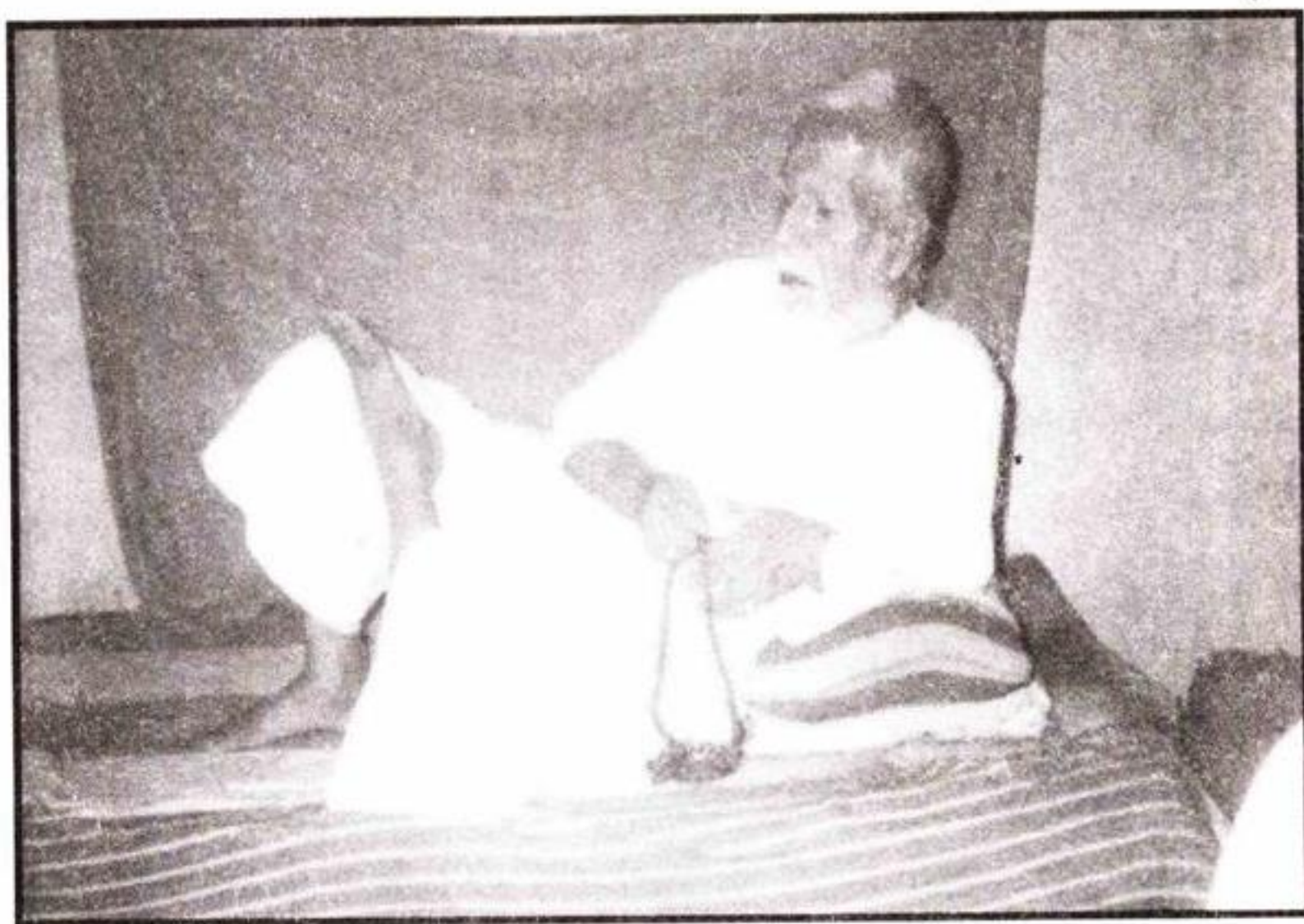
सैयद शाह कमालुद्दीन फिरदौसी का पारिवारिक सम्बन्ध मुहल्ला मीरदाद, बिहार शरीफ के रईसों में से था । आप परिवार की शानदार परम्पराओं का उदाहरण थे । प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता से पाई। बचपन से ही अच्छे, सच्चे और धार्मिक विचार वाले थे । बड़े हुए तो हज़रत शेखुल मशायख़ मखदूम सैय्यद शाह मो० इब्राहीम हुसैन फिरदैसी खानकाह बल्खिया फिरदौसिया, भैंसासूर, बिहार शरीफ की सेवा में उपस्थित होकर बैयत की

तथा पीर मुर्शिद की सेवा में रह कर इतना कठिन परिश्रम किया और दिन-रात इबादत की कि उनके पीर भी अत्यन्त प्रभावित हुए और आपको अपना खलीफा बनाकर खिलाफ़त अता की और उन्हें विशेष सम्मान तथा इनाम से भी नवाज़ा ।

शाह साहब का यह हाल हो गया कि अब उनके पास तीन ही काम थे । अल्लाह की इबादत, पीर व मुर्शिद की सेवा और बुजुर्गों के आस्तानों का भ्रमण । बिहार शरीफ और उसके आस पास की शायद ही कोई दरगाह हो जहाँ आपने हाज़री नहीं दी हो ।

जब बिहार शरीफ में इतनी घनी आबादी नहीं थी, शन्ति और सन्नाटा था, रास्तों में खतरा था, जहाँ दिन में भी चलना सुरक्षित नहीं था वहाँ भी हज़रत सैय्यद शाह कमाल पहुंच जाते थे और वहां रात रात भर जाग कर इबादत में लीन रहते थे । बिहार शरीफ जेठुली, पटना, शेखपुरा और गया के हर बुजुर्ग के उर्स में ज़रूर उपस्थित होते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ (रह०) के उर्स में हर वर्ष अजमेर शरीफ जाते, सूफिया और उनसे जुड़े मामलों पर उनकी गहरी नजर रहती थी ।

शाह साहब फिरदौसी थे इस लिये उनपर इसका पूरा प्रभाव भी था। हज़रत मखदुमेशेख शरफुद्दीन यहया मनेरी फिरदौसी से विशेष प्रेम और आदर स्वभाविक था । जब आस्तानाये मखदूम पर हाज़िर होते तो एक मील दूर से ही नंगे पांव, अत्यन्त आदर के साथ उपस्थित होते, सब से पहले अपने पीर व मुर्शिद के मजा़र (जो आस्ताना मख्दूमेजहां में ही है) पर हाज़री देते, फातेहा पढ़ते, ध्यान लगाते फिर हज़रत मखदूम की मज़ार पर हाज़री देते, सलाम पढ़ते और फातेहा पढ़ते, कई कई दिनों तक आस्ताना मखदूमेजहां पर सुबह शाम हाजरी लगाते रहते । समर्पण का यह हाल था कि जब तक स्वस्थ रहे हर वर्ष आस्ताना मखदूमेजहां की मस्जिद में रमज़ान शरीफ में एतकाफ

करते। इस से हर समय एक साथ इनकी नज़रों के सामने माजिस्द भी होती आस्ताना मखदूम भी होता और मुर्शिद का मज़ार भी । ईदगााह बड़ी दर्गाह में ईद की नमाज़ की इमामत और खेताबत खानदानी चलन के अनुसार वर्षों से मीरदाद मुहल्ला के शोरफा करते रहे। शाह साहब के चचेरे भाई हकीम हाफिज अशरफुद्दी मरहूम (पूर्व मुतवल्ली, सोगरा वक्फ स्टेट बिहार शरीफ) के निधन के बाद ईदगााह की इमामत का दायित्व शाह कमाल साहब पर आया । निधन से एक वर्ष पुर्व तक ईदगाह, बड़ी दर्गाह बिहार शरीफ में होने वाली नमाज़ ईदैन की इमामत का दायित्व आप निभाते रहे ।

सिलसिला फिरदौसिया के प्रचार-प्रसार के लिये उनके पीर व मुर्शिद ने जो खिलाफत दी थी वह अपने आप में एक बड़ी जिम्मेदारी थी। आप उसके लिये भी प्रयास करते रहे और सफल रहे । बहुत से लोगों ने आपके हाथ पर बैयत की, आप के मुरीदों में हर तरह के लोग शामिल थे । उन सब की शिक्षा दीक्षा पर आपने विशेष ध्यान दिया ।

आप में सभी अच्छे गुणों के साथ साथ एक विशेषता यह भी थी कि आप का हाथ खुला हुआ था जिन लोगों को आवश्यकता होती आप उन्हें पूरा कर देते । कल्याण के कामों में बढ़ चढ़ कर भाग लेते । देखने में आमदनी का कोई साधन नहीं था। परन्तू धार्मिक और कल्याण-कारी कार्यों में सहयोग से चूकते नहीं थे ''आइना मख्दूम जहां'' (हज़रत मौलाना शाह रूकनुद्दीन असदक चिश्ती द्वारा लिखित पुस्तक) के अध्ययन से पता चलता है कि ''मदरसा असदकिया मखदूम शर्फ'' पक्की तालाब जब निर्मित हो रहा था तो शाह कमाल साहब खामोशी से उसमें सहायता करते रहे ।

देखा गया है कि जब कोई मुरीद खुद शैख बन जाता है और उसके मुरीदों की संख्या बढ़ जाती है तो उसका ध्यान केन्द्र से हटता जाता है मगर शाह साहब में यह कमी नहीं आई। आप अपने पीर व मुर्शिद के निधन के

बाद भी अपने पीर की खानकाह में उसी आदर के साथ जाते रहे और अपने पीर-ज़ादा का भी आदर करते रहे । 16 मार्च, 2003 को हज़रीबाग़ ज़िला के ग्राम करीम गंज, घाटो रोड में अपनी छोटी सुपुत्री सैय्यदा जमाल (रैना) के घर में उनका स्वर्गवास हो गया, उनका पार्थिव शरीर हज़ारीबाग़ से बिहार शरीफ लाया गया। उनकी नमाज़े जनाज़ा उनके पीर ज़ादा हज़रत मौलाना शाह अली अरशद शर्फी फिरदौसी, सज्जादा नशीं आस्ताना मख़दूम हुसैन नौशा तौहीद बल्खी ने पढ़ाई और बड़ी संख्या में लोग उसमें शमिल हुए। उनका मज़ार मीरदाद बिहार शरीफ मे अवस्थित है। इनकी नमाज़ जनाज़ा में हजारों लोग शरीक हुए।

मखदूमेजहां के वर्त्तमान उत्तराधिकारी

जनाब हुजूर सैयद शाह मो० शैफउद्दीन फ़िरदौसी हज़रत मखदूमेजहां के 27वें उत्तराधि कारी हैं। पूज्य पिता शाह मो० अमजाद फ़िरदौसी के निधन के बाद 2 जुलाई 1997 को मखदूमेजहां के 27वें उत्त्राधिकारी बने। और सज्जदगी के पद को सुशोभित किया।

मख़दूम शरफ़उद्दीन यहया मनेरी-मेरी नज़र में

डॉ० फ़ादर पॉल जैक्सन

हज़रत मख़दूमेजहाँ के श्रद्धालुओं में एक मुख्य नाम डॉ० फ़ादर पॉल जैक्सन का है। ये ऑस्ट्रेलिया के निवासी हैं। 11 जून, 1937 ई० को ब्रसबीन ऑस्ट्रेलिया में इनका जन्मा हुआ। सन् 1955 में वहीं से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और राष्ट्रमण्डल छात्रवृति से सम्मानित किए गए। 1956 को मेलबोर्न ऑस्ट्रेलिया में प्रवेश लिया और दर्शनशास्त्र की डिग्री प्राप्त की। 1961 को हज़ारीबाग, बिहार आए। आपने कई विद्यालयों में अध्ययन अध्यापन की भी सेवाएं दीं। हिन्दी से रूचि बढ़ी तो हिन्दी भाषा सीखी और धर्मशास्त्र (Theology) के चार वर्षीय पाठ्यक्रम में मास्टर की डिग्री प्राप्त करके विधिवत रूप से पादरी चयनित किए गए। 1972 को जामिया-मिलया इस्लामिया में एम.ए. (भारतीय मध्य इतिहास) में नामांकन कराया और 1974 में स्नातकोत्तर की डिग्री से सम्मानित हुए। उसी अवधि में, जब ये जामिया मिलया इस्लामिया में विधार्थी थे, दिल्ली में हज़रत बाबा फ़रीदगंज शकर (रह०) की स्मृति में एक कमिटी गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें इन्हें भी आमंत्रित किया गया । सूफ़ी-संतों के दरबार और सभाओं में प्रत्येक धर्म आवलम्बियों और जाति के लोग बिना किसी भेद-भाव के उपस्थित होते रहे हैं। इस आयोजन में भी बिना किसी भेद भाव के हर धर्म के अनुयायी बहुल संख्या में शिरकत की। यह दृश्य इनके लिए बिल्कुल अद्‌भुत था। इससे

इनका हृदय प्रभावित हुआ ।

मुहब्बत, प्रेम, अनुराग, मानवता और एकता का संदेश लेकर जब वहाँ से लौटे तो Mystisism पर शोध कार्य प्राम्भ किया। इसी क्रम में ईरान के शहर में वे फ़ारसी सीखने के लिए शीराज़ चले गए, वहाँ उन्हें किसी ने पत्र लिखा और बिहार के सुप्रसिद्ध संत (सूफी) हज़तर शैख शरफउद्दीन अहमद यहया मनेरी (रह०) की जानकारी दी। बस क्या था । प्रसन्नता उब्ल पड़ी, शीघ्र ही बिहार की ओर अग्रसर हो गए और 27 जून, 1979 को पटना आए और हज़रत मख़दूमे जहाँ के जीवन दर्शन पर काम शुरू किया। पहले तो बहुत घबराए लेकिन प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० सैयद हसन असकरी के शैक्षणिक योगदान से उत्साहित हुए और उनसे सहयोग प्राप्त कर इसमें सफलता प्राप्त की। आपने हज़रत मख़दूमे जहाँ के जीवन एवं शिक्षा पर पटना विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि भी प्राप्त की ।

डॉ० फादर पॉल जैक्सन ने हज़रत मख़दूमेजहाँ की सेवा एवं शिक्षा को पी.एच.डी. का विषय क्यों और कैसे चुना, यह घटना स्वयं इनकी ज़बानी सुनिइए ।

वर्ष 1972 से लेकर 1979 तक मैं दिल्ली में था। भारतीय इतिहास और उर्दू पढ़ रहा था। बाबा फ़रीद गंजशकर (रह०) को याद करने के लिए एक समिती थी, मुझे आमंत्रित किया गया। इस अनुष्ठान में मैंने देखा कि मुसलमान के अलावा हिन्दु, सिक्ख, और ईसाई शरीक थे और भाषण दे रहे थे। यह विचार मेरे मन में आया कि इस सूफ़ी की जिन्दगी से एकता पैदा होती है। उसी समय से मैं किसी सूफ़ी पर काम करना चाहता था। मैं सोचता था कि दिल्ली और अजमेर के निज़ामउद्दीन औलिया और गरीब नवाज़ आदि पर दिल्ली, अजमेर और अलीगढ़ इत्यादि में अधिकांश लोग रहते हैं जो यह काम कर सकते हैं। इसी समय से एक आमुक सूफी की मुझे तलाश हो रही थी ।

फारसी सीखने के लिए शिराज़ जाने का मुझे मौका मिला शिराज़ में एक खत आया इसमें एक दोस्त ने लिखा था कि साईमन डिगबी ने दो नाम दिए हैं। पहला नाम गैसू-ए दराज था वे कर्नाटक राज्य के गुलबरगा के मशहूर सूफी थे। यह गुलबरगा बहुत दूर था। तब मैंने दूसरा नाम पढ़ा। बिहारशरीफ के हज़रत मख़दूम साहब- शरफउद्दीन अहमद यहया मनेरी (रह०) मैं हैरान हो गया (मुझे आश्चर्य हुआ)। बिहर में एक बहुत मशहूर सूफी थे इनके बारे में कुछ पता नहीं था। मेरी खुशी की इन्तहा न रही । बस, हज़रत मख़दूम पर काम करना होगा । 27 जून, 1979 में पटना आया। आते वक्त मेरे दिल में डर था, यह काम बहुत मुश्किल है। क्या मैं इसे कर सकूँगा, और मैं क्या करूँगा । अगर मुझे ऐसा लगा कि हज़रत मख़दूम असली सूफ़ी नहीं थे ?

डा० हसन असकरी साहब की मदद से असंभव काम संभव हो गया और मुकतूबाते सदी पढ़ने पर हज़रत मख़दूम की हस्ती के बारे में कुछ शक न रहा । वह जरूर पहुँचे हुए सूफ़ी थे। जैक्सन साहब ने हज़रत मख़दूमे जहाँ की जिन्दगी और इनके शिक्षा-दिक्षा की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम की। बिहार शरीफ और मनेर शरीफ का अनेकों बार भ्रमण किया। वहाँ की ख़ानकाहों और पुस्तकालयों की ख़ाक छानी और प्रसिद्ध साहित्यकार एवं इतिहास कार डॉ० सैयद हसन असकरी की निगरानी में पटना विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की हज़रत मख़दूमेजहाँ की शिक्षा-दिक्षा ने इनके जीवन को काफी प्रभावित किया। उनकी शिक्षा-मानव प्रेम, आचार-विचार, साम्प्रदायिक सौहार्द, अनुराग, करूणा इत्यादि विशेपताओं को उन्होंने बयान कर के इनकी शिक्षा को उपयोगी बनाने एवं जनहित में लाभ पहुँचाने की सुयोग्य रूप से चेष्टा की है। इनकी पुस्तक ''चौदहवीं सदी में बिहार के सूफ़ी वली शरफउद्दीन अहमद मनेरी जीवन और शिक्षा'' एक मानक पुस्तक है। हज़रत मख़दूमे जहाँ का फैज़ आज भी सर्वसाधारण के लिए

जारी है। फ़ादर पॉल जैक्सल की पुस्तक इस बात का परिचायक एवं प्रमाण है। सूफ़ी संत दिलों को जोड़ते हैं। दुरियों को मिटाते हैं। फासलों को समेटते हैं और निकटता एवं सम्बन्ध बनाते हैं तभी तो जैक्सन जैसा बुद्धिजीवि ऑस्ट्रेलिया से बिहार आता है और हज़रत मख़दूमे जहाँ के श्रद्धालुओं में शामिल होकर प्रशंसा वसूल करता है।

आभार

मखदूमेंजहाँ हज़रत शैख शरफुउद्दीन अहमद यहया मनेरी (रह०) पर अब तक जितनी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, वे सभी सुफी दर्शन और जटिल विचारों और शब्दों से भरी होने के कारण आम लोगों की पहुँच से दूर ही रही।

मैं शुक्रगुज़ार हूँ अशरफ अस्थानवी साहब का जिन्होंने सरल भाषा में मखदूमेंजहाँ के सभी पहलुओं पर रौशनी डाली है। वर्त्तमान प्रदूषित सामाजिक परिवेश में उर्दू और हिंदी दोनों भाषाओं में इंसानियत तथा प्रेम का मार्ग प्रशस्त करनेवाली यह पुस्तक अभी इस वक्त की जरूरत है।

आपके आशीर्वाद का आकांक्षी

ज़फर अली खाँ रूमी

अध्यक्ष सुफी मंसूर अहमद खान (रह०)

वेलफेयर सोसायटी, विहारशरीफ

हज़रत मखदूम के सच्चे भक्त मदरासी बाबा
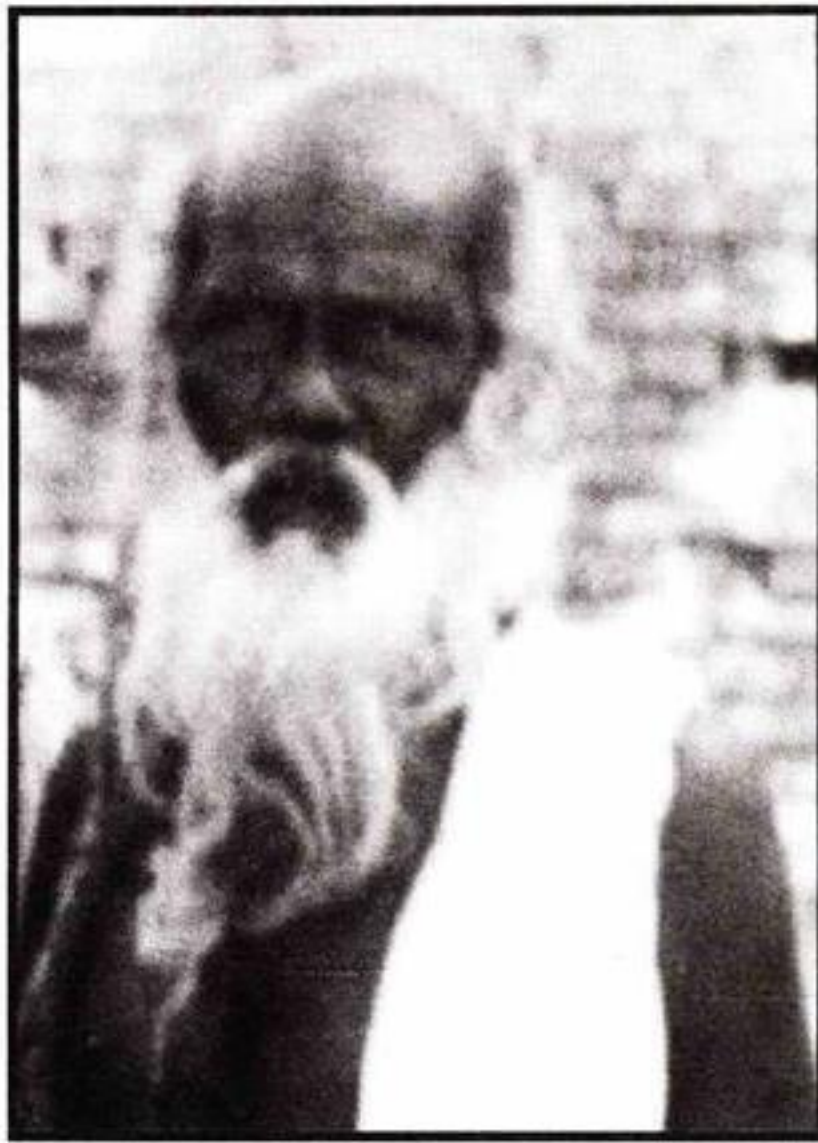
मखदूमुल मुल्क हज़रत शैख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी के चमत्कारी व्यक्तित्व ने न केवल उनके समय के लोगों को आकर्षित और सम्मोहित किया बल्कि उनके बाद भी हर दौर हर ज़ामने में उनके चाहने वाले और उन पर अपना तन मन धन लुटाने वाले पैदा होते रहे । उनमें राजा, महाराजा और बादशाह भी थे और सूफी संत फकीर भी । मखदूम जहां शैख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी का यह सम्मोहन सदियों बाद आज भी वैसा

ही बना हुआ है । उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उस समय के बादशाह ने उन्हें जागीर दी और अपने गवर्नर को भेज कर उनसे सहमति पत्र प्राप्त किया । उस समय के कई सूबेदार आप की सेवा में उपस्थित होते थे और आप के सम्पर्क में रहते थे तथा आप उनका मार्गदर्शन किया करते थे । आपके चाहने वालों ने आपके जीवन में ही एक खानकाह का निर्माण कराया था । मगर आने वाले दिनों में मखदूमेजहां की इन धरोहरों पर काल की छाया पड़ने लगी । हालांकि हर वर्ष शव्वाल की पांच तारीख को अर्थात ईद के पांचवें दीन बड़ी दरगाह बिहार शरीफ में उर्स का आयोजन होता रहा है और मखदूमेजहां के लाखों चाहने वाले इस उर्स में शामिल होते रहे मगर मखदूमेजहां की दरगाह की स्थिति खराब होती रही और आसपास निर्मित भवन पुराना होकर टूटने फूटने और नष्ट होने लगा ।

ऐसे में मखदुमेजहां का एक और प्रेमी सामने आया जिसे बिहार के लोग और मखदूमेजहां के अकीदतमंद ''मदरासी बाबा'' के नाम से जानते हैं। सैयद अली अब्बास उर्फ मदरासी बाबा 1970 के दशक में उर्स (वर्षिक उत्सव) के अवसर पर बिहार शरीफ आने लगे। वह दरगाह और मज़ार के आस पास की दयनीय हालत देख कर बहुत विचलित होते थे । इसी कारण 1978 में वह बिहारशरीफ आ गए और दरगाह पर ही रहने लगे । उन्होंने दरगाह के मीनार का निर्माण कराना शुरू किया । परन्तु मीनार खड़ा होता और गिर जाता, खड़ा होता और गिर जाता । कई बार जब ऐसा हुआ तो इन्जीनियरों को बुलाया गया जिन्होंने बताया कि पुराने निर्माण को तोड़ कर बनाना पड़ेगा। उसके बाद मदरासी बाबा की देख रेख मे पुराना भवन तोड़कर फिर से निर्माण शुरू हुआ । 15 वर्षो की मुशक्कत के बाद भव्य दरगाह बनी जिसे देख कर आज भी लोग झूम जाते हैं।

मदरासी बाबा का व्यक्तित्व भी बहुत सादा सरल होते हुये भी बहुत

अजीब था । गहरे सांवले रंग के मदरासी बाबा की वेश भूषा साधुओं वाली ही थी । उनके बाल जटाओं में परिवर्तित हो गये थे । बदन पर हर मौसम में मिट मैली लुंगी होती जबकि उपरी बदन पर कुछ भी नहीं पहनते थे, नंगे पांवों रहते थे। वह दरगाह के निर्माण के लिये लोगों से सहयोग करने को कहते थे । परन्तु भवन का निर्माण उस समय भी बहुत मंहगा था, इसलिये हर कुछ दिन पर काम रुकता । ऐसे में अक्सर देखा जाता कि मदरासी बाबा मखदुमेजहां की मज़ार पर खड़े होकर चिल्लाने लगते मानों उनसे बात कर रहे हो। ''आराम से सोये रहो'' कोई चिन्ता नहीं है कि निर्माण कैसे होगा? सिमेन्ट नहीं है, गिटटी नहीं है । बालू नहीं है छड़ नहीं है, आराम से सोये रहो ''फिर अकसर वह वहीं पर रोते हुये देखे गये और थोड़ी ही देर बाद देखने वालों ने पास नये नये नोटों का बंडल भी देखा। बहर हाल तो कहने का अर्थ यह कि आज जो बिहारशरीफ की बड़ी दरगाह का भव्य भवन है। उसके निर्माण का श्रेय मदरासी बाबा को ही जाता है । 30 अगस्त 1990 को बिहार शरीफ बड़ी दरगाह में ही मदरासी बाबा का देहान्त हो गया । ऐसा लगा मानो दरगाह का निर्माण उनके जीवन का लक्ष्य था जिसके पूरा होते ही उन्होंने अपना देह त्याग दिया ।

मदरासी बाबा में श्रद्धा रखने वालों की संख्या भी बहुत बड़ी थी और उनमें राजा रंक सभी शामिल थे । उस समय स्वर्गीय संजय गाँधी (इन्दिरा गाँधी के छोटे पुत्र) की पूरे देश में तूती बोलती थी वह मदरासी बाबा में बड़ी आस्था रखते थे, उस समय के मुख्य मंत्री डा० जगन्नाथ मिश्रा और उनकी सरकार के कई मंत्री तथा दूसरे बहुत से नेता और अधिकारी भी मदरासी बाबा के भक्तों में शामिल थे मगर स्वयं मदरासी बाबा दुनिया की मोह माया से बहुत दूर थे ।

जिसको चाहा बना दिया कामिल

हज़रत शैख शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी के जीवन काल में दुनिया के कोने-कोने से उस समय के महान ज्ञानी, बुद्धिजीवि, शिक्षाविद्, उलेमा (धर्मगुरू), फोज़ला, औलिया (आध्यात्म गुरू) उनकी ख़ानक़ाह में उपस्थित हुआ करते थे औन उनकी सेवा में रह कर ज्ञान प्राप्त करते थे। यह सिलसिला हज़रत के निधन तक चलता रहा। इसी सिलसिले ने हज़रत मख़दूम को मख़दूमेजहाँ बना दिया। मगर वह राजा, राजवाड़ों और धनवानों से हमेशा दूर रहे, दुनिया की मोह-माया से वे बहुत दूर थे। किसी ने पास आने और हज़रत की सेवा का प्रस्ताव भी रखा तो हज़रत मख़दूमेजहाँ ने बड़ी नम्रता से उससे दूर रहे, परन्तु मृत्यु के बाद आप की ख़ानक़ाह लोगों के ध्यान का केन्द्र बन गया और लोग धर्म, जात-पात, ऊँच-नीच सब से ऊपर उठकर आपकी ख़ानक़ाह में आने लगे उनमें राजा-रंक, अमीर-गरीब सभी शामिल हैं। यह सभी लोग आप के आस्ताने की धूल अपने माथे पर लगा कर गौरवान्वित होते रहे हैं।

वर्त्तमान के महत्वपूर्ण राजनेताओं में पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह, पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्द्रिरा गांधी, राजीव गांधी, विश्वनाथ प्रताप सिंह, चन्द्रशेखर के अतिरिक्त गवर्नर अखलाकुर्रहमान किदवई, मो० शफी कुरैशी केन्द्रीय मंत्री तारिक अनवर, फारूक अब्दुलल्लाह, सुलतान अहमद, गुलाम नवी आजाद, संजय गांधी, मुख्यमंत्री बिन्देश्वरी दूबे, जगन्नाथ मिश्र, सत्येन्द्र

नारायण सिंह, लालू प्रसाद, राबड़ी देवी और नीतीश कुमार के नाम उल्लेखनीय हैं।

राष्ट्रपति के रूप में जब ज्ञानी जैल सिंह वर्ष 1983 में हज़रत मख़्दूम जहाँ के आस्ताना-ए-अक़्दस पर पहुंचे तो आस्ताने के मुख्य द्वारा पर निम्नलिखित शेर से बहुत प्रभावित हुए-

जिस को चाहा बना दिया कामिल
मरहबा ऐ तबीबे रूहानी
बन गए ज़र्रे आफ़्तावे जहां
दरे अक़्दस की करके दरबानी

उक्त शेर पर नज़र पड़ते ही राष्ट्रपति महोदय ठिठक गये और एक अजीब सी कैफियत उन पर तारी हो गयी । उक्त शेर को पढ़ते ही वे काफी भावुक हो गये और अचानक वहीं पर बैठ गये और बार-बार उसी को पढ़ने लगे। फिर अपनी शेरवानी से डायरी और कलम निकाला और उसे नोट कर लिया । राष्ट्रपति की यह हालत देखकर सुरक्षा कर्मी उनकी ओर लपके मगर उन्होंने सभी को रोक दिया और देर तक इसी हाल में रहे। कांग्रेस नेता संजय गांधी की हज़रत मख़्दूमजहाँ से विशेष भक्ति थी। वह बार-बार आपके आस्ताना-ए-अक़्दस पर आया करते थे। बिहार के राज्यपालों में डा० अखलाकुर्रहमान किदवाई और मोहम्मद शफी कुरैशी भी वहां हाज़री लगाते रहे हैं। शफी कुरैशी जब मध्य प्रदेश के राज्यपाल थे और उन्हें बिहार के राज्यपाल का अतिरिक्त पद भार मिला तो पद भार ग्रहण करने के बाद पटना हवाई अड्डे से सीधे बिहारशरीफ चले गये थे और हज़रत मख़्दूम के मज़ार पर घंटों बैठकर फातेहा खानी की और देर तक वहाँ बैठकर फैज हासिल किया।

मखदूमेंजहां के एक और भक्त
सुफी मंसूर अहमद ख़ान नक्शबंदी मोजद्देदी
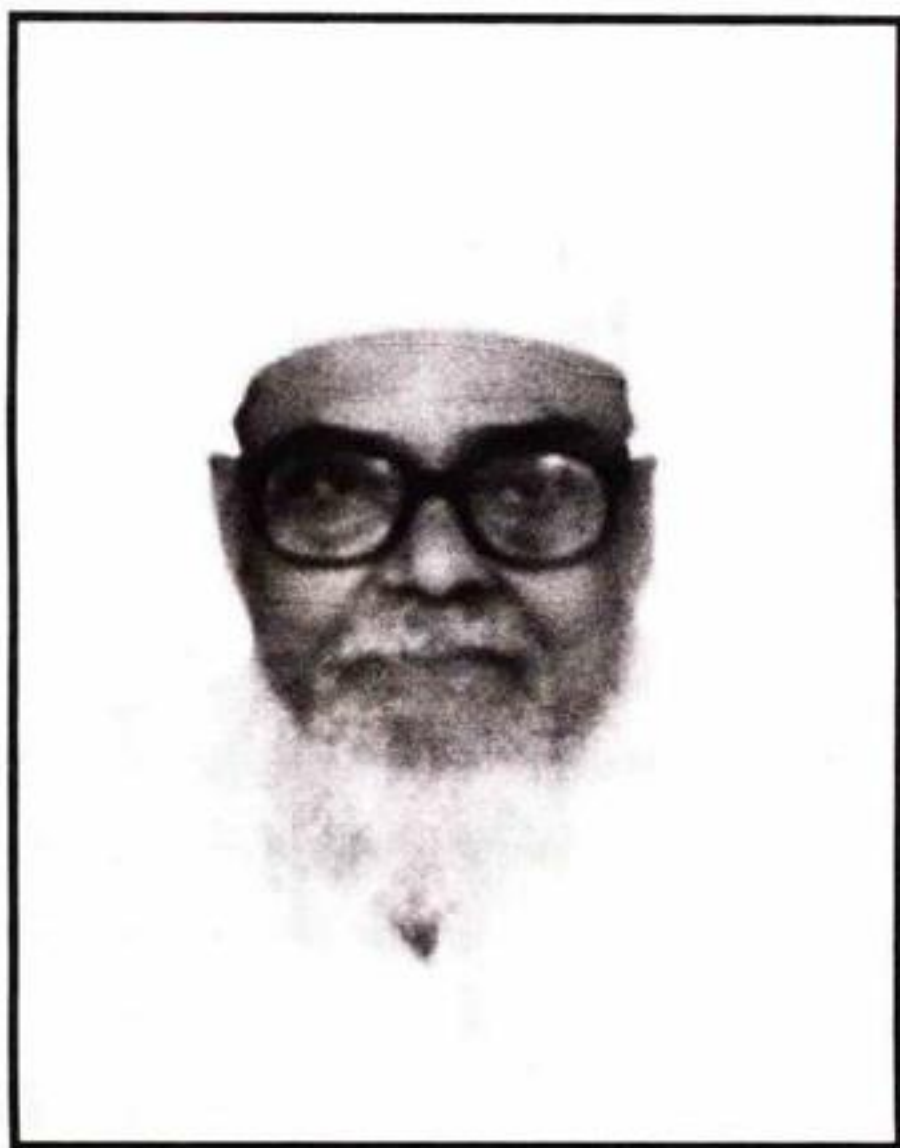
मखदूम नगरी बिहारशरीफ के महल्ला शेरपुर निवासी सूफी मंसूर अहमद खान नक्शबंदी मोजद्देदी अनेक विशेषताओं और सुफियाना प्रवृति के थे । 9 फरवरी 1932 को शेखपुरा जिला के मनयोंरी गांव में आंखे खोलने वाले मंसूर अहमद खान ने प्राथमिक शिक्षा अपने घर पर प्राप्त की। इनके पिता हाजी हबीर्बुरहमान खान शेखपुरा जिला के प्रभावी शिक्षित लोगों में शुमार किये जाते थे। मैट्रिक पास करने के बाद उच्च शिक्षा के लिये

बिहारशरीफ आ गये और नालन्दा कॉलेज से ग्रजुऐशन करने के बाद लोक सेवा आयोग के प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित हुये और सहाकारिता पदाधि कारी बने, और संयुक्त निबंधक सहाकारिता विभाग के पद पर रहते हुये उन्होंने अपने पदीय दायित्व का निर्वाहन बड़े सफलता पूर्वक किया तथा सेवा निवृत हुये । बचपन से ही वे धार्मिक प्रवृति के थे उन्होंने धार्मिक और अध्यात्मिक शिक्षा हज़रत मुल्ला मोबीन (रह०) से प्राप्त किया। अध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण हेतु रात-दिन अपने अध्यात्मिक गुरू की शिक्षा-दिक्षा में रहकर प्राप्त किया ।

सूफी मंसूर खान के सम्पूर्ण जीवन पर अपने गुरू हज़रत मुल्ला मोबीन (रह०) की शिक्षा-दिक्षा का प्रभाव रहा । विम्रता, ईश्वर प्रेम और मानव सेवा की भावना से परिपूर्ण थे। सरकारी सेवा से निवृति के बाद वह पूर्ण रूप से धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में व्यस्त हो गये । उनका निवास शेरपुर स्थित सूफी मंजिल, गरीबों, असहायों, दुखी पीड़ित लोगों की सेवा का केन्द्र बना रहा। असहायों की सहायता उनका प्रिय कार्य था। दुआ-ताविज़ द्वारा भी लोगों को लाभ पहुँचाते रहे। फलस्वरूप भारी संख्या में लोग उनके सूफी आवास पर पहुँचते और वे उनकी जरूरतों और कठिनाईयों को दूर करते। हज़रत मखदूमेजहां के भक्त सैयद अली अब्बाद उर्फ मद्रासी बाबा ने 70 के दशक में जब हज़रत मखदूम के आसता-ए-अकदस के निर्माण और विस्तार का कार्य आरम्भ किया तो सूफी मंसूर खान साहब उन्हें हर प्रकार की सहायता की । मगरिब की नमाज़ के बाद से 10 बजे रात्रि तक दरगाह के जिणोद्धार पर विचार-विमार्श होता और निर्माण कार्यो के को सम्पन्न कराने हेतु धन राशि इकठ्ठा करने की तदबीर होती । इसमें कोई दो राय नहीं कि आज बिहार शरीफ की बड़ी दरगाह में हज़रत मखदूमेजहां का जो भव्य भवन निर्मित है और जो लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। उसके निर्माण

और विस्तार में खामोशी से सूफी मंसूर खान सहयोग किया।

सरकारी सेवा निवृति के बाद मंसूर खान साहब ने स्वयं को सुफियाना रंग में ढाल लिया । मन तो पहले से ही सूफी था, तन को भी सूफी बना लिया। प्रतिदिन हज़रत मखदूमेजहां के अस्ताने पर हाजरी देते और फतेहाखनी करते । 24 रमज़ान को अपने गुरूदेव और 27 मुर्हरम को पनहेस्सा शरीफ में अपने दादा पीर सुफी सज्जाद (रह०) के वार्षिक उर्स को सम्पन्न कराते और स्वयं कमरे में रहकर ईश्वर की जाप करते रहते । 16 मई 2010 को सूफी मंसूर अहमद खान का निधन हो गया । उनके नमाज़-ए-जनाजा में सैकड़ों लोगों ने भाग लिया और भाभुक होकर उन्हें अन्तिम बिदाई दी । बिहारशरीफ के ही शाहजहां के शासनकाल में निर्मित गर्वनर हबीब खान सुरी के ऐतिहासिक कब्रिस्तान हबीब खान, मस्जिद महल्ला, पक्की तालाब में सपुर्द खाक किया गया ।

अफ़सोस वे हमारी निगाहों से खो गये
हमलोग उनके फैज़ से महरूम हो गये

गर्व की बात है कि उनके पुत्र-पुत्रियां उच्च पदों पर रहते हुये भी अपने पारिवारिक परंपरा को कायम रखे हुये हैं। उनके छोटे पुत्र ज़फ़र अली खान रूमी तो जनसेवा में स्वयं को लगा रखा है और अपने पुज्य पिता के परम्परा अनुसार तमाम बुर्जगानेदीन के अस्तानों की ज़ियारत और समाज सेवा को सौभाग्य समझते हैं।

ख़िदमत गुज़ार बनके वह मख़दूम हो गया

(स्तुति)

किस ने खेज़ाँ बिहार की बदली बहार से
सैराब कोहसार किया आवशार से

जुल्मत की राहें रौशन हूईं हक़ के नूर से
हर तार को मिला दिया ईमाँ के तार से

वह नाएब-ए-रसूल थे या नाएब-ए-इमाम
अजदाद जिनके आये थे सरहद के पार से

इसलामी रुह फूंक दी शहरे बुताँ में भी
सारा इलाक़ा जो था घिरा इन्तेशार से

आऐ थे वह बिहार में थी मरज़ी-ए-खुदा
ख़लिक़ को भी लगाव है कितना बिहार से

सब के दिलों में खिलते रहे मारफ़त के फूल
सहरा भरा था पहले जो जुल्मत के ख़ार से

बाज़ी लगादी जान की तबलीग़ के लिए
उन को न खौफ मौत से था और ना दार से

एहसां है बिहार पे यह मख़दूमल जहां का
ख़म गरदने बिहार है एहसां के बार से

इश्के बुतां को इश्के खुदा से बदल दिया
और बेक़रारी लोगों की बदली क़रार से

सारा बिहार उनका मुरीद हो तो क्या अजब
जिसने ख़ेज़ां बिहार की बदली बहार से

दस्ते दोआ से दस्ते शफा से बचा लिया
जो जां बलब मरीज़ थे सब हालेज़ार के

अपना पराया कोई भी मोहताज अगर गया
मायूस कोई लौटा नहीं इस दयार से

ख़िदमत गुज़ार बनके वह मख़दूम हो गया
सबके दिलों को जीत लिया उसने पयार से

हस्ब-व-नसब हो जिसका मिला अहले बैत से
बख़शिश हसन भी मांग ले तू इस दयार से

सैयद हसन नवाब हसन

ये दयारे मखदूम जहान है

वेलायत के गुलो का गुलिस्तां है
दयारे पाक मखदूमे जहां है

मेरे मखदूम का व आस्तां है
जहां लुटता फ़ैज़े बेकरां है

ज़ेयाए इल्मो-इरफां फैलती है
नगर मखदूम का वह ज़ू फशां है

यह कैसा खुशनुमां मंज़र यहां है
यहां सब्रो-सुकुन अमनों-अमां है

बरसता है हमेशा अब्रे रहमत
यहां हर दम बहारों का समां है

यहां मिलती है खुशबु-ए-मोहब्बत
यह गुलज़ारे मोहब्बत दोस्तां है

नहीं खाली कोई इस दर से लौटा
भरा हर शख़्स का दामन यहां है

ज़मां अमादा-ए-ज़ुल्मों सितम है
तू ऐ मख़दूम शरफुद्दीन कहां है

है फिर कुफ़्फ़ार की ज़दमें मुस्लमां
करम कर तू के मख़दूम-ए-जहां है

निगाहे लुत्फ हो मखदूम इस पर
तेरा अतहर परिशां बे अमां है

हाफिज़ याकूब अतहर हिलसवी
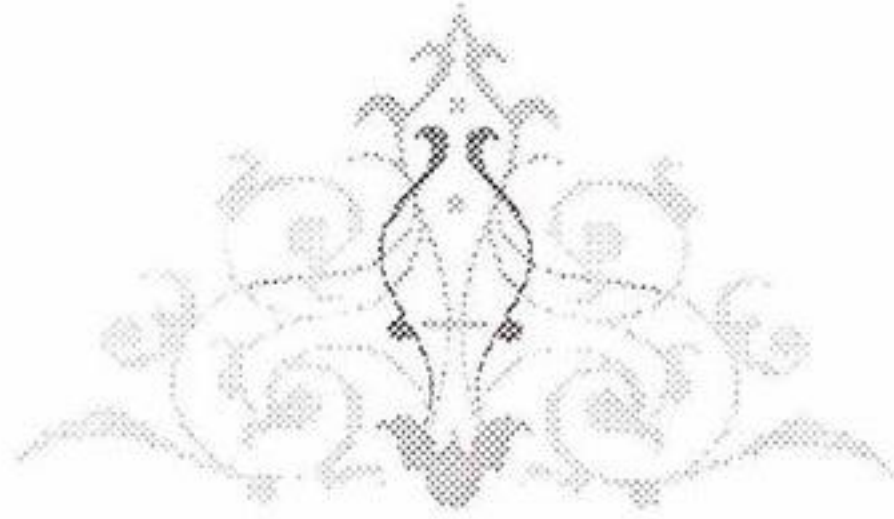
चिन्तकों के विचार
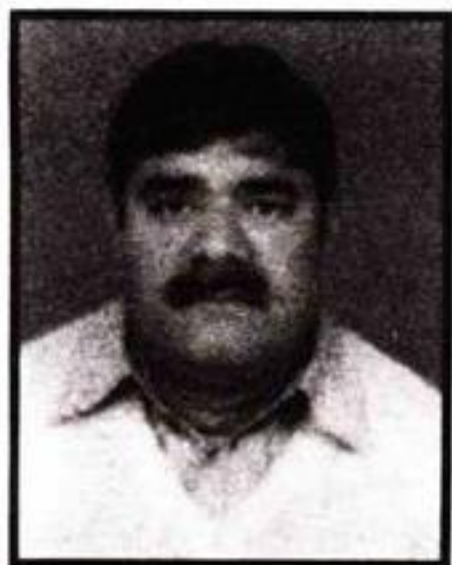
समय की पुकार

सूफिया-ए-कराम और औलिया अल्लाह ने मानव प्रेम, समरसता, एक जुटता, धार्मिक सौहार्द की भावना का हमेशा प्रचार प्रसार किया । भारत में जिन लोगों ने धर्म और जाति से ऊपर उठकर मानवता से प्रेम करना सिखाया वह सूफी थे । हजरत शेख शरफुद्दीन यहया मनेरी (रह०) उन्हीं सूफीयों में से हैं जिन्होंने आमजन के हृदय पर राज किया। प्रेम और सौहार्द फैलाया और मानवता का संदेश दिया । जन सेवा का उदाहरण पेश किया । हर धर्म और जाति के लोगों के साथ अच्छे व्यवहार किये। उनके व्यवहार, प्रेम और सच्चाई से प्रभावित होकर लाखों लोग उनके चाहने वालों में शामिल हो गये । वह शीर्ष सुफियों में माने जाते हैं ।

आज धार्मिक उन्माद के कारण कदम कदम पर, पग-पग पर धार्मिक सौहार्द पर चोट पहुंच रही है । मानवता की हत्या हो रही है । धर्म के नाम पर दूसरों की इज्ज़त से खेला जा रहा है । देश की साझा संस्कृति पर दाग़ लगने उसे धूमिल करने का प्रयास किया जा रहा है। दूसरे धर्म का सम्मान समाप्त होता जा रहा है । प्रेम के स्थान पर घृणा का कारोबार हो रहा हैं। ऐसी स्थिति में मखदूमेजहां के जीवन और संदेश का महत्व बहुत बढ़ जाता है। आज आवश्यकता है उसे संदेश को फैंलाने की, लोगों को याद दिलाने की और उसके अनुसरण की । प्रसिद्ध पत्रकार आशरफ अस्थानवी ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है । उन्होंने मखदुमेजहां के जीवन और संदेश पर पुस्तक लिख कर उनके सेवा और प्रेम के संदेश को फैलाने का जो प्रयास किया है वह

प्रशंसनीय है। हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक भाईचारा और धार्मिक सौहार्द को बहाल करने में मील का पत्थर सिद्ध होगी ।

सलमान राग़िब

अध्यक्ष

अल्प संख्यक कल्याण समिति, बिहार विधान परिषद

बहुमूल्य धरोहर

बिहार की भूमि प्राचीन काल से ही सुफी सन्तों, औलिया और फकीरों की भूमि रही है । शैख शर्फुद्दीन यहया मनेरी (रह०) का व्यक्तित्व इन सभी में सर्वाधिक महत्व और प्रभावपूर्ण है। आपने सत्य के प्रचार और उसकी ओर जाने वाली राहों को निर्देशित करने के साथ साथ अपने ज्ञान से भी लोगों के जीवन को प्रकाशमान किया आपके चमत्कार जहां एक ओर के आपकी मानवता का अहसास कराता है वहीं दूसरी ओर आपकी अति विशिष्ट रचनायें और पुस्तकें आज भी हमारे लिये बहुत ही बहुमूल्य उपहार ही नहीं हैं बल्कि वह हमारे लिये ऐसी धरोहर हैं जिनके समाने दुनिया का कोई भी धन या धरोहर हीन दिखता है ।

अशरफ अस्थानवी एक ऐसे पत्रकार हैं जिन्होंने सदा ईमान्दारी सत्य और शोध एवं खोज पर अधारित पत्रकारिता की है । उन्होंने अल्पसंख्यकों और उपेक्षित वर्गों की सभी समस्याओं को पूरी सच्चाई और स्पष्टता के साथ उठाया । हर प्लेटफार्म का उन्होंने इसके लिये प्रयोग किया । वह राज्य की दूसरी सरकारी भाषा उर्दू के प्रचार प्रसार के लिये पूरी दृढ़ता एवं कर्मठता से

प्रयास कर रहे हैं और आज भी वे भाषाई संगठन अवामी उर्दू निफ़ाज कमीटी, बिहार के मुख्य संयोजक के रूप में भरपूर जतन कर रहे हैं । श्री अस्थानवी की एक और बड़ी पहचान एक लेखक के रूप में हैं । उन्होंने अपनी एक दर्जन पुस्तकों (उर्दू/हिन्दी) के द्वारा न केवल पत्रकारिता को गरिमा दी बल्कि इन पुस्तकों द्वारा उन्होंने बिहार के उन महान पुरुषों को नई पहचान देने का प्रयास किया जिन्हें राजनीतिक षडयंत्र और भेदभाव के कारण अनदेखा करने का प्रयास किया गया । श्री अस्थानवी की प्रशंसा देश के बड़े पत्रकारों और बुद्धी जीवियों ने की है । हमें आशा है कि मखदुमेजहां पर उनकी यह पुस्तक अपने आप में अनूठी होगी ।

मनाज़िर सोहैल

प्रसिद्ध समाज सेवी एवं

राज्यपाल द्वारा बेस्ट प्रिन्टर पब्लिशर सम्मान से सम्मानित

ऐतिहासिक कार्य
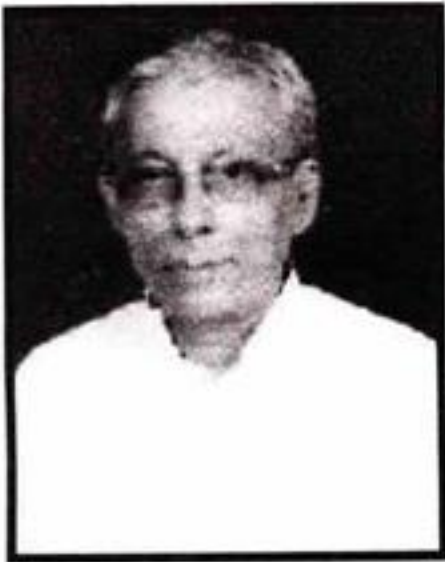
अशरफ अस्थानवी साहब जाने माने पत्रकार और सहित्यकार हैं, बेबाकी, निर्भिक्ता और सशक्त अभिव्यक्ति उनकी पत्रकारिता की विशेषता है जो उन्हें दूसरों से भिन्न और बेहतर बनाती है यह अपने बेबाक निर्भिक और दो टूक लेखों और विशलेशनों द्वारा देश और देश वासियों को राह दिखलाते रहे हैं। समय समय पर उनकी ज्ञानवर्द्धक और शोध पूर्ण पुस्तकें भी छपती रही हैं । गत वर्ष उनकी प्रसिद्ध पुस्तक ''महान स्वतंत्रासेनानी और बिहार के निर्माता प्रो० अब्दुलबारी'' प्रकाशित हुई । उस

से पहले ''फ़ार्बिसगंज का सच'' के नाम से जब उनकी पुस्तक प्रकाशन के अलंकरण से सुसज्जित हुई तो लोगों में सनसनी फैल गई । यह पुस्तक फार्बिसगंज के बेकसूर मुसलमानों पर हुये जुल्म दमन और उन्हें दी गई यातनाओं की कहानी है । पुस्तक के प्रकाशन के बाद बिहार सरकार सक्रिय हुई और आवश्यक कार्यवाई हुई ।

अब अशरफ अस्थानवी की एक और नई पुस्तक हज़रत मखदूमेजहां के जीवन और संदेश पर प्रकाशित हो रही हैं हज़रत मखदुमेजहां अपने समय के बड़े वली और बुजुर्ग थे । उन्होंने अपना पूरा जीवन सच्चे धर्म के प्रचार प्रसार में बिताया। यह उनके प्रयासों का ही फल है कि पूरे बिहार में इस्लाम का प्रकाश फैला । दुखद है कि आज की पीढ़ी उनके महान व्यक्तित्व और उपलब्धियों को नहीं जानती, इसका कारण संभवत: यह भी रहा हो कि उन के व्यक्तित्व पर सरल भाषा में पुस्तक नहीं लिखी गई । मुझे प्रसन्नता है कि श्री अस्थानवी ने यह काम किया है। वैसे मेरे पीर मुर्शिद हज़रत सैयद शाह कमाल उद्दीन (रह०) भी हज़रत मखदूमेजहां से सच्ची श्रद्धा एवं भक्ति रखते थे। उन के जीवन पर भी एक लेख इस पुस्तक मे सम्मिलित किया गया है। जिस से इस पुस्तक की अहमियत और बढ़ जाती है। इस एतिहासिक कार्य के लिए मैं शुभ कामनायें पेश करता हूँ और उनका अभिनंदन करता हूँ ।

इंजीनियर मोहम्मद हुसैन

प्रसिद्ध मिल्ली व समाजी रहनुमा एवं प्रखर वक्ता

अध्यात्म गुरू हज़रत शैख़ शरफुद्दीन यहया मनेरी

भारत में सामजिक समरसता, प्रेम, धार्मिक सौहार्द और सेवा भाव के प्रचार में सुफियों ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । बिना किसी भेदभाव और घृणा के सच की तलाश के उनके निःस्वार्थ प्रयास और मानवता के प्रति आदर सम्मान के कारण लोग अपनी धार्मिक सोच और सीमाओं को लांघ कर उन तक पहुंचे, सुफियों की शुद्धता, निश्च्छलता, सरलता और विनम्रता ही ऐसा चमत्कार था जिसके कारण एक बार उनकी शरण में आने के बाद कोई उनके सम्मोहन से बाहर नहीं निकल पाया, सूफिया-ए-कराम की इन्हीं विशेषताओं के कारण उनके संदेशों को लोगों ने अपने हृदय की आवाज़ समझा और उसे ग्रहण किया । इसके कारण इस्लाम के प्रचार प्रसार में अभूतपूर्व सफलता मिली और यह मानने में झिझक नहीं होनी चाहिए कि भारत में इस्लाम के प्रसार में सूफियों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण रही है।

सुफियों के इसी सिलसिले के महत्वपूर्ण बुजुर्ग हजरत मखदुम शेख शरफुद्दीन यहया मनेरी हैं । शैख शरफुद्दीन अहमद यहिया मनेरी के वंशज अरब से आये थे मगर उन्होंने बिहार के मनेर शरीफ में स्थाई रूप से वास कर लिया । आपके पूरे परिवार ने न केवल जुल्म और अधर्म के विरूद्ध सशक्त आवाज़ उठाई और उसे झुकने पर मजबूर किया बल्कि त्याग और सेवा का भी ऐसा उदाहरण पेश किया जो अभूतपूर्व था, आपके संदेश और व्यवहार के कारण दूर-दूर तक इस्लाम का संदेश और प्रकाश फैला और बड़ी संख्या में लोगों ने इस्लाम धर्म में आस्था ग्रहण की। मखदूम शेख शरफुद्दीन

यहया मनेरी न केवल अपने कर्म आचरण और भाव से ही बहुत लोकप्रिय नहीं थे बल्कि बहुत ज्ञानी भी थे और अपना ज्ञान उन्होंने केवल अपने वचन से नहीं बल्कि अपने लेखन से भी फैलाया। उनकी पुस्तकों विशेष रूप से विभिन्न लोगों को लिखे गये उनके पत्र ज्ञान और सदाचार के असीम भंडार थे। बाद में उनके पत्रों और प्रवचनों को पुस्तकों के रूप में संकलित भी किया गया । मगर उनके अधिकतर पत्र और प्रवचन समय की भेंट चढ़ गये । जो सुरक्षित रहे उनकी भाषा इतनी कठिन है कि नये लोगों के लिये उसे समझना कठिन है। इसी लिये मखदूमेजहां के चमत्कारी व्यक्तित्व और संदेश से लोग दूर होते चले गये हालांकि उनके सन्देशों की सार्थक्ता घृणा और देश के वर्तमान वातावरण में अधिक प्रासंगिक है ।

आवश्यकता थी उनके संदेशों को सरल भाषा में लोगों तक पहुंचाने की वरिष्ठ पत्रकार अशरफ स्थानवी ने यह प्रयास किया है । मखदूमेजहां के जीवन और संदेशों की विशालता को आसानी से समेटना संभव नही है । मगर यह प्रयास प्रशंसनीय है जो इस क्षेत्र में और काम करने की राह प्रशस्त करेगा श्री स्थानवी ने मखदूमेजहां के जीवन और संदेश का सार सरलता के साथ सांक्षिप्त रूप में पेश करने का सफल प्रयास किया है । इससे नयी पीढ़ी को मखदूमेजहां को समझने में बड़ी आसानी होगी । इसके लिये उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए ।

राशिद अहमद

प्रसिद्ध साहित्यकार एवं संपादक

साप्ताहिक 'धनकरंग' पटना

हज़रत मख़दूमेजहां के कारण बिहार प्रकाशमान हुआ

प्रसिद्ध पत्रकार अशरफ स्थानवी की एक और नई पुस्तक "अध्यात्म और मानवता के प्रतीक हज़रत शेख शरफुद्दीन यहया मनेरी (रह०)" देख कर अचम्भा भी हुआ, खुशी भी हुई और दुआ भी निकली उनका अथक प्रयास बुज़ुर्गों से प्रेम और आदर का अनुभव हुआ । मखदूमेजहां के जीवन का अध्ययन और उनकी सभी रचनाओं पर शोध करके इसमें से महत्वपूर्ण बातें जमा करना एक कठिन काम है। मख़दूमेजहां न केवल बिहार बल्कि पूरे देश के सुफिया और मशायख के बीच शिक्षा और अध्यात्म के मामले में विशेष स्थान रखते है। आप की खानकाह भारतीय उपमहदीप में विशेष आकर्षण का केन्द्र रही है। आप की खानकाह में आने वालों पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। दिलों को जोड़ना और दूरियां कम करना आपका काम था । बड़े-बड़े राजा, महाराजा आप की सेवा में उपस्थित होते और दुआयें लेते। उनके कारण पूरा बिहार प्रकाशमान हुआ। आज भी आपका प्रकाश रौशन है अशरफ स्थानवी ने ऐसे महान व्यक्तित्व पर किताब लिख कर मख्दूमेजहां के प्रेमियों की प्यास बढ़ा दी है हमें भरोसा है कि यह पुस्तक मख्दूमेजहां के अक़ीदतमंदों के लिये विशेष उपहार सिद्ध होगी ।

(अलहाज) महमूद आलम सिद्दीक़ी

अध्यक्ष

ईदैन कमीटी, गांधी मैदान, पटना

तसव्वुफ प्रेम की राह है

प्रेम का भाव इस की प्रकृति है, दिलों को जोड़ना इसकी शिक्षा है, किसी धर्म का अनादर उसका काम नहीं, तनाव और टकराव पर विश्वास नहीं और भेदभाव और संकीर्णता के लिये इसमें कोई स्थान नहीं । इसके द्वार किसी के लिये बन्द नहीं होते । इनके यहां बड़े, छोटे धनवान निर्धन, ऊँच नीच का कोई भेद नहीं । यहाँ सब बराबर हैं । सब अल्लाह के बन्दे हैं । मौला की मंशा और मौला की प्रसन्नता की राह ही जीवन शैली है। यही कारण है कि वह एक दृष्टि में जो काम कर जाते हैं वह बड़ी-बड़ी सरकारें और राजा महाराजा नहीं कर पाते । भारत में हर समय सूफियों ने अपनी छटा बिखेरी है। वह हर समय धर्म के प्रचार-प्रसार शिक्षा-दिक्षा, अध्यात्म, प्रेम, सदभाव और सेवा का संदेश देते रहे। इस दीप से दुनिया में प्रकाश फैलाया । जिनके अथक प्रयासों से ही देश में अल्लाहो अकबर की आवाज़ें गूंजने लगीं । उनकी खानक़ाहों से हर धर्म और जाति के लोगों को फैज़ और लाभ पहुंचा । इन सुफियों में एक महत्वपूर्ण नाम मखदूमेजहां हज़रत शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी का भी है ।

आपने सातवीं हिजरी में बिहार के ''मनेर'' में जन्म लिया । आप में बहुत सी विशेषतायें और गुण थीं । महाज्ञानी, वली, आरिफ बिल्लाह, रहने के साथ साथ उच्च श्रेणी के साहित्कार और लेखक भी थे । आप ने दो दर्जन से अधिक धार्मिक, शिक्षा-दिक्षा और तसव्वुफ पर आधारित पुस्तकें लिखी हैं। हज़रत मखदूमेजहां के कारनामों और उनके व्यक्तित्व तथा कृतत्व पर बहुत कुछ लिखा गया है। परन्तु ऐसा लगा कि अभी उनके संबंध में बहुत कुछ

लिखा जाना शेष है। आज जहां विश्व विद्यालयों में बहुत सामान्य व्यक्तियों और उनके जुड़े विषयों पर शोध हो रहा है और उपाधियाँ दी जा रही हैं । वहीं आवश्यकता है कि हज़रत मखदूमेजहां के महान व्यक्तित्व और उनके कारनामों पर भी शोध हो । उनके विभिन्न आयामों पर शोध हो और डॉक्टरेट कराई जाये जिससे उनके व्यक्तित्व और उनकी महान उपलब्धियों के विभिन्न आयामों और उनके प्रभावों का सही रुप में विशलेषण हो सके ।

बिहार के ख्याति प्राप्त पत्रकार श्री अशरफ अस्थानवी न केवल स्वस्थ पत्रकारिता करते हैं बल्कि एक श्रेष्ठ लेखक भी हैं । अस्थानवी साहब की नई पुस्तक ''अधयात्म एवं मानवता के प्रतीक हज़रत शैख़ शरफुद्दीन यहया मनेरी'' मख़दूमेजहां के सदाचारी जीवन और सदगुण सम्पन्न व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को शब्दों में समेटने की कोशिश की है। इस पुस्तक की विशेपता यह है कि यह सरल भाषा में है जिस से कि सभी लोग इसका लाभ उठा सकें । पुरानी पुस्तकें फार्सी शब्दों और जटिल शैली में होने के कारण सभों के लिये इनका लाभ उठाना संभव नहीं है संक्षेपण इसकी विशेपता है। आज मोटी, भारी भरकम, जटिल पुस्तकों में लोगों की रूचि नहीं है । इसी लिये यह पुस्तक सरल भाषा में साक्षिप्त रूप से प्रकाशित की गई है । संक्षिप्त होने के बाद भी इसमें संपूर्णता है । आशा है यह पुस्तक विशेप रूप से पसन्द की जायेगी ।

नुरुस्सलाम नदवी

एडिटर

जदीद हिन्दुस्तान, पटना

बहार-ए-बिहार मख़दूमेजहां

इस्लाम रहमत को दीन है । अमन, शांति, प्रेम, सद्भाव और भाई चारा इसकी विशेषता है और इन्हीं कारणों से यह धर्म पूरी दूनिया में फैला । हजूर अकरम सल्ललाहो अलैहे वसल्लम के पूरे जीवन में इसकी भरपूर अभिव्यक्ति मिलती है । आम लोगों ने आप के व्यक्तित्व और आचरण की इन्हीं विशेषताओं के कारण इस्लाम कुबुल किया । आप सल्ललाहो अलैहे वसल्लम के बाद उलेमा सोलेहा, औलिया, और सूफ़िया कराम ने आपके पद चिन्हों पर चलते हुए इस्लमा का प्रचार प्रसार किया । भारत आरंभ से ही सूपिया और औलिया का केन्द्र रहा है । भारत के सुदूरपूर क्षेत्रों में इस्लमा फैलाने का श्रेय औलिया कराम को ही जाता है । जिनकी मानवता प्रेम, शालीनता और सदभाव से प्रभावित हो कर लोग बड़ी संख्या में उनके पास आते रहे और फिर इस्लाम स्वीकार करते रहे ।

बिहार के विख़्यात बुजुर्ग हज़रत शेख शर्फद्दीन अहमद यहिया मनेरी रहमतुल्लाह अलैह का परिचय करवाने की आवश्यकता नही है । बिहार में उनके आने से बहार आई और इस्लाम की खुश्वु दूर दूर तक फैली । उनकी सेवाएं जग जाहिर हैं । ऐसे बुजुर्गों के उल्लेख से जीवन को तृप्ति मिलती है तथा इस्लाम को शक्ति मिलती है । भौतिकवाद के इस दौर में मानव का अपने रचैता और उसकी दूसरी कृतियों से संबंध कटता जा रहा है । इन बुजुर्गों का जीवन और संदेश हमारे लिए प्रकाश का कार्य करता है । मशहूर पत्रकार अशरफ स्थानवी ने हज़रत मख़दूमेजहां के जीवन पर इस लेखनी के द्वारा उसका प्रकाश दूर तक पुहँचाने का प्रयास किया है । अल्लाह करे यह रौशनी

दूर तक फैले और लोग इसका लाभ उठा पायें ।

मुफ़्ती महफुर्जरहमान उसमानी
प्रख्यात इसलामिक विद्वान-सह-संस्थापक
जामेअतुल कासिम मधुबनी, सुपौल

❋

एक प्रयास जिससे मानवता और भाईचारे को ताकत मिलेगी
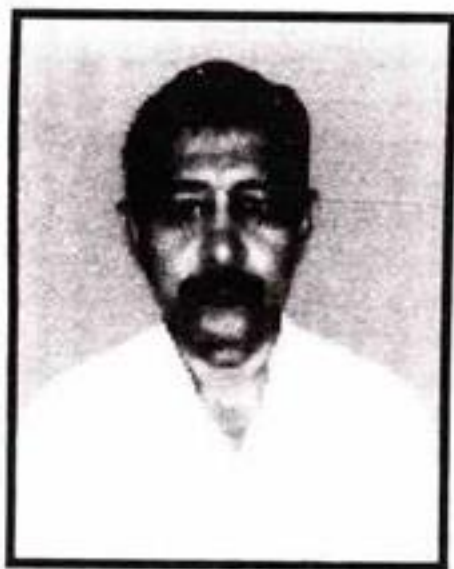
आज के बदलते दौर में जहां मानवता और भाईचारे का माहौल प्रदूषित करने की कोशिश की जा रही है उसमें आध्यात्मिक सोच और विचार की अहमियत बढ़ जाती है।

बिहार के मशहूर पत्रकार अशरफ अस्थानवी ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए एक ऐसी किताब लिखी है, जो बेचैनी और परेशानी के इस आलम में सुकून का वातावरण तैयार करने में कारगर होगी। मशहूर सूफी संत शैख शरफउद्दीन अहमद यहया मनेरी के जीवन और उनके दर्शन पर आधारित यह पुस्तक लोगों के लिए काफी उपयोगी साबित होगी। शैख शरफउद्दीन साहब का निधन 700 वर्ष पूर्व हो गया मगर आज भी उनके मज़ार पर बड़ी संख्या में लोग दुआऐ मांगने जाते हैं और वहां से कोई खाली हाथ नहीं लौटता । मानसिक सुकून के साथ समस्याओं के उलझन से निकलने का रास्ता भी जरूर नजर आता है।

हालांकि मखदूमेजहां द्वारा लिखित कई पत्र और पांडुलिपियां आज भी मौजूद है, पर उसकी भाषा काफी कठिन है जिसे समझना आसान नहीं

है। ऐसे में अस्थानवी साहब ने उनके जीवन और उपदेश को सरल भाषा में जिस तरह से एक पुस्तक का शक्ल दिया है वह एक बड़ा काम है और यह उपयोगी भी है। अस्थानवी साहब के इस प्रयास के लिए उन्हें दिली मुबारकवाद पेश करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि वे अपने इस प्रयास को जारी रखेंगे ।

नौशाद अली खाँ

अध्यक्ष जिला औकाफ़ कमिटी, रोहतास
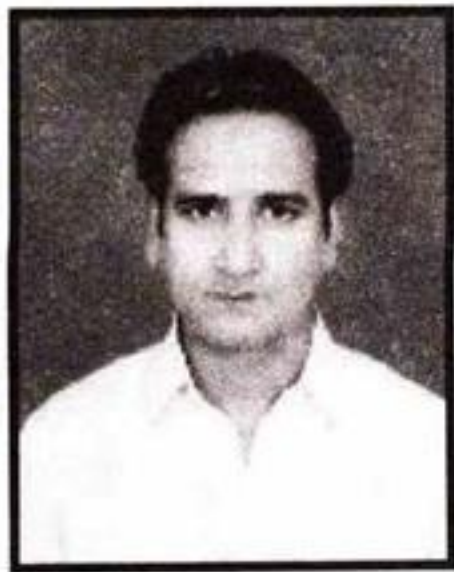
मानवता की सेवा ही मखदूम साहब का लक्ष्य था

अपने लिए तो सभी अच्छे और सुखमय जीवन की कामना करते हैं और उसे हासिल करने के लिए पूरी जिंदगी भाग-दौड़ करते रहते हैं। पर जो खुद को कष्ट में डालकर दूसरों के सुखी जीवन के लिए रास्ता बनाता है वैसे लोग बहुत कम होते हैं। शैख शरफउद्दीन अहमद यहया मनेरी (रह०) इस सोच के धनी थे। उन्होंने अपनी पूरी जिंगदी मानव कल्याण के लिए साधना में लगा दी। बचपन से ही उनमें ऐसा विलक्षण गुण नज़र आने लगे थे। जब माँ के स्नेह और उसकी आंचल में सुकून पाने की बाल्य अवस्था में थे तो भी वे कुछ पाने और उसकी खोज में ले व्यग्र रहा करते थे। इनकी इस अवस्था को देखकर उनकी मां भी चिन्तित रहने लगी थी पर पीर जगजोत (र०) उन्हें भी समझाते कि वे उनकी फिक्र न करे वह बिल्कुल ठीकठाक हैं। उनका यह आत्मविश्वास यूं ही नहीं था। वे जानते थे कि उनका जो लक्ष्य है। वह इनहें हमेशा महफूज रखेगा ।

ऐसे सूफी संत का जीवन और उनके विचार आज के दौर में कहीं

अधिक प्रासंगिक हैं। आज धार्मिक उन्माद, घृणा, वैमनस्यता का माहौल घना होता जा रहा है और इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि लोग अध्यात्म और संतों के बताए मार्गों से दूर होते जा रहे हैं। ऐसा में प्रख्यात पत्रकार अशरफ अस्थानवी ने मखदूमेजहां पर जो पुस्तक लिखी है वह अंधेरे में उम्मीद की रौशनी है। अस्थानवी साहब की लेखनी जनकल्याण और अच्छे तथा सदभाव के माहौल के सृजन से जुड़ी रही हैं। इसी कड़ी में उनका यह योगदान समाज के लिए असाधारण है। इस पुस्तक में मखदूम साहब से जुड़ी कई रोचक और ज्ञानवर्द्धक बातें शामिल की गयी हैं जिसे पढ़कर लोगों के सोच और विचार पर सकारात्मक असर जरूर पड़ेगा ।

साक़िब अहमद क़िदवाइ

खा़कपाए मख़्दूमेजहां

अमन और भाईचारे के माहौल के सृजन का अहम प्रयास

आज के भौतिकवादी और मतलबपरस्त दौर में लोग हैरान-परेशान है। सबकी चाहत नफरत और घृणा के इस माहौल से दूर सुकून की जिंदगी जीने की है। ऐसे में अध्यात्म का मार्ग और सूफी संतों के विचार ही कारगर हो सकते हैं।

शैख शरफउद्दीन अहमद यहया मनेरी ने धर्म और जाति की दीवारों को तोड़कर सबको गले लगाया और मानवों के बीच प्रेम तथा भाईचारा का संदेश दिया। मशहूर पत्रकार अशरफ अस्थानवी द्वारा मखदूम साहब पर लिखी गीय यह पुस्तक सुकून की तलाश में भटकते लोगों के लिए उपयोगी होगी।

साथ ही यह मखदूम साहब के विचारों को घर-घर तक पहुँचाने के लिए भी एक कारगर प्रयास होगा। अस्थानवी साहब ने नफरत और घृणा के माहौल को दूर कर भाईचारे और प्रेम के माहौल के सृजन की दिशा में अपनी लेखनी के जरिए एक अहम प्रयास किया है।

एस. एम. इनाम अहमद

सेवा निर्वित

कार्यपालक अभियन्ता (विद्युत)

मखदूमे जहां

हज़रत शैख़ शरफुद्दीन अहमद यहया मनेरी (रह०) की शख़्सियत को इस हाड़-माँस शरीर के भीतर रहकर समझना कठिन है। आप स्वयं से इतनी दूर थे कि जब चरवाहे ने ग़लतफ़हमी का शिकार हो कर आपको लाठी से ज़ख़्मी कर दिया,तो आपको मज़ा आ गया। नाचने लगे। ''ऐ शैख़ तू अपने को तीसमार खाँ समझता है, देख कैसे तेरा गुरुर चूर हुआ।''

आपको जो कुछ भी मिला, उसे लोगों में बाँट दिया। शरीअत, तरीक़त, मारफ़त से हक़ीकत में फ़िना हो जाना। न दिन का ख़्याल न रात का, न मौसम का दबाव, न भूख का । जीने के लिए पत्ता, पेड़ की छाल, फल खा ली और दशकों इसी पर बिता दिया। दिखावा आप को बिलकुल आता ही नहीं था । करीशमाई थे, करिशमा दिखाने से परहेज़ था ।

नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ाने के लिए वसीयत कर रखा था । जमाअत खड़ी सामने मैयत रखी है और नमाज़ पढ़ाने वाला दिल्ली से बिहार शरीफ कैसे पहुँचा ।

मुझे माफ़ करें! मैं उसके बारे में क्या कहूँ जिसकी शख़्सियत मेरी सोच जहां ख़्त्म होती है, से आगे से शुरु ही होती हो ।

सैयद हुसैन अब्बास रिज़वी

संयोजक : तलाश, पटना

हज़रत मख़्दूम शरफउद्दीन : उच्च कोटि के सूफ़ी
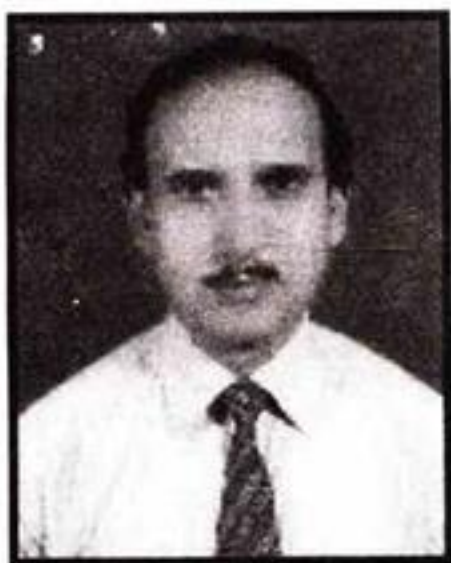
बिहार आरम्भ से ही सूफियों-संतों का केन्द्र माना जाता रहा है। नि:सन्देह बिहार और बिहार वासियों के लिए यह गौरवपूर्ण बात है। ऋषि-मुनियों और सूफ़ी संतों ने एक ईश्वर और उसकी इबादत की बात कही। सत्य के मार्ग पर चलने, मानवता, कल्याण, करुणा, दया और आपसी सौहार्द का पाठ पढ़ाया हज़रत मख़्दूम-ए-जहाँ शेख शरफउद्दीन यहया मनेरी (रह०) का बुजुर्गी में उच्च स्थान है। आप एक उच्च कोटि के सूफ़ी गुज़रे हैं जिनके श्रद्धालुओं की बहुल्य संख्या है। आपने स्वयं को सत्य की राह में वक़्फ़ कर दिया। तक़्वा और परहेज़गारी का ही रास्ता चुना और एक खुदा (ईश्वर) की आराधना में इस क़दर लीन हुए कि पुछिए मत यह घटना किताबों में विस्तार से मिलती है।

ईश्वर की रज़ा और प्रसन्नता के लिए आपने संसार के मोहमाया त्याग दिया और फ़कीरी एख़्तियार की। फिर भी आपने अपनी वालिदा की आज्ञा एवं आदेशों का पल-पल ख़्याल रखा और एक सुयोग्य और आज्ञाकारी फरज़न्द का उदाहरण दुनिया के समक्ष रख दिया। आपने पीरी-फ़कीरी को अपनाने में जो कुर्बानियाँ दी हैं उसे जीवन में अनुसरण करने और उतारने की

बड़ी आवश्यकता है। हज़रत मख़दूम-ए-जहाँ ने बारह वर्षों तक बिहार के आरा के निकट 'बिहिया' के जंगलों में ईश्वर की आराधना में इतने लीन हुए कि कुछ कहना मुशिकल है। फिर आप राजगीर के पर्वतों और जंगलों में भी रहकर खुदा की याद में लौ लगाए रखा और बिल्कुल साधारण जीवन व्यतीत कर के इस क्षणिक संसार को ईश्वर और उसके आदेशों के आगे महत्व नहीं दिया ।

आप अपने अनुयायियों और श्रद्धालुओं के आग्रह पर बिहार शरीफ की जामा मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने आया करते थे। आपसे लोगों को बड़ी अक़ीदत और उत्साह मिलता । आपकी बातों में सफल जीवनयापन के सुनहरे उपदेश मिलते जो लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध होते ।

हज़रत शरफउद्दीन ने कुरान शरीफ, अरबी, फारसी, इतिहास, फ़िकह और अहादीस का गहरा अध्ययन किया आपकी दी गई शिक्षा से लोगों को रौशनी मिली। यही नहीं आपने उर्दू साहित्य और भाषा के द्वारा भी ज़बान के स्तर पर बड़ा कम किया। आपकी कई किताबें एक सम्पन्न एवं समृद्ध जीवन यापन हेतु राज्य के मशहूर ग्रन्थालयों में मौजूद हैं। जिनमें मकतूबात-ए-सदी और अन्य उपयोगी किताबों भी देखने को मिलती हैं।

हज़रत मख़दूम की दो बेटियां और एक बेटे थे। बेटे का नाम ज़कीउद्दीन था आप भी पाया के बुजुर्ग हुए। मखदूम शरफउद्दीन के मुरीदों और शागिरदों की संख्या भी अधिक है। हर साल शव्वाल (ईद) की पांचवी तारीख को बिहार शरीफ में आपकी याद में एक भव्य उर्स का आयोजन बड़ी श्रद्ध, आस्था और धूम-धाम से होता है। राज्य ही नहीं बल्कि देश के कोने-कोने से मख़दूम शरफउद्दीन के चाहने वालों और तीर्थ यात्रियों की काफी भीड़ देखी जाती है। लोग उनके मज़ार अक़दस पर हाज़री देकर फैज़ हासिल करते हैं और अपने-अपने सफल और समृद्ध जीवन के लिए ईश्वर

से मख़दूम-ए-जहाँ के मारफ़त दुआ करने की दरख़्वास्त करते हैं।

हज़रत मख़दूम शैख शरफउद्दीन (रह०) के फैज; और उनके महत्व को देखते हुए वर्त्तमान हुकूमत-ए-बिहार ने बिहार उर्दू अकाडमी के इतिहास में पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय हज़रत मख़दूम-ए-जहाँ शैख शरफउद्दीन यहया मनेरी सेमिनार का आयोजन किया ।

शरफ़ुल होदा

सम्बद्धता: आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, पटना ।

सुफी संतों के शरण में सुकून और शांति है
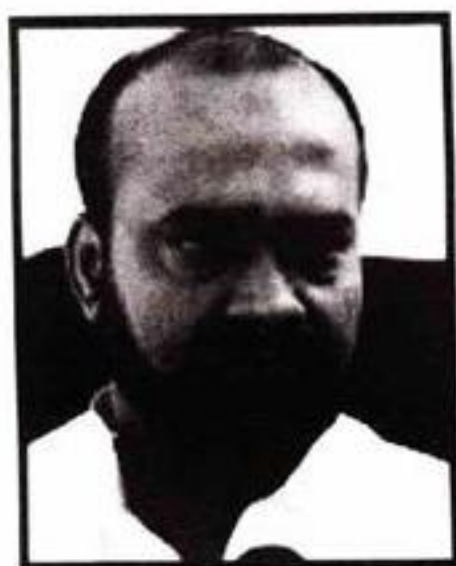
आज जब दुनिया विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में इतनी आगे बढ़ गई है कि सिमटे तो मुट्ठी में आ जाए और फैले तो फिर चाँद और मंगलग्रह पर रिहायशी जमीन खरीदें। हवा, मौसम, सूरज, समुद्र को बांध रहे हैं। चीन से अमेरिका तक रेलगाड़ी भेजने का इरादा कर रहे हैं। सारी चीज़े तो हासिल कर ली- दौलत हासिल कर ली लेकिन खुशी गायब हो गई। बीस्तर हसलि कर लिया, नींद गायब हो गई। खाने के लिए लाजवाब पकवान हैं, लेकिन भूख नहीं है। चैन नहीं है, सुकून नहीं है। हर तरफ जहरीली हवा बह रही है।

इंसान को इनसानियत का खुशनुमा तोहफा रहमत और करम से रसूलेखुदा, औलिया ने हमारे दिल और दीमाग़ को सींचा, यह सिलसिला असहाब और औलिया, सुफिया-ए-कराम ने कायम रख है।

मखदूमेंजहां सुफिया-ए-कराम की फेहरिस्त में वह नाम है जो सबसे

सुनहरा चकता हुआ बिहार की जमीन पर नुमाया हे। अशरफ अस्थानवी जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र को उनके हवाले से और भी पवित्र कर दिया है। हम चाहते हैं कि इस बेचैन और नफरत की तेजारत करनेवालों के सीने में इनसानियत और हमदर्दी को सींचने के लिए इस तरह का प्रयास होता रहना चाहिए । मैं इस पुनित कार्य हेतु पुस्तक के लेखक अशरफ अस्थानवी को मुबारकबाद देता हूँ।

साबिर अली

सांसद (राज्यसभा)

संदर्भ

यह पुस्तक जो आपके हाथ में है, मख़्दूमेजहां पर मेरी श्रद्धा ने मूर्तरुप देने के लिए अनेक पुस्तकों के अध्ययन करने के साथ अनेक विद्वानों से वार्तालाप कराया। प्रमाणिक अभिलेखों का अध्ययन कराया। बिहारशरीफ और मनेर शरीफ में आस्ताना, मस्जिद, दरगाह का अध्ययन किया और जो कुछ मैं समझ पाया, उसे पूरी ईमानदारी से आपके हाथ में सौंप रहा हुँ। जिन ग्रन्थों और पुस्तकों का अध्ययन किया उसकी सूची निम्नलिखित है।

1. **तारीख़ दावत व अज़ीमत**

   लेखक : मौलाना सैयद अबूल हसन नदवी

2. **मनाक़ेबुल अस्फ़िया**

   लेखक : नवल किशोर

3. **इन्स्प्रेशन ऑफ बिहार**

   लेखक : सैयद क़यामुद्दीन

4. **अश्शरफ़**

   लेखक : डॉ० तैयब अब्दाली

5. **अनवारे विलायत**

   लेखक : सैयद शाह अब्दुल क़ादिर इस्लामपूरी

6. **सीरतुश्शरफ़**

   लेखक : सैयद ज़मीरुद्दीन बिहारी

7. **तज़्किराए औलियाए हिन्दूस्तान**

लेखक : सैयद जमालुद्दीन

8. **आसारे मनेर**

लेखक : शाह मुरादुल्लाह मनेरी

9. **शर्फा की नगरी**

लेखक : सैयद क़यामुद्दीन अहमद

10. **ए हिस्ट्री ऑफ सुफ़ीज़्म इन इन्डिया**

लेखक : ए० ए० रिज़वी

11. **मेडिवल बिहार**

लेखक : सैयद हसन असकरी

12. **बिहार थ्रु दी एजेज़**

लेखक : सैयद हसन असकरी

13. **मख़दूमेजहां जीवन और संदेश**

लेखक : डॉ० सैयद शमीम अहमद मुनअमी

14. **हन्ड्रेड लेटर्स ऑफ मखदूम शरफुद्दीन मनेरी**

लखेक : फादर पॉल जैक्सन

उपर्युक्त पुस्तक के अतिरिक्त मख़दूमेजहां पर हस्तलिखित पत्र-सं अनेक जीर्ण पुस्तकें जो खुदाबख़्श लाइब्रेरी में संचित पांडुलिपि हैं, आधार पर प्रस्तुत पुस्तक को यह रूप देने की चेष्टा की है।

Shaikh Sharfuddin Maneri

(A Symbol of Spiritualism & Humanity)

By

Ashraf Asthanvi